E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 128 | प्रयागराज, मंगलवार 04 अगस्त, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

ट्रम्प बोले- ईरान पर फिर हमला कर सकता हूं,लेकिन नहीं चाहता लोग मरे,फिर होगी बातचीत

वॉशिंगटन डीसी/तेहरान/तेल अवीव। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि अमेरिका जरूरत पड़ने पर ईरान पर फिर हमला कर सकता है, लेकिन वह सैन्य कार्रवाई के बजाय बातचीत के जरिए समाधान चाहते हैं -एयर फोर्स वन में पत्रकारों से बातचीत के दौरान ट्रम्प ने कहा, 'हम जब चाहें कार्रवाई कर सकते हैं, लेकिन मैं लोगों को मारना नहीं चाहता। अगर समझौता हो जाता है तो बहुत-सी जानें बच जाएंगी।' उन्होंने बताया कि सोमवार से अमेरिका और ईरान के बीच मध्यस्थों के जरिए अप्रत्यक्ष बातचीत शुरू होगी। हालांकि, उन्होंने यह नहीं बताया कि वार्ता कहां होगी और इसमें कौन शामिल होगा। उनके मुताबिक, वार्ता में होर्मुज स्ट्रेट और ईरान के परमाणु कार्यक्रम जैसे अहम मुद्दों पर चर्चा होगी। पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्स-1. ट्रम्प ने फिलहाल ईरान पर हमला टालाः ट्रम्प ने दावा किया कि ईरान और दूसरे पश्चिम एशियाई देशों की ओर से समझौते का प्रस्ताव मिलने के बाद अमेरिका ने फिलहाल ईरान पर प्रस्तावित हमला टाल दिया है। 2. ईरान की चेतावनी-

हमला हुआ तो अमेरिकी ठिकानों को निशाना बनाएंगेः ईरानी सांसद इब्राहिम रेजाई ने कहा कि अगर अमेरिका ने हमला किया तो ईरान सिर्फ खाड़ी क्षेत्र ही नहीं, बल्कि जहां-जहां अमेरिकी सैन्य ठिकाने हैं, उन्हें निशाना बनाएगा। 3. ट्रम्प और सऊदी क्राउन प्रिंस ने तनाव कम करने पर की बातः ट्रम्प और सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने फोन पर पश्चिम एशिया के हालात पर चर्चा की। दोनों नेताओं ने बातचीत और सीजफायर के जरिए तनाव कम करने पर जोर दिया। 4. अमेरिका के मिसाइल डिफेंस सिस्टम का स्टॉक तेजी से घटाः सीएसआईएस की रिपोर्ट के मुताबिक, लगातार सैन्य अभियानों के कारण अमेरिका के पैट्रियट और थाड इंटरसेप्टर मिसाइलों का भंडार तेजी से कम हुआ है। रिपोर्ट में इसे भविष्य के संभावित संघर्षों के लिए बड़ी चुनौती बताया गया है। 5. रूबियो बोले- होर्मुज स्ट्रेट का विकल्प तैयार करना होगाः अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने कहा कि दुनिया को तेल और गैस की सप्लाई के लिए सिर्फ होर्मुज स्ट्रेट पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। इसके लिए वैकल्पिक समुद्री मार्ग विकसित करने होंगे, हालांकि एक्सपर्ट्स इसे आसान नहीं मानते। ईरान में भारत के नए राजदूत होंगे विश्वेश नेगी-भारत सरकार ने 2002 बैच के भारतीय विदेश सेवा अधिकारी विश्वेश नेगी को ईरान में अगला भारतीय राजदूत नियुक्त किया है। वह फिलहाल विदेश मंत्रालय में संयुक्त सचिव हैं और जल्द ही तेहरान में कार्यभार संभालेंगे। नेगी, मौजूदा भारतीय राजदूत रुद्र गौरव श्रेष्ठ की जगह लेंगे। श्रेष्ठ को तुर्किये में भारत का अगला राजदूत नियुक्त किया गया है। विश्वेश नेगी 2002 बैच के भारतीय विदेश सेवा (एफए) अधिकारी हैं। उन्होंने विदेश मंत्रालय में ओशिनिया डिवीजन के संयुक्त सचिव के रूप में काम किया है। इसके अलावा रक्षा मंत्रालय में अंतरराष्ट्रीय रक्षा सहयोग और संयुक्त राष्ट्र के राजनीतिक मामलों से जुड़े दायित्व भी संभाल चुके हैं।

ईरान जंग के बीच भारत ने ईरान में राजदूत बदला, विश्वेश नेगी को दी नई जिम्मेदारी

नयी दिल्ली। अमेरिका और ईरान के बीच जारी तनाव, होर्मुज स्ट्रेट पर संकट और पश्चिम एशिया में बदलते हालात के बीच

भारत ने तेहरान में अपना नया राजदूत नियुक्त किया है। भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस) के सीनियर अफसर विश्वेश नेगी अब ईरान में भारत की नई जिम्मेदारी संभालेंगे। वह मौजूदा राजदूत रुद्र गौरव श्रेष्ठ की जगह लेंगे, जिन्हें तुर्किये भेजा गया है। विदेश मंत्रालय ने कहा है कि विश्वेश नेगी जल्द ही अपना कार्यभार संभालेंगे। विश्वेश नेगी 2002 बैच के भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस) अधिकारी हैं। पिछले दो दशकों में उन्होंने विदेश नीति, रक्षा सहयोग, संयुक्त राष्ट्र और भारत के कई अहम रणनीतिक मामलों पर काम किया है। फिलहाल वह विदेश मंत्रालय में संयुक्त सचिव हैं। इससे पहले वह ओशिनिया डिवीजन की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं, जहां उन्होंने भारत और पापुआ न्यू गिनी जैसे देशों के साथ उच्चस्तरीय कूटनीतिक बातचीत का नेतृत्व किया।

नितिन नवीन की सीट पर प्रशांत किशोर जीते, गुजरात में भाजपा जीती,बांकीपुर में भाजपा को 18,953 वोट से हराया,एमपी के दतिया में कांग्रेस

पटना/भोपाल/अहमदाबाद। बिहार, मध्य प्रदेश और गुजरात

की तीन विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनावों के रिजल्ट आ गए हैं। बिहार के बांकीपुर में जनसुराज पार्टी के फाउंडर प्रशांत किशोर 18953 वोटों से जीत गए हैं। प्रशांत को 63203 वोट मिले, जबकि भाजपा प्रत्याशी नीरज कुमार को 44250 वोट मिले। बांकीपुर सीट भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन की पारंपरिक सीट है। वे यहां से लगातार 5 बार विधायक रहे हैं। उनके राज्यसभा जाने के बाद इस सीट पर उपचुनाव कराया गया। इधर, एमपी के दतिया में कांग्रेस उम्मीदवार घनश्याम सिंह ने 6016 वोटों से जीत दर्ज की। भाजपा ने यहां पूर्व गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा का टिकट काटकर आशुतोष तिवारी को उम्मीदवार बनाया था। आशुतोष नरोत्तम मिश्रा के पोलिंग बूथ पर भी नहीं जीत पाए। वहीं गुजरात के मंजलपुर में भाजपा के सतेन्द्रभाई (सतीश) पटेल ने 30630 वोटों के बड़े अंतर से जीत दर्ज की। उन्होंने कांग्रेस के भिखाभाई रबारी को हराया। तीनों सीटों पर 30 जुलाई को वोटिंग हुई थी। प्रशांत किशोर बोले- बिहारी सिर्फ मजदूर बनने के लिए पैदा नहीं हुए-जन सूरज पार्टी के उम्मीदवार प्रशांत किशोर ने कहा- सारा फायदा गुजरात को ही क्यों मिलना चाहिए? बिहारी सिर्फ मजदूर बनने के लिए पैदा नहीं हुए हैं, राज्य एक बेहतर मुख्यमंत्री का हकदार है।

भारत सीमा के पास चीन की सैन्य गतिविधि तेज,एलएसी से सटे दो एयरबेस पर 12-जे जे-20 स्टील्थ फाइटर तैनात होने का दावा

नयी दिल्ली। सैटेलाइट से ली गई नई तस्वीरों में दावा किया गया है कि चीन ने भारत-चीन वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के पास अपने दो अहम एयरबेस पर सबसे आधुनिक जे-20 स्टील्थ फाइटर जेट तैनात किए हैं। तस्वीरों के मुताबिक, शिनजियांग के होतान एयरबेस पर 8 और तिब्बत के डामशुंग एयरबेस पर 4, यानी कुल 12 जे-20 विमान मौजूद हैं। हाल के वर्षों में एलएसी के पास जे-20 लड़ाकू विमानों की यह सबसे बड़ी तैनातियों में से एक मानी जा रही है। व्यावसायिक सैटेलाइट कंपनी वेंटर की 9 जुलाई को ली गई तस्वीरों में होतान एयरबेस पर 8 जे-20 'माइटी ड्रैगन' स्टील्थ फाइटर जेट खुले एप्रन पर खड़े दिखाई दिए। वहीं, 25 जून की तस्वीरों में डामशुंग एयरबेस पर 4 जे-20 विमान सुरक्षात्मक शेल्टर के नीचे नजर आए। तस्वीरों से संकेत मिलता है कि चीन ने एलएसी के पास अपने सबसे आधुनिक लड़ाकू विमानों की मौजूदगी बढ़ा दी है। भारत की सीमा के कितने करीब हैं दोनों एयरबेस होतान एयरबेस भारत के दौलत बेग ओल्डी एयरबेस से करीब 245 किलोमीटर और लेह से लगभग 389 किलोमीटर दूर है। वहीं, डामशुंग एयरबेस अरुणाचल प्रदेश के तवांग से करीब 344 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में स्थित है। ये दोनों एयरबेस भारत-चीन सीमा के पश्चिमी और पूर्वी सेक्टर में चीन की वायुसेना के सबसे अहम फॉरवर्ड बेस माने जाते हैं। होतान एयरबेस

क्यों अहम है? शिनजियांग उइगर स्वायत्त क्षेत्र में स्थित होतान एयरबेस पीपुल्स लिबरेशन आर्मी एयर फोर्स का प्रमुख फॉरवर्ड एयरबेस है। भारत-चीन सीमा के करीब होने की वजह से यह चीन के सबसे महत्वपूर्ण ऑपरेशनल ठिकानों में गिना जाता है। यहां से सैन्य और नागरिक, दोनों तरह के विमान उड़ान भरते हैं। करीब 3,700 मीटर लंबे रनवे की वजह से यहां बड़े और भारी सैन्य विमान भी आसानी से ऑपरेट किए जा सकते हैं। एयरबेस पर मजबूत एयरक्राफ्ट शेल्टर, नए एप्रन और आधुनिक ऑपरेशन सपोर्ट सुविधाएं मौजूद हैं। यहां जे-20 स्टील्थ फाइटर जेट के अलावा केजे-500 एयरबोर्न अर्ली वार्निंग एंड कंट्रोल विमान, इंटरसेप्टर फाइटर जेट और सीएच-4 निगरानी एवं स्ट्राइक ड्रोन भी तैनात रहते हैं। सीमा पर तनाव बढ़ने या बड़े सैन्य अभ्यास के दौरान यहां एच-6 रणनीतिक बमवर्षक विमानों की भी तैनाती की जाती है। जे-20 की तैनाती क्यों अहम मानी जा रही है? रक्षा सूत्रों के हवाले से रिपोर्ट में कहा गया है कि ऊंचाई वाले एयरबेस पर ज-20 लड़ाकू विमानों की लगातार मौजूदगी इस बात का संकेत है कि चीन अब इन्हें सिर्फ सैन्य अभ्यास तक सीमित नहीं रख रहा, बल्कि नियमित ऑपरेशनल तैनाती का हिस्सा बना रहा है। जे-20 चीन का पांचवीं पीढ़ी का स्टील्थ लड़ाकू विमान है। इसे रडार से बचते हुए लंबी दूरी तक मिशन पूरा करने और आधुनिक हवाई युद्ध के लिए तैयार किया गया है। यह लंबी दूरी की हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइलें ले जाने में सक्षम है और चीन की वायुसेना के सबसे उन्नत लड़ाकू विमानों में शामिल है। हालांकि, केवल सैटेलाइट तस्वीरों के आधार पर यह तय नहीं किया जा सकता कि ये विमान स्थायी रूप से तैनात हैं या किसी सैन्य अभ्यास अथवा रोटेशन का हिस्सा हैं। फिर भी इतनी संख्या में ज-20 विमानों का एलएसी के करीब दिखाई देना रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

जंतर-मंतर प्रदर्शन

सरकार ने कहा- स्टूडेंट्स पर केस नहीं होगा,2700 अपराधियों पर एफआईआर रहेगी,सुप्रीम कोर्ट बोला-सख्ती करने वाले जवानों को न बचाएं

नयी दिल्ली। केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को बताया है कि नीट पेपर लीक को लेकर विरोध करने वाले छात्रों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई नहीं की जाएगी। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने सोमवार को कहा, 'सरकार अपने वादे पर कायम है। छात्रों के खिलाफ कोई एफआईआर नहीं होगी।' मेहता ने ये भी कहा कि प्रदर्शन के दौरान गंभीर अपराधों को लेकर जिन 2700 से ज्यादा लोगों पर एफआईआर दर्ज हुई हैं, इन्हें वापस नहीं लिया जाएगा। कॉकरोच जनता पार्टी ने इस मसले पर दिल्ली के जंतर-मंतर पर विरोध प्रदर्शन किया था। उनकी 3 मांगें थी, जो सरकार ने मान ली थीं। इनमें एक मांग यह भी थी कि सरकार विरोध प्रदर्शन करने वालों के खिलाफ कोई कानूनी कार्रवाई नहीं करेगी। मामले पर अब 18 अगस्त को सुनवाई होगी। कोर्ट बोला- जिन जवानों ने सख्ती की, उन्हें न बचाएं- सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को उन याचिकाओं पर सुनवाई की, जिनमें 20 जुलाई के संसद मार्च के दौरान पुलिस पर बर्बरता का आरोप लगाया गया है। वकील वृंदा ग्रोवर ने पूछा कि क्या प्रदर्शनकारियों के खिलाफ दर्ज एफआईआर वापस ली जाएंगी या रद्द की जाएंगी। इस पर मेहता ने कहा कि कानूनी तौर पर जो भी तरीका सही हो, सरकार अपने वादे पर कायम है। चीफ जस्टिस सूर्यकांत ने कहा कि अगर कोई

पुलिस अधिकारी जरूरत से ज्यादा बल का इस्तेमाल करता है, तो उसे बेवजह बचाया नहीं जाना चाहिए। और ऐसा भी नहीं होना चाहिए कि छात्र प्रदर्शन की आड़ में किसी कुख्यात अपराधी को बचाया जाए। परीक्षाओं में गड़बड़ी और नीट पेपर लीक के खिलाफ कॉकरोच जनता पार्टी का विरोध प्रदर्शन 36 दिन तक चला था। 25 जुलाई को धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे के बाद यह प्रदर्शन खत्म कर दिया गया था। कोर्ट का फोकस 2 मुद्दों पर- बेंच प्रदर्शनकारियों और पैलेट गन से घायलों के आरोपों की जांच के लिए सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज की अध्यक्षता में एक एसआईटी बना सकती है। कोर्ट यह भी पता लगाने की कोशिश कर सकता है कि पुलिसकर्मियों पर हमले छात्रों ने किए थे या छात्रों की भीड़ में घुस आए शरारती तत्वों ने। पिछली सुनवाई में कहा था- क्रिमिनल रिकॉर्ड वाले छोड़े न जाएं-28 जुलाई को हुई सुनवाई में सुप्रीम कोर्ट ने राज्यों को प्रदर्शनकारियों के खिलाफ कोई भी सख्त कार्रवाई करने से रोक दिया था। कोर्ट ने यह भी कहा था कि 18 साल से कम उम्र वाले लोगों का कोई क्रिमिनल रिकॉर्ड नहीं हो तो उन्हें रिहा कर दिया जाए। अदालत ने महाराष्ट्र, बिहार, असम, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल और केरल सरकार को नोटिस जारी किए थे और उनके एडवोकेट जनरल से अगली सुनवाई की तारीख पर ऑनलाइन पेश होने को कहा था। जिन राज्यों में विरोध प्रदर्शन हुए थे, अदालत ने वहां सीसीटीवी फुटेज, ड्रोन रिकॉर्डिंग, बॉडी-कैमरा फुटेज, वायरलेस कम्युनिकेशन रिकॉर्ड, पीसीआर लॉग और विरोध प्रदर्शन से जुड़े अन्य डिजिटल सबूतों को सुरक्षित रखने के लिए निर्देश जारी किए थे।

दुनिया के तीसरे सबसे छोटे देश ने अपना नाम बदलकर 'नौरू' की जगह 'नाओएरो' रखा,21वीं सदी में 8 देशों ने नाम बदले

यारेन। प्रशांत महासागर में बसे दुनिया के तीसरे सबसे छोटे देश नौरू ने ऐतिहासिक फैसला लेते हुए अपना नाम बदल दिया है। अब

यह देश आधिकारिक तौर पर 'रिपब्लिक ऑफ नाओएरो' कहलाएगा। संयुक्त राष्ट्र ने भी अपने रिकॉर्ड में नया नाम लागू कर दिया है। करीब 12 हजार आबादी वाले इस द्वीपीय देश का कहना है कि 'नाओएरो' उसका असली नाम है, जबकि 'नौरू' विदेशी लोगों की सुविधा के लिए प्रचलन में आया था। अब सरकार का मानना है कि समय आ गया है कि देश दुनिया के सामने अपनी मूल पहचान के साथ जाना जाए। नाओएरो इक्कीसवीं सदी में ऐसा आठवां देश बन गया है जिसने अपना नाम बदला है। इससे पहले तुर्किये ने 2022 में ऐसा किया था। शादी में विवाद के बाद 10 साल तक गृहयुद्ध चला- 19वीं सदी के आखिर तक नाउरू एक छोटा-सा द्वीप था, जहां 12 स्थानीय जनजातियां रहती थीं। यहां कोई आधुनिक सरकार या सेना नहीं थी। लोगों का जीवन मछली पकड़ने, नारियल की खेती और समुद्र से मिलने वाले संसाधनों पर निर्भर था। 1870 के दशक में यूरोपीय व्यापारी नाउरू पहुंचने लगे। वे यहां नारियल और दूसरे सामान का व्यापार करते थे। बदले में उन्होंने स्थानीय लोगों को शराब और बंदूकें बेचना शुरू कर दिया। इससे द्वीप का सामाजिक संतुलन बिगड़ने लगा। 1878 में एक शादी समारोह के दौरान रीति-रिवाज को लेकर बहस हुई। बहस के बीच एक व्यक्ति ने पिस्तौल निकालकर गोली चला दी, जिससे एक कबीलाई प्रमुख के बेटे की मौत हो गई। नाउरू की पारंपरिक संस्कृति में ऐसी हत्या का बदला लेना सामाजिक जिम्मेदारी माना जाता था। यहीं से बदले का सिलसिला शुरू हुआ, जो धीरे-धीरे पूरे द्वीप के 12 कबीलों के बीच गृहयुद्ध में बदल गया। यह संघर्ष करीब 10 साल तक चला, जिसे नाउरू सिविल वॉर के नाम से जाना जाता है। इस दौरान बड़ी संख्या में लोग मारे गए, कई गांव उजड़ गए और लगभग हर परिवार किसी न किसी रूप में इस हिंसा से प्रभावित हुआ। हालात इतने खराब हो गए कि आखिरकार 1888 में जर्मनी ने हस्तक्षेप कर द्वीप पर नियंत्रण स्थापित किया, हथियार जब्त किए और इस लंबे खूनी संघर्ष को समाप्त कराया। जर्मनी के बाद ऑस्ट्रेलिया ने नौरू पर कब्जा किया-1914 में प्रथम विश्व युद्ध शुरू होते ही हालात बदल गए। ऑस्ट्रेलियाई सेना ने बिना ज्यादा प्रतिरोध के नाओएरो पर कब्जा कर लिया। युद्ध खत्म होने के बाद जर्मनी हार गया और उसे अपने कई विदेशी उपनिवेश छोड़ने पड़े। करीब पांच दशक तक विदेशी सरकार के कब्जे में रहने के बाद नाओएरो को 31 जनवरी 1968 को पूर्ण स्वतंत्रता मिली और यह एक संप्रभु गणराज्य बन गया। फॉस्फेट से बदली किस्मत, उसी वजह से कंगाल हुआ-1900 में ऑस्ट्रेलियाई भूवैज्ञानिक अल्बर्ट फुलर एलिस ने नाओएरो में फॉस्फेट के विशाल भंडार की खोज की। इसके छह साल बाद व्यावसायिक खनन शुरू हुआ। उस समय फॉस्फेट की दुनिया भर में जबरदस्त मांग थी, क्योंकि इसका इस्तेमाल खेती में खाद बनाने के लिए होता था। देखते ही देखते यह छोटा-सा द्वीप दुनिया के सबसे बड़े फॉस्फेट निर्यातकों में शामिल हो गया। 1968 में आजादी मिलने के बाद नाओएरो सरकार ने धीरे-धीरे फॉस्फेट उद्योग पर अपना नियंत्रण हासिल कर लिया। 1970 के दशक तक फॉस्फेट से होने वाली कमाई इतनी बढ़ गई कि यह दुनिया के सबसे अमीर देशों में गिना जाने लगा। प्रति व्यक्ति आय कई विकसित देशों के बराबर पहुंच गई। सरकार के पास इतना पैसा था कि शिक्षा, स्वास्थ्य और दूसरी कई सुविधाएं लोगों को लगभग मुफ्त मिलने लगीं। देश ने विदेशों में होटल, इमारतें और दूसरी संपत्तियां खरीदकर भी निवेश किया। लेकिन यह समृद्धि ज्यादा समय तक नहीं टिक सकी। लगातार खनन की वजह से फॉस्फेट के भंडार तेजी से खत्म होने लगे। आय का सबसे बड़ा स्रोत सूख गया और विदेशों में किए गए कई निवेश भी घाटे में चले गए। 1990 के दशक तक नाओएरो गंभीर आर्थिक संकट में फंस गया। जिस फॉस्फेट ने कभी इस छोटे से द्वीप को दुनिया के सबसे अमीर देशों की सूची में पहुंचाया था, उसी के खत्म होने के बाद देश आर्थिक तंगी से जूझने लगा। आज भी देश उस दौर के असर से पूरी तरह उबर नहीं पाया है।

5 साल बाद पहली बार दिखीं म्यांमार की पूर्व नेता आंग सान सू ची, रेड क्रॉस प्रतिनिधि से मिली

म्यांमार। म्यांमार की पूर्व नेता और नोबेल शांति पुरस्कार विजेता आंग सान सू ची करीब पांच साल बाद पहली बार नजर आई हैं।

सैन्य सरकार ने सोमवार को आंग सान सू ची की कुछ तस्वीरें जारी कीं, जिनमें वह इंटरनेशनल कमेटी ऑफ द रेड क्रॉस (आईसीआरसी) के म्यांमार प्रतिनिधि अर्नो डे बैक से मुलाकात करती दिखाई दे रही हैं। 2021 में सैन्य तख्तापलट के बाद से यह उनका बाहरी दुनिया के साथ सबसे दुर्लभ सार्वजनिक संपर्क माना जा रहा है। सरकार ने बताया कि यह मुलाकात सोमवार सुबह हुई, लेकिन यह नहीं बताया कि बैठक कहां हुई और किन मुद्दों पर चर्चा हुई। जारी तस्वीरों में सू ची अपने 81वें जन्मदिन का केक काटती भी नजर आईं। तस्वीरों में वह मुस्कुराती और सामान्य दिख रही हैं, हालांकि उनकी सेहत को लेकर कोई आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है। आंग सान सू ची को फरवरी 2021 में सेना द्वारा सत्ता पर कब्जा करने के बाद हिरासत में लिया गया था। तब से उन्हें सार्वजनिक रूप से बहुत कम देखा गया है और बाहरी दुनिया से उनका संपर्क भी बेहद सीमित रहा है।

मिस्र के तट पर 5.4 तीव्रता का भूकंप, इजराइल तक रहे झटके

मिस्र। मिस्र के तट के पास सोमवार तड़के 5.4 तीव्रता का भूकंप आया। जर्मन रिसर्च सेंटर फॉर जियोसाइंसेज (जीएफज़ेड)

के मुताबिक, भूकंप का केंद्र जमीन से करीब 10 किलोमीटर की गहराई में था। वहीं, मिस्र के नेशनल रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रोनॉमी एंड जियोफिजिक्स ने इसकी तीव्रता 5.6 दर्ज की और बताया कि इसका केंद्र स्वेज शहर से करीब 38 किलोमीटर उत्तर में था। अलग-अलग एजेंसियों द्वारा तीव्रता में मामूली अंतर अलग मापन प्रणालियों की वजह से होता है। भूकंप के झटके काहिरा और उत्तरी मिस्र के कई इलाकों में महसूस किए गए।

एहतियात के तौर पर कई लोग घरों और इमारतों से बाहर निकल आए। दक्षिणी इजराइल में भी कंपन महसूस होने की खबर है।

भूकंप के बाद मिस्र रेड क्रिसेंट ने प्रभावित इलाकों में आपातकालीन प्रतिक्रिया योजना लागू कर दी। संगठन ने लोगों से क्षतिग्रस्त इमारतों से दूर रहने और केवल सरकारी एजेंसियों की आधिकारिक जानकारी पर भरोसा करने की अपील की है।

मोरक्को ने 1,055 किमी लंबे हाईवे का नाम ट्रम्प के नाम पर रखा, राजा मोहम्मद-6 ने की घोषणा

मोरक्को। मोरक्को के राजा मोहम्मद-6 ने देश के एक प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्ग का नाम अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के नाम पर रखने का ऐलान किया है। ट्रम्प ने एक सप्ताह पहले ही

इसके लिए मोरक्को का धन्यवाद दिया था। जिस सड़क का नाम बदला जा रहा है, वह पहले तिजनीत-डाखला हाईवे के नाम से जानी जाती थी। करीब 1,055 किलोमीटर लंबा यह राजमार्ग वेस्टर्न सहारा से होकर गुजरता है। यह वही इलाका है, जिस पर मोरक्को अपना दावा करता है, लेकिन इसके एक हिस्से पर पोलिसारियो फ्रंट नाम के संगठन का कंट्रोल है। यह संगठन वहां के मूल सहरावी लोगों के लिए स्वतंत्र देश की मांग करता है। वेस्टर्न सहारा अफ्रीका के उत्तर-पश्चिम में स्थित एक रेगिस्तानी इलाका है। यह 1975 तक स्पेन का उपनिवेश था।स्पेन के हटने के बाद मोरक्को ने इस क्षेत्र के अधिकांश हिस्से पर कब्जा कर लिया। वहीं, पोलिसारियो संगठन इस इलाके को सहरावी अरब डेमोक्रेटिक रिपब्लिकन नाम का अलग देश कहता है। फिलहाल करीब 80फीसदी वेस्टर्न सहारा पर मोरक्को का नियंत्रण है, जबकि बाकी हिस्से पर पोलिसारियो का प्रभाव है। 1991 में संयुक्त राष्ट्र की मध्यस्थता से युद्धविराम हुआ था। उस समय लोगों से जनमत संग्रह कराने का वादा किया गया था, लेकिन आज तक वह नहीं हो पाया।

विषयः श्रावण मास के प्रथम सोमवार पर नैनी एवं मनकामेश्वर मंदिर में उमड़ा जनसैलाबः पुलिस, प्रशासन और 'नैनी यूथ टीम' के समन्वय से व्यवस्थाएं रहीं शांतिपूर्ण एवं सुगम

अपार श्रद्धा और अनुशासित व्यवस्था का अद्भुत संगम

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)नैनी/प्रयागराज। श्रावण मास के प्रथम सोमवार के पावन अवसर पर नैनी (प्रयागराज) स्थित ऐतिहासिक श्री सोमेश्वर नाथ मंदिर एवं श्री मनकामेश्वर मंदिर में सुबह से ही हल्की बारिश और पानी की बौछारों के बीच श्रद्धालुओं का भारी जनसैलाब उमड़ पड़ा। बाबा भोलेनाथ के जलाभिषेक और दर्शन-पूजन के लिए भक्तों में अभूतपूर्व उत्साह देखा गया। श्रद्धालुओं की अपार भीड़ को देखते हुए पुलिस प्रशासन तड़के से ही मुस्तैद और सेवा भाव से तैनात रहा। सुरक्षा एवं व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त बनाए रखने में 'जिला अपराध निरोधक कमेटी' और 'नैनी यूथ टीम' ने बेहद सराहनीय भूमिका निभाई। प्रमुख

बिंदु एवं व्यवस्थाएंः-सुगम एवं शांतिपूर्ण दर्शनः नैनी यूथ टीम के सदस्यों ने दोनों प्रमुख मंदिरों में 5-5 स्वयंसेवकों की टोलियां (टोली) बनाकर पूरी निष्ठा और तत्परता के साथ यातायात व्यवस्था संबंधी कोई असुविधा उत्पन्न नहीं हुई। माननीय जिलाध्यक्ष / डीएम (डीएम) का निरीक्षणः स्थिति का जायजा लेने पहुंचे जिलाधिकारी (डीएम) महोदय ने मंदिर परिसर का औचक निरीक्षण (मुआयना) किया। परिसर की सुचारू एवं शांतिपूर्ण व्यवस्था को देखकर उन्होंने 'नैनी यूथ टीम' के निस्वार्थ प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और पूरी टीम को बधाई दी।

भविष्य का संकल्पः टीम नेतृत्व ने यह स्पष्ट किया है कि आने वाले श्रावण मास के आगामी सोमवारों में भी भोलेनाथ के भक्तों की सेवा और प्रशासन के साथ यह पूर्ण सहयोग और समर्पण निरंतर जारी रहेगा। नेतृत्व एवं उपस्थित गणमान्य सदस्यः-यह संपूर्ण सेवा कार्य जिला अपराध निरोधक समिति ,सचिव श्री संतोष कुमार श्रीवास्तव जी के आदेश पर यूथ टीम प्रभारी श्री मनीष विश्वकर्मा के कुशल नेतृत्व में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर प्रमुख रूप से उपस्थित रहेः-1. श्री रमेश लाल श्रीवास्तव (सहायक यूथ टीम प्रभारी) 2. श्री संदीप चंद श्रीवास्तव (जनसंपर्क अधिकारी), 3. श्री विमल सक्सेना (क्षेत्रीय कमेटी प्रभारी) 4. श्री शिव प्रताप सिंह, 5. श्री नीरज मिश्रा, 6. श्री दिग्विजय सिंह, 7. श्री मोहम्मद अरशद, 8. श्री मोहम्मद इमरान, 9. श्री समीर खान,10. श्री तौसीफ खान, 11. सक्षम शर्मा, 12. कृष्ण विश्वकर्मा, 13. गौरव विश्वकर्म, एवं कमेटी के अन्य सम्मानित सदस्यगण।

'प्रशासन का सहयोग और जनसेवा ही हमारा परम कर्तव्य है।'

हज-2027 हेतु भारतीय कौस्लावास, जद्दाह में अस्थायी प्रतिनियुक्ति के लिए 10 अगस्त तक करें ऑनलाइन आवेदन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)रायबरेली। जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी, रायबरेली महिमा ने बताया कि हज-2027 के लिए भारतीय कौस्लावास, जद्दाह (सऊदी अरब) में को-ऑर्डिनेटर (प्रशासन), हज अधिकारी तथा हज सुपरिटेंडेंट के पदों पर अस्थायी प्रतिनियुक्ति हेतु अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कार्यालय ज्ञापन जारी किया गया है। इसके अंतर्गत पात्र मुस्लिम पुरुष एवं महिला सरकारी कर्मचारी 10 अगस्त, 2026 तक वेबसाइट https://deputation.haj.gov.in पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि को-ऑर्डिनेटर (प्रशासन) के पद के लिए अखिल भारतीय सेवा/संगठित केंद्रीय सिविल सेवा के ग्रुप 'ए' श्रेणी के वे कर्मचारी पात्र होंगे, जिनका वेतन ग्रेड लेवल-12 एवं 13 हो। हज अधिकारी (एच.ओ.) के पद हेतु केंद्र सरकार/राज्य सरकार, सशस्त्र पुलिस बल, रेलवे प्रोटेक्शन फोर्स अथवा राज्य पुलिस बल के वे कर्मचारी पात्र होंगे, जिनका वेतन ग्रेड लेवल-08 से 11 के बीच हो। हज सुपरिटेंडेंट (एच.एस.) के पद हेतु केंद्र सरकार/राज्य सरकार, सशस्त्र पुलिस बल, रेलवे प्रोटेक्शन फोर्स, राज्य पुलिस बल तथा ग्रुप 'बी' एवं 'सी' के स्थायी असैनिक कर्मचारी, जिनके पास सूचना प्रौद्योगिकी, वित्त, लोक प्रशासन, संकट प्रबंधन अथवा इंजीनियरिंग का अनुभव/विशेषज्ञता हो तथा जिनका वेतन ग्रेड लेवल-04 से 07 हो, आवेदन कर सकते हैं। आवेदकों की आयु 28 जुलाई, 2026 को 26 से 45 वर्ष के बीच होनी चाहिए तथा न्यूनतम शैक्षिक योग्यता स्नातक निर्धारित की गई है। सऊदी अरब में यह अस्थायी प्रतिनियुक्ति अप्रैल, 2027 से जुलाई, 2027 तक संभावित रहेगी। ऑनलाइन आवेदन करने के उपरांत उसकी हार्ड कॉपी 15 अगस्त, 2026 तक Under Secretary, Haj Division, Ministry of Minority Affairs, West Block-8, Wing-II, First Floor, Sector-1, R.K. Puram, New Delhi-110066 के कार्यालय में पहुंचना अनिवार्य होगा।अधिक जानकारी के लिए अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, हज कमेटी ऑफ इंडिया, मुंबई तथा उत्तर प्रदेश राज्य हज समिति की वेबसाइट https://hajcommittee.gov.in का अवलोकन किया जा सकता है।

सेंट जॉन्स को-एड स्कूल का छात्र अलंकरणसमारोह आयोजित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। सेंट जॉन्स को-एड स्कूल का शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए छात्र गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्होंने अपने भाषण में शपथ लेने वाले छात्रों से दूसरों के सामने एक अच्छा उदाहरण पेश करने और स्कूल को और अधिक ऊंचाइयों पर ले जाने की शपथ दिलाई। जूनियर और सीनियर स्कूल स्टाफ सदस्यों और पीटी मास्टर्स द्वारा छात्रों को सैश और बैज प्रस्तुत किए गए। वर्ष 2026-27 के लिए चुने गए हेड बॅयाय श्रेय पाण्डेय और हेड गर्ल देवानंशी बजाज थीं। स्पोर्ट्स कैप्टन अविशी सेठ, डिसिप्लिन कैप्टन शांतनु पांडे, एक्टिविटी कैप्टन रुद्र मिश्रा और अन्या मॉनिटर प्रीफेक्ट को भी बैच प्रदान किया गया। समारोह का समापन हेड बॉय और हेड गर्ल द्वारा दिए गए धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

सेवा के साथ पिकनिक भी जरूरी - मंडलाध्यक्ष लायन उदय चांदना

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। लायंस इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट 321ई के मंडलाध्यक्ष पीएमजेएफ लायन उदय चांदनी ने कहा कि 'सेवा के साथ पिकनिक भी जरूरी है। इससे आपसी मेलजोल बढ़ता है और संगठन और मजबूत होता है।' रविवार को जीएमसी वाटर पार्क एंड रिसोर्ट, में मंडल का फैमिली एंजॉयमेंट कार्यक्रम आयोजित किया गया। इवेंट चेयरमैन लायन हिमांशु गुप्ता के नेतृत्व में मंडल के सभी लायन साथियों ने वाटर पार्क में भरपूर आनंद लिया। बुजुर्ग सदस्य भी बच्चों के साथ बच्चे बनकर पूल, स्लाइड्स और विभिन्न खेलों में शामिल हुए। तरह-तरह के लजीज व्यंजनों का सभी ने एक साथ आनंद लिया। मंडल के मीडिया प्रभारी लायन लालू मित्तल ने बताया कि कार्यक्रम में उत्साह और उमंग का माहौल रहा। मुख्य रूप से कुंवर बी.एम. सिंह, डॉ. क्षितिज शर्मा, मुस्तफा, रेखा अनिल जायसवाल, डॉ. आर.के. सिंह, शालीन संजय गुप्ता, जगमोहन अग्रवाल, सुषमा आर.के. साहू, सीमा सिंह, अंजना शुक्ला, शिल्पी, पारुल, रेखा, प्रज्ञा, बीना केशरवानी, रीना सिंह, अजय अवस्थी, वंदना बृजेन्द्र बाजपेयी, रीना कमलेश जायसवाल, संजय चड्ढा, शिव मूर्त गुप्ता, रवि गुप्ता, राधे, सुधीर, वंदना सुनील गुप्ता, राजीव गुप्ता, अंशुल निगम, अर्चना जायसवाल, राजेन्द्र गुप्ता, दीपक सोनी आदि लायन सदस्य परिवार सहित उपस्थित रहे।

वाराणसी से आए हुए विदत आचार्य की देखरेख में संपन्न हुआ सामूहिक रुद्राभिषेक

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) वाराणसी। बाबा जगमोहनेश्वर महादेव मंदिर चंद्रत्पुर मंदिर प्रांगण में आज दिनांक 3 अगस्त 2026 श्रावण मास के पहले सोमवार पर सामूहिक रुद्राभिषेक संपन्न किया गया वाराणसी से आए हुए आचार्य गनों की देखरेख में सामूहिक रुद्राभिषेक संपन्न हुआ वाराणसी से आचार्य प्रिंस तिवारी, आचार्य सुभाष शुक्ला, आचार्य प्रिंस कुमार आचार्य अभिषेक मिश्रा द्वारा भव्य एवं दिव्य कार्यक्रम संपन्न कराया गया जिसको सुनकर लोग मंत्र मुक्त हो गए भगवान शिव के पार्थिव शिवलिंग पर दूध, दही , घी, शहद, शक्कर और पंचामृत से स्नान कराया गया इसके बादबेलपत्र, शमी पत्र, भांग धतूरा, धतूरा का फूल, मंदार पुष्प, एवं कमल का फूल समर्पित किया गया यजुर्वेद के रुद्राष्टाध्याई के द्वारा बाबा का दुग्ध अभिषेक संपन्न कराया गया दोपहर 2:00 बजे सामूहिक आरती हुई और आलू मूंगफली, चाय एवं टोस्ट प्रसाद का वितरण किया गया इस अवसर जलेश्वर पांडे, बृजेश कुमार त्रिवेदी, शुभम सिंह,, विकास वर्मा, आशा सिंह मंटूशुक्ला, श्रीमती शिशिरशुक्ला, राजीव दीक्षित, आशीष सविता किरण, संदीप मिश्रा की उपस्थिति उल्लेखनी रही।

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नैनी/प्रयागराज एचडीएफसी बैंक के सामने नगर निगम की बड़ी लापरवाही पांच फीट के नाले खुले पड़े हैं

बारिश में पानी भर जाता है कुछ पता नहीं चलता आए दिन रोज ऐसी घटनाएं होती रहती हैं अभी एक युवक पूरी गाड़ी समेत खुद नाले में डूब गया पास के लोगों ने बचाया।

अखिल भारतीय सिविल सर्विसेज खेल प्रतियोगिता के जिला स्तरीय चयन ट्रायल्स अब 13 अगस्त को होंगे

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। क्रीड़ाधिकारी रायबरेली, धीरेन्द्र कुमार पुरुषोत्तम ने बताया कि खेल निदेशालय, उत्तर प्रदेश, लखनऊ के निर्देशानुसार राज्य कर्मचारियों के कल्याण, खेलों के विकास तथा शारीरिक संवर्धन के उद्देश्य से आयोजित होने वाली अखिल भारतीय सिविल सर्विसेज खेल प्रतियोगिता (प्रथम चरण) के जिला स्तरीय चयन ट्रायल्स की पूर्व निर्धारित तिथि 06 अगस्त 2026 में संशोधन किया गया है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश सिविल सर्विसेज खिलाड़ी एसोसिएशन, लखनऊ के निर्देश तथा 03 अगस्त 2026 से विधानसभा एवं विधान परिषद के सत्र आहूत होने के दृष्टिगत निदेशक, खेल द्वारा चयन ट्रायल्स की तिथियों में संशोधन किया गया है। संशोधित कार्यक्रम के अनुसार जनपद स्तरीय चयन ट्रायल्स 13 अगस्त 2026, मंडल स्तरीय चयन ट्रायल्स 18 एवं 19 अगस्त 2026 तथा प्रदेश स्तरीय चयन ट्रायल्स 24 एवं 25 अगस्त 2026 को आयोजित किए जाएंगे। जनपद स्तरीय चयन ट्रायल्स 13 अगस्त 2026 को जिला खेल कार्यालय, पंडित मोतीलाल नेहरू स्टेडियम, रायबरेली में आयोजित होंगे। चयन ट्रायल्स में टेनिस, वॉलीबॉल, तैराकी, बास्केटबॉल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, कबड्डी, शतरंज, भारोत्तोलन एवं वेस्ट फिजिक, एथलेटिक्स, फुटबॉल, कैरम, ब्रिज, कुश्ती, पावर लिफ्टिंग, क्रिकेट तथा हॉकी खेलों का आयोजन किया जाएगा। क्रीड़ाधिकारी ने बताया कि इन चयन ट्रायल्स में केवल नियमित सरकारी कर्मचारी ही प्रतिभाग कर सकेंगे। प्रत्येक प्रतिभागी को अपने विभाग से चयन ट्रायल्स में भाग लेने की अनुमति संबंधी प्रपत्र ट्रायल्स के समय प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा। अनुमति प्रपत्र के अभाव में किसी भी कर्मचारी को चयन ट्रायल्स में प्रतिभाग करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। उन्होंने बताया कि जिला, मंडल एवं प्रदेश स्तरीय चयन ट्रायल्स में प्रतिभाग करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को ड्यूटी पर माना जाएगा।

यात्रा भत्ता एवं अन्य देयकों का भुगतान संबंधित विभाग द्वारा नियमानुसार किया जाएगा। जनपद स्तर पर चयनित खिलाड़ी 18 एवं 19 अगस्त 2026 को लखनऊ में आयोजित मंडल स्तरीय चयन ट्रायल्स में प्रतिभाग करेंगे, जबकि प्रदेश स्तरीय चयन ट्रायल्स 24 एवं 25 अगस्त 2026 को आयोजित किए जाएंगे।

क्रीड़ाधिकारी ने स्पष्ट किया कि इस चयन प्रक्रिया में आटोनोमस बाडी पुलिस विभाग के कर्मचारी, अध्यापक एवं सहायक अध्यापक सहित आदि कर्मचारी प्रतिभाग नहीं कर सकेंगे। उन्होंने यह भी बताया कि खेल निदेशालय द्वारा निर्धारित शारीरिक दक्षता (फिजिकल टेस्ट) के मानक जिला, मंडल एवं प्रदेश स्तरीय सिविल सर्विसेज चयन ट्रायल्स में सभी खिलाड़ियों पर समान रूप से लागू होंगे।

हज पर जाने वाले चयनित यात्री 10 अगस्त तक प्रथम किश्त करें जमा : महिमा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी, रायबरेली महिमा ने हज-2027 पर जाने वाले सभी हज यात्रियों को सूचित किया है कि हज कमेटी ऑफ इंडिया, हज हाउस, मुंबई द्वारा ऑनलाइन कुर्रा के माध्यम से उत्तर प्रदेश से प्राप्त 22,510 आवेदनों में चयनित आवेदकों की सूची जारी कर दी गई है। चयन की सूचना सभी चयनित हज यात्रियों को उनके पंजीकृत मोबाइल नंबर पर भेज दी गई है। साथ ही चयनित यात्रियों की सूची हज कमेटी ऑफ इंडिया एवं उत्तर प्रदेश राज्य हज समिति की वेबसाइट पर अपलोड कर दी गई है। सूची में कवर नंबर एवं बैंक रेफरेंस नंबर अंकित हैं, जिससे प्रथम किश्त जमा करने में किसी प्रकार की असुविधा न हो। उन्होंने बताया कि प्रत्येक प्रोविजनली चयनित हज यात्री को प्रथम किश्त के रूप में रु1,52,300 की धनराशि 10 अगस्त, 2026 तक हज कमेटी ऑफ इंडिया, हज हाउस, मुंबई के यूनियन बैंक ऑफ इंडिया अथवा भारतीय स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के खाते में जमा करनी होगी। धनराशि जमा करने के लिए पे-इन स्लिप हज कमेटी ऑफ इंडिया एवं उत्तर प्रदेश राज्य हज समिति की वेबसाइट से डाउनलोड की जा सकती है। इसके अतिरिक्त चयनित आवेदक ऑनलाइन माध्यम से वेबसाइट तथा हज सुविधा ऐप के जरिए क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड एवं नेट बैंकिंग के माध्यम से भी भुगतान कर सकते हैं।

प्रथम किश्त जमा करने के बाद प्रत्येक हज यात्री को पे-इन स्लिप, स्वहस्ताक्षरित हज आवेदन पत्र, घोषणापत्र, अंतरराष्ट्रीय पासपोर्ट संबंधी घोषणा पत्र तथा मेडिकल स्क्रीनिंग एवं फिटनेस प्रमाणपत्र (जो वेबसाइट पर उपलब्ध है) अपने लॉग-इन आईडी के माध्यम से हज कमेटी ऑफ इंडिया, मुंबई के पोर्टल पर अपलोड करना अनिवार्य होगा। यदि किसी आवेदक को दस्तावेज अपलोड करने में कठिनाई होती है, तो उत्तर प्रदेश राज्य हज समिति के कार्यालय में भी यह सुविधा उपलब्ध कराई गई है। इसके अलावा संबंधित जिले के हज ई-सुविधा केंद्रों के माध्यम से भी दस्तावेज अपलोड कराने की सुविधा प्राप्त की जा सकती है।

एफएलएन प्रशिक्षण के प्रथम चक्र का हुआ समापन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) दीनशाह गौरा/रायबरेली । ब्लॉक संसाधन केंद्र , दीनशाह गौरा में आयोजित फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी (एफएलएन) प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रथम चक्र सफलतापूर्वक संपन्न हो गया । इस चक्र में कुल 100 शिक्षक तथा शिक्षिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया । प्रशिक्षण के दौरान भाषा और गणित की बुनियादी दक्षताओं के विकास, गतिविधि आधारित शिक्षण, खेल-खेल में सीखने की प्रक्रिया तथा बच्चों में तार्किक एवं रचनात्मक सोच विकसित करने पर विशेष बल दिया गया । प्रशिक्षण के संदर्भदाता एआरपी सुधीर शुक्ला , श्याम शंकर त्रिवेदी , सौरभ , संतोष मौर्य द्वारा शिक्षकों को एफएलएन के विभिन्न आयामों से अवगत कराया गया । प्रशिक्षण सत्रों में नवीन शिक्षण तकनीकों, टीएलएम के प्रभावी उपयोग, कक्षा शिक्षण को रोचक बनाने तथा बच्चों के अधिगम स्तर को बेहतर बनाने के उपायों पर विस्तार से चर्चा की गयी। खण्ड शिक्षा अधिकारी सत्य प्रकाश सिंह ने बताया कि एफएलएन मिशन का उद्देश्य परिषदीय स्कूलों के बच्चों में पढ़ने, लिखने और गणना करने की बुनियादी क्षमताओं का विकास करना है। इसके लिए शिक्षकों को व्यवहारिक एवं आधुनिक शिक्षण पद्धतियों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिससे विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित हो सके। प्रशिक्षण में उपस्थित गौरा अध्यक्ष शैलेश पांडे ने कहा कि विभाग का प्रयास है कि प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले सभी शिक्षक विद्यालयों में नवाचारों को अपनाते हुए बच्चों के सर्वांगीण विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं । एफएलएन प्रशिक्षण राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के उद्देश्यों को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल साबित हो रहा है। इस अवसर पर धर्मेंद्र बहादुर सिंह , त्रिलोकी शरण सिंह , दिनेश मिश्र , अनूप सिंह , मनीष दीक्षित आदि उपस्थित रहे । तकनीकी सहायक के रूप में सर्वेश पांडे व संदीप गौतम उपस्थित रहे।

श्रावण मास के प्रथम सोमवार को ब्रह्मचारी कुटी में हुआ रुद्राभिषेक

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सेक्टर 82 स्थित प्राचीन

तपोभूमि ब्रम्हचारी कुटी में पावन श्रावण मास के प्रथम सोमवार को महंत ओम भारती महाराज के सानिध्य में भगवान शिव का रुद्राभिषेक किया गया। प्रातः 4:30 बजे से आचार्य अमित दीक्षित द्वारा मंत्रोच्चार के बीच दुग्धधारा से भगवान भोलेनाथ का अभिषेक किया गया। इस दौरान शिव परिवार की पूजा अर्चना की गई साथ ही भोलेनाथ का श्रृंगार भी किया गया। रुद्राभिषेक के बाद हवन हुआ और आरती के उपरांत प्रसाद वितरण हुआ। इस अवसर पर राघवेंद्र दुबे ने कहा कि शिव परम कल्याणकारी हैं। शिव की आराधना से दैहिक, दैविक और भौतिक तापों का शमन हो जाता है। श्रावण मास में शिव की भक्ति से अंत गुना पुण्य फल की प्राप्ति होती है। रुद्राभिषेक के माध्यम से सभी जीवों के कल्याण के लिए शिव से प्रार्थना की गई। इस अवसर पर विकास भारती, अशोक कुमार, ओम कुमार , अनमोल झा सहित तमाम शिव भक्त मौजूद रहे।

यूपी के मदरसों में बीए-एमए की पढ़ाई पर रोक लगेगी,पुरानी डिग्रियां भी रद्द होंगी

योगी कैबिनेट में 21 से अधिक प्रस्ताव मंजूर होंगे

लखनऊ। यूपी सरकार मदरसों में कामिल (ग्रेजुएशन) और फाजिल (पोस्ट ग्रेजुएशन) की डिग्री देने पर रोक लगाने जा रही है। यानी अब

यहां सिर्फ 12वीं तक ही पढ़ाई होगी। सरकार का कहना है कि यह फैसला सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुसार लिया जा रहा है। इस संबंध में मदरसा शिक्षा परिषद अधिनियम 2004 में संशोधन का प्रस्ताव मंगलवार को होने वाली योगी कैबिनेट बैठक में रखा जाएगा। अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने बताया- 'मदरसों से पूर्व में दी गई कामिल और फाजिल की डिग्री को भी रद्द किया जाएगा।' अल्पसंख्यक विभाग के अधिकारी ने बताया- सुप्रीम कोर्ट ने 5 नवंबर, 2024 को इलाहाबाद हाईकोर्ट के उस फैसले को पलट दिया था, जिसमें मदरसा अधिनियम को असंवैधानिक घोषित किया गया था। सुप्रीम कोर्ट अंजुम कादरी और अन्य बनाम भारत सरकार केस सुनवाई कर रहा था। उस वक्त सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश मदरसा शिक्षा बोर्ड अधिनियम 2004 की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखा। कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया था कि मदरसा बोर्ड का कानून सही है, लेकिन मदरसे यूजीसी के नियमों के बाहर की औपचारिक उच्च शिक्षा यानी कामिल और फाजिल की डिग्री नहीं दे सकते। बैठक मंगलवार सुबह 9.30 बजे मुख्यमंत्री आवास पर होगी। सोमवार शाम करीब 8 बजे मुख्य सचिव एसपी गोयल ने एजेंडा जारी किया। जिसमें 21 प्रस्ताव शामिल किए गए हैं। बैठक में कुछ प्रस्ताव और शामिल किए जा सकते हैं। इस दौरान वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए करीब 40 हजार करोड़ से अधिक का अनुपूरक बजट प्रस्ताव भी पेश किया जाएगा। दोनों डिग्रियों का मतलब क्या है? कामिलः यह अरबी, फारसी और दीनियात विषयों में 3 साल का कोर्स होता है, जिसे बोर्ड द्वारा ग्रेजुएशन (बीए) के बराबर माना जाता था। फाजिलः यह कामिल के बाद 2 साल का उच्च स्तर का कोर्स होता है, जिसे पोस्ट ग्रेजुएशन (एमए) के बराबर माना जाता था। लखनऊ-नोएडा में यू-हब बनेगा- कैबिनेट बैठक में लखनऊ और नोएडा में यू-हब बनाने के प्रस्ताव को मंजूरी मिल सकती है। आईटी और इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग के अनुसार, यूपी सरकार ने हाल ही में स्टार्टअप मिशन निदेशालय बनाने का फैसला किया है। इसके तहत नोएडा और लखनऊ में यू-हब नाम की सरकारी कंपनी बनाई जाएगी। आईआईटी कानपुर के नोएडा सेंटर और आईआईटी लखनऊ के कैंपस में यू-हब बनेगा। यू-हब का मुख्य उद्देश्य ऐसे स्टार्टअप्स को सुविधाएं, मार्गदर्शन और मदद देना है, जो अपने काम को आगे बढ़ाना चाहते हैं। सरकार ने इसके लिए इस साल 100 करोड़ रुपये का बजट रखा है। साथ ही, आईआईटी कानपुर इक्यूबेशन के निदेशक को 3 साल के लिए यू-हब का निदेशक नियुक्त किया गया है। वहीं, शीरा नीति 2026 को मंजूर देने और खरीफ और रबी की फसल के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना करने के प्रस्तावों को मंजूरी मिल सकती है। राज्य सरकार की ओर से प्रयागराज-चित्रकूट क्षेत्र के समग्र विकास के लिए प्रयागराज-चित्रकूट क्षेत्रीय विकास प्राधिकरण का गठन किया जाएगा। ये हैं प्रमुख एजेंडे-फसल बीमा योजना लागू होगी: खरीफ 2026 और रबी 2026-27 के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना और मौसम आधारित फसल बीमा योजना लागू करने का प्रस्ताव। 7 जगह मल्टीपर्पज हब बनेंगे: लोक निर्माण विभाग जमीन लेकर उसे आवास एवं शहरी नियोजन विभाग को मुफ्त देगा, ताकि बहुउद्देशीय हब बनाए जा सकें। नई सेवा नियमावलीः राज्य संपत्ति विभाग के कर्मचारियों के लिए नई नियमावली 2026 लागू करने का प्रस्ताव। एचसीएल फाउंडेशन से समझौता बढ़ेगाः सामुदायिक परियोजना के लिए सरकार और एचसीएल फाउंडेशन के बीच हुए समझौते की अवधि 5 साल और बढ़ाने का प्रस्ताव। प्रयागराज-चित्रकूट विकास प्राधिकरणः इस क्षेत्र के विकास के लिए नया प्राधिकरण बनाया जाएगा। घुमंतू विकास बोर्ड बनेगाः विमुक्त, घुमंतू और अर्ध-घुमंतू समुदायों के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए नया बोर्ड बनाया जाएगा। विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना-2 में बदलावः योजना के नियमों में संशोधन और नए प्रावधान जोड़े जाएंगे। जेवर लिंक एक्सप्रेसवेः जेवर एयरपोर्ट को गंगा एक्सप्रेसवे से जोड़ने के लिए 74.467 किमी लंबा 6-लेन ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे बनाने का प्रस्ताव। शीरा नियंत्रण कानून में संशोधनः उत्तर प्रदेश शीरा नियंत्रण संशोधन विधेयक 2026 लाने का प्रस्ताव। मजदूर संहिता नियमावली 2026: श्रमिकों से जुड़े नए नियम लागू करने का प्रस्ताव। पुराना विधेयक वापस लेने का प्रस्तावः भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार संशोधन विधेयक 2020 को केंद्र सरकार से वापस लेने का प्रस्ताव। मदरसा कानून में संशोधनः सुप्रीम कोर्ट के फैसले के अनुसार मदरसा शिक्षा परिषद अधिनियम 2004 में संशोधन का प्रस्ताव। कामिल और फाजिल डिग्रीः सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद इन डिग्रियों को मान्यता नहीं दी जाएगी।खनिकर्म सेवा नियमों में बदलावः भूतत्व एवं खनिकर्म विभाग की सेवा नियमावली 2026 लागू होगी। लखनऊ और नोएडा में यू-हबः डीप-टेक और गंभीर स्टार्टअप्स के लिए नए टेक हब स्थापित किए जाएंगे। इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी को राहतः ैंध्ध् एदत्त्लदहे की परियोजना शुरू करने की समय सीमा में छूट देने का प्रस्ताव। सीएजी की रिपोर्टें पेश होंगीः राज्य वित्त, मनरेगा, जल जीवन मिशन और अन्य विभागों से जुड़ी कई नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) रिपोर्टें पेश की जाएंगी। अनुपूरक बजटः वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए अनुपूरक अनुदान और विनियोग विधेयक पेश किया जाएगा।

फेलिक्स अस्पताल के डॉक्टरों ने दो माह पुरानी गंभीर स्पाइनल चोट का किया सफल ऑपरेशन,-अगले ही दिन हाथ-पैरों में लौटी हरकत, भारी सामान गिरने से गर्दन की दो हड्डियां खिसक गई थीं

नसों से दबाव हटाकर किया फिक्सेशन, मरीज अब चलने-फिरने की ओर बढ़ा, जल्द होगा डिस्चार्ज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। भारी सामान गर्दन पर गिरने से गंभीर स्पाइनल इंजरी का शिकार हुए एक मरीज का सफल ऑपरेशन कर फेलिक्स अस्पताल के डॉक्टरों ने उसे नई जिंदगी देने की दिशा में बड़ी सफलता हासिल की है। करीब दो माह पुरानी इस जटिल चोट के कारण मरीज के हाथ लगभग

काम करना बंद कर चुके थे। जबकि पैरों में भी बेहद कम ताकत बची थी। ऑपरेशन के अगले ही दिन मरीज के हाथ-पैरों में हरकत लौटने लगी और अब डॉक्टरों को उम्मीद है कि जल्द ही वह अपने पैरों पर चलने लगेगा। फेलिक्स अस्पताल डॉ. शशांक चंद्र, हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ (ऑर्थोपेडिक कंसल्टेंट) ने बताया कि मरीज जोगिंदर करीब दो महीने पहले एक हादसे का शिकार हुआ था। भारी सामान गर्दन पर गिरने से उसकी सर्वाइकल स्पाइन (गर्दन की रीढ़) की सी-6 और सी-7 (सी6-सी7) कशेरुकाएं अपनी सामान्य स्थिति से खिसक गई थीं। सामान्य तौर पर रीढ़ की सभी हड्डियां एक सीध में होती हैं, लेकिन इस मरीज में एक हड्डी दूसरी के आगे खिसक गई थी। इस स्थिति को चिकित्सकीय भाषा में सर्वाइकल स्पॉन्डिलोलिस्थीसिस/डिसलोकेशन कहा जाता है, जो अत्यंत गंभीर चोट मानी जाती है। डॉक्टरों के अनुसार चोट के कारण रीढ़ की नसों पर अत्यधिक दबाव पड़ गया था। इसके चलते मरीज के दोनों हाथों की कार्यक्षमता लगभग समाप्त हो गई थी और पैरों में भी बहुत कम ताकत बची थी। मरीज की स्थिति ग्रेड-4 पैराप्लेजिया जैसी थी, जिसमें शरीर के निचले हिस्से के साथ ऊपरी अंगों की कार्यक्षमता भी गंभीर रूप से प्रभावित हो जाती है। दो माह बाद मरीज सर्जरी के लिए अस्पताल पहुंचा। जांच के बाद डॉक्टरों की टीम ने ऑपरेशन की योजना बनाई। सर्जरी के दौरान सबसे पहले रीढ़ की नसों पर पड़े दबाव को पूरी तरह हटाया गया। इसके बाद विशेष स्क्रू और फिक्सेशन सिस्टम की मदद से गर्दन की हड्डियों को उनकी सही स्थिति में स्थापित कर स्थिर किया गया, ताकि रीढ़ दोबारा सुरक्षित तरीके से काम कर सके। डॉक्टर ने बताया कि ऑपरेशन सफल रहा और इसका सकारात्मक परिणाम पहले ही दिन दिखाई देने लगा। मरीज अब अपने हाथों की पकड़ (ग्रिप) बना पा रहा है, हाथ सीधे उठा रहा है और दोनों पैरों को भी आसानी से हिला पा रहा है। ऑपरेशन के दूसरे दिन उसकी स्थिति लगातार बेहतर बनी हुई है। सर्जरी से पहले मरीज का मूत्राशय (ब्लैडर) और मलत्याग (बॉवेल) पर नियंत्रण व संवेदना समाप्त हो गई थी। सफल सर्जरी के बाद ब्लैडर और बॉवेल की संवेदना पूरी तरह वापस आ गई। इसके साथ ही मरीज अब अपने पैरों पर खड़े होकर स्वयं चलने-फिरने में भी सक्षम हो गया है। अब मरीज को नियंत्रित तरीके से फिजियोथेरेपी और पुनर्वास (रिहैबिलिटेशन) कराया जाएगा। पहले चरण में उसे सावधानी के साथ खड़ा कराया जाएगा और फिर धीरे-धीरे चलने का अभ्यास कराया जाएगा। यदि रिकवरी इसी गति से जारी रही तो अगले एक से दो सप्ताह में मरीज सामान्य गतिविधियों की ओर लौट सकता है। रीढ़ की गंभीर चोटों में समय पर सही उपचार बेहद महत्वपूर्ण होता है। कई लोग यह मान लेते हैं कि पुरानी स्पाइनल चोट का इलाज संभव नहीं है, जबकि आधुनिक स्पाइन सर्जरी की तकनीकों से वर्षों पुरानी और जटिल चोटों का भी सफल उपचार किया जा सकता है। सही समय पर नसों पर से दबाव हटाकर रीढ़ को स्थिर करने से मरीज की खोई हुई कार्यक्षमता काफी हद तक वापस लाई जा सकती है। मरीज जोगिंदर ने बताया कि ऑपरेशन के बाद उसे पहले से काफी राहत महसूस हो रही है। अब वह अपने हाथों की पकड़ बना पा रहा है और दोनों पैरों में भी ताकत महसूस कर रहा है। डॉक्टरों ने उसे भरोसा दिलाया है कि नियमित फिजियोथेरेपी और चिकित्सकीय सलाह का पालन करने पर वह जल्द ही अपने पैरों पर चल सकेगा। वहीं अस्पताल के डॉक्टरों ने लोगों से अपील की है कि सड़क दुर्घटना, ऊंचाई से गिरने या गर्दन व रीढ़ पर गंभीर चोट लगने की स्थिति में इलाज में देरी न करें। समय पर परामर्श और उचित उपचार मरीज को स्थायी विकलांगता से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

शराब का सेवन करने वाले लोगों के लिए बड़ी खबर

FSSAI का बड़ा एक्शनः कई मशहूर व्हिस्की और रम वेरिएंट्स की बिक्री पर रोक

नई दिल्ली। भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (FSSAI) ने देश में बिकने वाले

कुछ लोकप्रिय व्हिस्की और रम ब्रांड्स के चुनिंदा वेरिएंट्स की बिक्री पर रोक लगाने की कार्रवाई की है। यह कदम कथित तौर पर शराब के स्वाद और सुगंध को वृत्रिम अथवा 'नेचर आइडेंटिकल' फ्लेवरिंग पदार्थों के माध्यम से तैयार किए जाने के आरोपों के बाद उठाया गया है। रिपोर्टों के अनुसार, FSSAI की जांच में कुछ उत्पादों में ऐसे फ्लेवरिंग पदार्थों के उपयोग की बात सामने आई है, जो पारंपरिक एजिंग (Aging) प्रक्रिया से विकसित होने वाले स्वाद और सुगंध की नकल करते हैं। नियामक का मानना है कि इस प्रकार के फ्लेवरिंग पदार्थ उत्पाद की वास्तविक निर्माण प्रक्रिया को लेकर उपभोक्ताओं को भ्रमित कर सकते हैं। कार्रवाई की जद में आने वाली प्रमुख कंपनियों में डियाजियो इंडिया की यूनाइटेड स्पिरिट्स, इनब्रू बेवरेजेज और मोहन रॉकी स्प्रिंगवॉटर ब्रुअरीज शामिल बताई जा रही हैं। सूत्रों के अनुसार, जिन प्रमुख ब्रांडों के कुछ वेरिएंट्स पर कार्रवाई की बात सामने आई है, उनमेंः- Antiquity Blue Whisky, Royal Challenge Whisky, McDowell's No.1 Rum, Bagpiper Deluxe Whisky, Old Cask Deluxe XXX Rum, Old Monk Rum के कुछ वेरिएंट शामिल हैं। हालांकि अभी यह स्पष्ट नहीं है कि यह रोक इन ब्रांडों के सभी उत्पादों पर लागू है या केवल कुछ विशेष इकाइयों में निर्मित चुनिंदा वेरिएंट्स पर। इस संबंध में कंपनियों और नियामक के बीच आगे की प्रक्रिया पर सभी की नजर बनी हुई है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि आरोप सही पाए जाते हैं तो यह मामला केवल शराब उद्योग तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि उत्पाद गुणवत्ता, लेबलिंग पारदर्शिता और उपभोक्ता अधिकारों से जुड़े बड़े सवाल भी खड़े करेगा। FSSAI की इस कार्रवाई को देश के शराब उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण नियामकीय हस्तक्षेप माना जा रहा है, जिसका असर आने वाले दिनों में बाजार और उपभोक्ता विश्वास दोनों पर पड़ सकता है।

गुरु के बताए मार्ग पर चलकर ही जीवन होता है सार्थक : स्वामी पंचमानंद जी महाराज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। परम पूज्य, अनंत श्री

विभूषित महामंडलेश्वर श्री श्री 1008 स्वामी पंचमानंद जी महाराज ने अपने दिव्य उद्बोधन में कहा कि मनुष्य का जीवन तभी धन्य और सार्थक होता है, जब वह गुरु के श्रीचरणों में श्रद्धा रखकर धर्म, सेवा, साधना और श्रेष्ठ संस्कारों को अपने जीवन का आधार बनाता है। उन्होंने कहा कि गुरु ही वह दिव्य शक्ति हैं, जो अज्ञान के अंधकार को दूर कर ज्ञान, आत्मबल, विवेक और ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा का प्रकाश प्रदान करती है। उन्होंने श्रद्धालुओं से नियमित साधना, सत्संग, सेवा और परोपकार को जीवन का संकल्प बनाने का आह्वान किया। गुरुदेव ने कहा कि प्रेम, करुणा, संयम, सत्य, सदाचार और विनम्रता जैसे गुणों को अपनाकर व्यक्ति न केवल आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है, बल्कि समाज और राष्ट्र के कल्याण में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। स्वामी पंचमानंद जी महाराज ने सनातन संस्कृति के संरक्षण, सामाजिक एकता और भाईचारे को समय की आवश्यकता बताते हुए सभी श्रद्धालुओं से धर्मकार्य, गौसेवा, मंदिर निर्माण तथा जनकल्याण के कार्यों में अपनी सामर्थ्य के अनुसार तन, मन और धन से सहयोग करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सेवा और समर्पण ही सच्ची भक्ति का स्वरूप है तथा गुरु की कृपा से ही जीवन में सफलता, शांति और आत्मिक आनंद की प्राप्ति होती है। अपने उद्बोधन के समापन पर गुरुदेव ने सभी श्रद्धालुओं को सुख, शांति, समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु एवं आध्यात्मिक उन्नति का आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि गुरु-कृपा से ही जीवन का वास्तविक कल्याण संभव है। उन्होंने सभी से गुरु के बताए मार्ग पर चलकर धर्म, सेवा और मानवता के कार्यों में निरंतर योगदान देने का आह्वान किया।

'सत्य की जीत पर युवा क्रांति सेना का 'बुद्धि शुद्धि यज्ञ', झूठे आरोप लगाने वालों को सद्बुद्धि की प्रार्थना'

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। न्यायालय द्वारा भारतीय

कुश्ती संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री बृजभूषण शरण सिंह को संबंधित प्रकरण में बरी किए जाने के बाद युवा क्रांति सेना के नेतृत्व में सेक्टर-31 स्थित श्री शनि मंदिर, निठारी में झूठे आरोप लगाने वाले खिलाड़ियों के लिए 'बुद्धि शुद्धि यज्ञ एवं सद्बुद्धि प्रार्थना सभा' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में नोएडा की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों, समाजसेवियों और बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने यज्ञ में आहुति देकर सत्य और न्याय की विजय पर प्रसन्नता व्यक्त की। इस अवसर पर युवा क्रांति सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश सिंह ने कहा कि माननीय न्यायालय के निर्णय ने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया है कि सत्य को अधिक समय तक दबाया नहीं जा सकता। आज का बुद्धि शुद्धि यज्ञ किसी के प्रति वैमनस्य का नहीं, बल्कि उन लोगों के लिए सद्बुद्धि की प्रार्थना है जिन्होंने अपना राजनीतिक लाभ लेने के लिए झूठे आरोप लगाकर और अफवाहें फैलाकर एक सम्मानित व्यक्ति की छवि धूमिल करने का प्रयास किया। हम भगवान शनिदेव से प्रार्थना करते हैं कि सभी को सत्य का मार्ग अपनाने और न्याय का सम्मान करने की प्रेरणा मिले।' वहीं संस्थापक सदस्य राजेश अम्बवता ने कहा कि किसी भी व्यक्ति पर बिना प्रमाण के आरोप लगाना और मीडिया के माध्यम से उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाना अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। हमें विश्वास है कि यह निर्णय समाज में न्यायपालिका के प्रति विश्वास को और अधिक मजबूत करेगा तथा लोगों को तथ्य और सत्य के आधार पर अपनी बात रखने की सीख देगा। इस अवसर पर सेना के चेयरमैन लोकेश चौहान, अर्जुन प्रजापति, दुर्गा प्रसाद दुबे, प्रशांत यादव, रवि प्रजापति, तरुण कुमार, जीता भट्ट, पूरण पाल आदि मौजूद थे।

यूपी में जोरदार बारिश, प्रयागराज नैनी में बाइक-स्कूटी डूबी,अंडरपास भी लबालब

लखनऊ/प्रयागराज। यूपी में मानसून फिर से सक्रिय हो गया

है। मंगलवार सुबह से लखनऊ, कानपुर, प्रयागराज, वाराणसी-मथुरा समेत 50 शहरों में रुक-रुक कर बारिश हो रही है। बाकी जिलों में बादल छाए हैं। मथुरा में भारी बारिश की वजह से अंडरपास में 4 फीट तक पानी भर गया। कई स्कूटी और बाइक डूब गईं। लोग कमर तक पानी में चलते दिखाई दिए। वहीं बरसात के चलते प्रयागराज में हाईकोर्ट, पानी टंकी जैसे जगहों पर भरी जाम लग गया। प्रयागराज नैनी में पानी से भरे गड्ढे में बाइक घुस गई। लखनऊ और उन्नाव में 14 घंटों से बारिश हो रही है। सोमवार रात 9 बजे शुरू हुआ बारिश का सिलसिला मंगलवार सुबह भी जारी रहा। सड़कें तालाब बन गईं। घरों में पानी घुस गया। कई इलाकों की बिजली गुल हो गई। बाराबंकी में 2 घंटे की मूसलाधार बारिश से बस स्टेशन परिसर में जलभराव हो गया। रायबरेली में भारी बारिश की वजह से कक्षा-8 तक के स्कूलों में आज छुट्टी घोषित कर दी गई। आगरा में भी रात 1 बजे से रुक-रुक कर बारिश हो रही है। प्राइवेट स्कूलों में छुट्टी कर दी गई है। मौसम विभाग ने आज प्रदेश के सभी 75 जिलों में बारिश का अलर्ट जारी किया है। इनमें से 72 जिलों में भारी बारिश हो सकती है। उधर, पहाड़ी इलाकों में हो रही लगातार बारिश से यूपी में गंगा, घाघरा और शारदा समेत 10 नदियां उफान पर हैं। फर्रुखाबाद के 24 और बिजनौर के 6 गांव बाढ़ की चपेट में हैं। गलियों में नावें चल रही हैं। दोनों शहरों में स्टेट हाईवे पर पिछले 5 दिनों से गंगा का पानी बह रहा है। बिजनौर के चांदपुर में सड़क बहने से 12 फीट गहरा गड्ढा बन गया है।

24 गांवों को जोड़ने वाले पुल पर हादसे का खतरा,पुल पर मिट्टी और पानी जमा

सोनभद्र। जनपद के दूधी विकासखंड में मेदनीखाड़ पुल की स्थिति लगातार बिगड़ रही है। के कारण समय से पहले ही कमजोर हो सकता है। पानी रुकने से पुल की सतह और

यह पुल मेदनीखाड़ ग्राम पंचायत, 24 अन्य गांवों और नेशनल हाईवे को जोड़ता है। पुल पर भारी मात्रा में मिट्टी जमा होने और जलभराव के कारण दुर्घटनाओं का खतरा बढ़ गया है। पुल के ऊपर मिट्टी जमा होने से उस पर घास उग आई है। इस मिट्टी के कारण पुल का ड्रेनेज मार्ग अवरुद्ध हो गया है, जिससे बरसाती पानी पुल पर ही जमा रहता है। ग्रामीणों के अनुसार, पुल पर लगातार पानी भरा रहने से फिसलन बढ़ गई है। इससे छोटे बच्चों, बुजुर्गों और दोपहिया वाहन चालकों के गिरने का खतरा बना हुआ है। यह पुल क्षेत्र के हजारों लोगों के लिए आवागमन का एक प्रमुख मार्ग है। ग्रामीणों ने चिंता व्यक्त की है कि जिस पुल का निर्माण लंबे समय तक सुरक्षित उपयोग के लिए किया गया था, वह लगातार जलभराव और मिट्टी जमा रहने संरचना पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है, जिससे भविष्य में बड़े नुकसान की आशंका है। दीपांशु पटेल, अटल यादव, प्यारेमोहन, सम्भू यादव, ओमप्रकाश पटेल सहित अन्य ग्रामीणों ने प्रशासन से तत्काल कार्रवाई की मांग की है। उन्होंने पुल पर जमा मिट्टी हटाने, पानी की निकासी सुनिश्चित करने और बंद पड़े ड्रेनेज की सफाई कराने का आग्रह किया है। ग्रामीणों का कहना है कि यदि जल्द ही इस समस्या का समाधान नहीं किया गया, तो कभी भी कोई बड़ी दुर्घटना हो सकती है और पुल को भी भारी क्षति पहुंच सकती है। उन्होंने संबंधित विभाग से नियमित सफाई और रखरखाव की व्यवस्था करने की मांग की है, क्योंकि यह पुल 24 गांवों की जीवनरेखा है। इसकी अनदेखी से क्षेत्र की बड़ी आबादी के लिए गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

पिकअप में गांजा लेकर ओडिशा से कौशांबी जा रहा था आरोपी सोनभद्र में पकड़ा गया

सोनभद्र। एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स गाजीपुर व बभनी आश्रम के पास वाहन चेकिंग अभियान चलाया। रविवार शाम

थाना की पुलिस ने रविवार की रात सेवाकुंज आश्रम के पास से एक पिकअप से 50 किलो पांच सौ ग्राम गांजा बरामद किया है। इसके आरोप में पुलिस ने कौशांबी जिले के चरवा थाना क्षेत्र के गोहानी कलां निवासी 28 वर्षीय पवन पाल को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने पिकअप को सीज कर दिया। दुद्धी सीओ विनय प्रभाकर साहनी ने बताया कि बभनी पुलिस और एएनटीएफ गाजीपुर टीम को सूचना मिली थी कि छत्तीसगढ़ के रघुनाथपुर की ओर से एक गांजा तस्कर क्षेत्र में आने वाला है। सूचना के आधार पर संयुक्त टीम ने बभनी थाना क्षेत्र स्थित सेवा कुंज करीब सात बजे एक संदिग्ध पिकअप वाहन को रोककर तलाशी ली गई।जांच के दौरान वाहन से 50 किलो 500 ग्राम अवैध गांजा बरामद हुआ। इसके बाद पुलिस ने चालक को मौके से गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपित पवन पाल ने पूछताछ में बताया कि वह ओडिशा से गांजा लाकर प्रयागराज, कौशांबी और आसपास के क्षेत्रों में सप्लाई करता था। सीओ ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर पिकअप को सीज कर दिया गया है। पुलिस अब इस तस्करी नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों की तलाश और उनके संबंध में जानकारी जुटा रही है।

लौआ नदी सूखी,सावन में कम बारिश, धान की बुवाई पर संकट गहराया

सोनभद्र। दुद्धी तहसील क्षेत्र में कम बारिश के कारण किसान हुआ है, दुद्धी मुख्यालय के आसपास की प्रमुख नदी लौआ

चिंतित हैं। सावन के महीने में भी लौआ नदी सूखी पड़ी है, जिससे धान की बुवाई पर संकट गहरा गया है। स्थानीय लोगों के अनुसार, लौआ नदी में सामान्यतः तेज बहाव रहता था, लेकिन इस वर्ष सावन में भी यह सूख गई है। जबकि तहसील क्षेत्र की अन्य नदियों में जलस्तर बढ़ा में बारिश की कमी स्पष्ट दिख रही है। बारिश की कमी किसानों के लिए बड़ी चिंता का विषय बन गई है। कई किसान अभी तक धान की नर्सरी तैयार नहीं कर पाए हैं। धनौरा, रजखड़ और बिडर जैसे गांवों में तालाबों में भी पानी की कमी बनी हुई है, जिससे सिंचाई के लिए पानी का अभाव है।

सोनभद्र आपदा प्राधिकरण ने ग्रामीणों को किया जागरूक, राहत चौपाल का आयोजन

सोनभद्र। सोनभद्र जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने ने सलाह दी कि पीड़ित व्यक्ति को किसी भी प्रकार की शारीरिक वस्तुओं, तालाबों और जलाशयों से दूर रहने की हिदायत दी गई।

निगाई ग्राम पंचायत के बोकराखड़ी (सोमवार साप्ताहिक बाजार) में एक राहत चौपाल का आयोजन कर ग्रामीणों को आपदाओं के प्रति जागरूक किया। यह अभियान जिला आपदा विशेषज्ञ अरुण कुमार यादव के निर्देशन में चलाया गया। आपदा प्रबंधन विभाग के मास्टर ट्रेनर अनुज कुमार, सिकंदर प्रसाद और आपदा मित्र अमर सिंह ने ग्रामीणों को सर्पदंश की घटनाओं से बचाव के तरीके बताए। उन्होंने कहा कि सर्पदंश होने पर बिना समय गंवाए सरकारी अस्पताल जाना चाहिए, क्योंकि समय पर इलाज से जान बचाई जा सकती है। झाड़-फूंक के चक्कर में पड़ने से स्थिति गंभीर हो सकती है। विशेषज्ञों क्रिया न करने दें और उसकी घबराहट दूर करें, क्योंकि घबराहट से शरीर में जहर तेजी से फैलता है। कटे हुए स्थान पर छेड़छाड़ न करें, बल्कि साबुन और पानी से धोएं। घाव के आसपास से घड़ी, कड़ा, अंगूठी जैसी चीजें तुरंत उतार दें। आकाशीय बिजली से बचाव के उपाय भी बताए गए। ग्रामीणों को पेड़ों के नीचे शरण न लेने और पक्के मकानों में आश्रय लेने की सलाह दी गई। यदि कोई पक्का मकान उपलब्ध न हो, तो खुले स्थान पर उकडू पोजीशन में बैठ जाना चाहिए। यात्रा के दौरान गाड़ी में ही रहें और खिड़कियों, दरवाजों, बरामदों तथा छत से दूर रहें। इसके अतिरिक्त, बिजली के सुचालक समूह में खड़े होने के बजाय अलग-अलग खड़े रहें। खेत-खलिहान में होने पर पैरों के नीचे लकड़ी, प्लास्टिक, बोरा या सूखे पत्ते रख लें। धातु से बने कृषि यंत्रों से दूर रहें और घायल व्यक्ति को तत्काल नजदीकी चिकित्सा केंद्र ले जाएं। इस चौपाल में डूबना, बाढ़, भूकंप, आंधी-तूफान और सड़क दुर्घटना जैसी अन्य आपदाओं के बारे में भी जागरूकता फैलाई गई। इस जागरूकता अभियान में कन्हाई पटेल, मोहम्मद दिलशाद, शिवकुमार चेरो, अफरोज अली, भोला प्रजापति, राम विनय यादव, कमलेश यादव, मंगरु गोड, मत्येंद्र नाथ यादव, नागवंत पटेल, शिवकुमार गोड, शिवकुमार चेरो सहित सैकड़ों ग्रामीण उपस्थित रहे।

अनियंत्रित ट्रेलर ने ढाया कहर,पूर्व प्रधान का बेटा समेत 3 घायल, मलबे में दबे व्यक्ति को निकाला गया बाहर

सोनभद्र। सोनभद्र के चोपन थाना क्षेत्र के मारकुंडी में सोमवार की टायर मरम्मत की दुकान को टक्कर मारी। टक्कर इतनी तेज थमाके की आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे

देर रात करीब 11 बजे एक अनियंत्रित खाली ट्रेलर मुख्य राजमार्ग किनारे बनी दुकानों और एक मकान में जा घुसा। हादसे में तीन प्रतिष्ठान बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए, जबकि मकान में सो रहे 45 वर्षीय रामलखन यादव गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें स्थानीय लोगों की मदद से मलबे से निकालकर जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया गया है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, वाराणसी से चोपन की ओर जा रहा खाली ट्रेलर विंध्य ऑटो सेल्स पेट्रोल पंप के पास अचानक अनियंत्रित हो गया। सबसे पहले उसने सुनील मौर्य जबरदस्त थी कि दुकान पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और हवा भरने की टंकी समेत अन्य उपकरण टूट गए। इसके बाद ट्रेलर आगे बढ़ते हुए फतेह मोहम्मद के होटल में जा घुसा, जिससे होटल को भी भारी नुकसान पहुंचा। अनियंत्रित वाहन यहीं नहीं रुका और पास स्थित एक मकान से टकरा गया। टक्कर के कारण मकान का बड़ा हिस्सा ढह गया। हादसे के समय मकान में पूर्व प्रधान स्वर्गीय रामदेव यादव के 45 वर्षीय पुत्र रामलखन यादव सो रहे थे। मलबे में दबने से वह गंभीर रूप से घायल हो गए। और तत्काल मलबा हटाकर उन्हें बाहर निकाला। बाद में उन्हें उपचार के लिए जिला चिकित्सालय भेजा गया। सूचना मिलने पर चोपन थाना पुलिस मौके पर पहुंची और दुर्घटनाग्रस्त ट्रेलर को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी। पुलिस हादसे के कारणों का पता लगाने में जुटी है। स्थानीय लोगों का अनुमान है कि इस दुर्घटना में दुकानों, मकान और अन्य सामान को मिलाकर करीब 10 लाख रुपये का नुकसान हुआ है। पुलिस मामले की जांच के साथ क्षति का भी आकलन कर रही है।

सूखा पेड़ गिरा साइन बोर्ड पर, बभनी-अंबिकापुर मार्ग पर वन विभाग की कटाई के दौरान हादसा

सोनभद्र। बभनी-अंबिकापुर मार्ग पर मंगलवार सुबह एक होकर पीडब्लूडी द्वारा लगाए गए पुराने साइन बोर्ड पर जा गिरा, यातायात सामान्य हो सका। इस दौरान सड़क के दोनों ओर वाहनों

सूखा पेड़ काटते समय लोक निर्माण विभाग (पीडब्लूडी) के साइन बोर्ड पर गिर गया, जिससे सड़क पर आधे घंटे तक जाम लग गया। यह घटना बभनी थाना क्षेत्र में हुई। वन विभाग द्वारा सड़क किनारे यूकेलिप्टस के इस सूखे पेड़ को काटा जा रहा था। कटाई के दौरान पेड़ अनियंत्रित जिससे साइन बोर्ड क्षतिग्रस्त हो गया। घटना के बाद पेड़ और साइन बोर्ड का मलबा सड़क पर फैल गया, जिससे यातायात बाधित हो गया। हालांकि, इस दौरान कोई बड़ा हादसा या जनहानि नहीं हुई। ट्रैक्टर की मदद से मलबे को हटाया गया, जिसके बाद करीब आधे घंटे बाद की लंबी कतारें लग गईं। बभनी वन क्षेत्र के डिप्टी रेंजर अभिषेक गुप्ता ने बताया कि सूखे पेड़ की शाखाएं गिरने और उसके जर्जर होने की शिकायत मिली थी। इसी कारण पेड़ की शाखाओं को काटने का काम किया जा रहा था, जिसकी चपेट में आकर पुराना पीडब्लूडी का साइन बोर्ड क्षतिग्रस्त हो गया।

अभाविप के पूर्वी उत्तर क्षेत्र के क्षेत्रीय संयोजक बने अनमोल सोनी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। अखिल भारतीय सोशल मीडिया संयोजक, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य, जिला पूर्वी उत्तर क्षेत्र के कार्यकर्ताओं में उत्साह का वातावरण है।

विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की केंद्रीय कार्यसमिति की बैठक केरल में संपन्न हुई। बैठक में संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. रघुराज किशोर तिवारी ने नवीन संगठनात्मक दायित्वों की घोषणा की। इसी क्रम में काशी प्रांत के प्रांत संयोजक अनमोल सोनी को पूर्वी उत्तर क्षेत्र का क्षेत्रीय संयोजक घोषित किया गया। अनमोल सोनी विद्यार्थी परिषद के सक्रिय एवं समर्पित कार्यकर्ता रहे हैं। उन्होंने संगठन में प्रांत विभाग, संयोजक, सोशल मिडिया एक्सपर्ट सहित अनेक महत्वपूर्ण दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन किया है। छात्र हित, संगठन विस्तार, शैक्षणिक सुधार एवं राष्ट्र निर्माण से जुड़े विभिन्न अभियानों में उनकी सक्रिय भूमिका रही है। संगठनात्मक कार्यों में उनके अनुभव, नेतृत्व क्षमता एवं समर्पण को देखते हुए उन्हें यह महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा गया है। इस घोषणा के बाद काशी प्रांत सहित परिषद के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रीय नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त करते हुए विश्वास जताया कि अनमोल सोनी के नेतृत्व में पूर्वी उत्तर क्षेत्र में संगठन और अधिक सशक्त होगा तथा छात्र हित एवं राष्ट्रहित के कार्यों को नई गति मिलेगी। इस अवसर पर अभाविप के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने अनमोल सोनी को नवीन दायित्व के लिए शुभकामनाएँ देते हुए उनके सफल कार्यकाल की कामना की।

सोनभद्र में सराफा कारोबारी से आभूषण का लुटेरा मुठभेड़ में लगी पैर में गोली-गिरफ्तार

सोनभद्र। बभनी थाना क्षेत्र के चपकी गांव निवासी सराफा लड़खड़ा कर गिर गया। पुलिस ने उसके लूट का बैग, करीब सोमवार की शाम पुलिस लाइन चुर्वक में पत्रकार वार्ता में

कारोबारी कुलधीर कुमार से करीब 15 दिन पूर्व आभूषण की हुई लूट के आरोप में पुलिस ने रविवार की देर रात एक व्यक्ति को मुठभेड़ के दौरान गिरफ्तार कर लिया। मध्य प्रदेश के सिंगरौली जिला के बैढन थाना क्षेत्र के धूरीताल गांव निवासी आरोपित 25 हजार रुपये का इनामी पंकज शाह के दाहिने पैर में गोली लगी जिससे वह 62 लाख 22 हजार पांच सौ रुपये कीमत का भारी मात्रा में आभूषण, तमंचा व बाइक बरामद किया है। उस पर यूपी और एमपी में आठ मुकदमें दर्ज हैं। उसका साथी बरगवां गांव निवासी संजय साकेत अंधेरे का लाभ लेकर फरार हो गया। इस मामले में दो आरोपित पूर्व में गिरफ्तार हो चुके हैं। पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा ने गिरफ्तारी की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि देर रात बभनी थाना प्रभारी निरीक्षक अरविंद सरोज एसओजी टीम व थाना दुद्धी पुलिस अरझट पुलिया के पास संदिग्ध व्यक्ति एवं वाहन की जांच कर रही थी। तभी शीशटोला से रघुनाथनगर (छत्तीसगढ़) की तरफ बाइक पर सवार दो संदिग्ध व्यक्ति आते दिखाई दिए।

बिजली इकाइयां ठप होने से बढ़ा संकट,महंगी बिजली खरीदने को मजबूर हुआ विभाग

सोनभद्र। उमस भरी गर्मी के चलते बिजली की मांग लगातार 31 हजार मेगावाट के पार बनी क्षमता वाली 13वीं इकाई कंडेन्सर ट्यूब लीकेज के कारण बंद हो गई। इन दोनों इकाइयों के बंद सरकारी तथा एक निजी (आईपीपी) क्षेत्र की कुल नौ उत्पादन इकाइयों से बिजली

हुई है। दूसरी ओर विभिन्न तापीय परियोजनाओं की कई उत्पादन इकाइयां तकनीकी खराबी के कारण बंद होने से बिजली संकट गहरा गया है। हालात संभालने के लिए बिजली प्रबंधन को वैकल्पिक स्रोतों से महंगी दरों पर बिजली खरीदकर मांग और आपूर्ति के बीच संतुलन बनाए रखना पड़ रहा है। दो अगस्त को अनपरा तापीय परियोजना की 210 मेगावाट क्षमता वाली तीसरी इकाई कंडेन्सर वैक्यूम कम होने तथा ओबरा तापीय परियोजना की 200 मेगावाट होने से प्रदेश के कई जिलों में बिजली कटौती करनी पड़ी। इसी बीच पनकी तापीय परियोजना की 660 मेगावाट क्षमता वाली पहली इकाई से भी उत्पादन ठप हो जाने से स्थिति और गंभीर हो गई। बिजली प्रबंधन ने तत्काल अतिरिक्त स्रोतों से महंगी बिजली खरीदकर प्रभावित क्षेत्रों में आपूर्ति बहाल की। साथ ही पनकी की बंद इकाई से करीब छह घंटे के भीतर पुनः उत्पादन शुरू करा दिया गया, जिससे कुछ राहत मिली। इसके बावजूद वर्तमान में प्रदेश की आठ उत्पादन बंद होने के कारण लगभग 3,845 मेगावाट उत्पादन प्रभावित है। ऊर्जा विभाग के अधिकारियों के अनुसार अगले एक से दो दिनों में अनपरा की दो इकाइयों के अलावा हरदुआगंज, जवाहरपुर, ओबरा और घाटमपुर की एक-एक इकाई से उत्पादन शुरू होने की संभावना है। इन छह इकाइयों के चालू होते ही प्रदेश में बिजली उत्पादन बढ़ेगा और महंगी दरों पर खरीदी जा रही बिजली पर निर्भरता कम होगी। इससे बिजली प्रबंधन पर आर्थिक दबाव भी घटने की उम्मीद है।

फूड प्रिजर्वेटिव से हार्ट डिजीज का रिस्क,डॉक्टर से जानें- हाई प्रिजर्वेटिव्स फूड की लिस्ट, खरीदने से पहले लेबल पढ़ें

नयी दिल्ली। पैकेज्ड और अल्ट्राप्रोसेस्ड फूड हमारी रोजमर्रा की जिंदगी का अहम हिस्सा बन चुके हैं। इन फूड्स को लंबे समय तक खाने योग्य बनाए रखने के लिए इनमें अलग-अलग प्रिजर्वेटिव मिलाए जाते हैं। ये प्रिजर्वेटिव फूड की शेल्फ लाइफ बढ़ाते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि कुछ आर्टिफिशियल प्रिजर्वेटिव्स हमारी सेहत को नुकसान पहुंचाते हैं। हाल ही में 'यूरोपियन सोसाइटी ऑफ कार्डियोलॉजी' में एक स्टडी पब्लिश हुई। इसके मुताबिक, अल्ट्राप्रोसेस्ड फूड में इस्तेमाल होने वाले कुछ कॉमन प्रिजर्वेटिव्स हाई ब्लड प्रेशर और हार्ट डिजीज का जोखिम बढ़ाते हैं। इसलिए 'फिजिकल हेल्थ' कॉलम में आज फूड प्रिजर्वेटिव्स के हेल्थ रिस्क पर विस्तार से बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- किन फूड्स में सबसे ज्यादा प्रिजर्वेटिव्स होते हैं? फूड प्रिजर्वेटिव से कैसे बचा जा सकता है? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. संजीव अग्रवाल, डायरेक्टर, कार्डियोलॉजी, श्री बालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट, दिल्ली जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- फूड प्रिजर्वेटिव पर हुई हालिया स्टडी क्या कहती है? जवाब- इस स्टडी से पता चला कि फूड प्रिजर्वेटिव्स से हाई ब्लड प्रेशर और हार्ट डिजीज का जोखिम बढ़ता है। हालांकि यह ऑब्जर्वेशनल स्टडी है। यह सीधे तौर पर यह साबित नहीं करती कि प्रिजर्वेटिव ही हार्ट डिजीज का कारण है, लेकिन इनके बीच एक संबंध दिखाती है। स्टडी की प्रमुख बातें-स्टडी किस देश में हुई? यह रिव्यू स्टडी फ्रांस की मेजर हेल्थ स्टडी 'न्यूट्रीनेट-सैंटे' के डेटा पर आधारित है, जो खानपान, न्यूट्रिशन और हेल्थ के बीच संबंधों पर का अध्ययन है। कितने लोगों पर हुई? स्टडी में 1,12,395 वयस्कों को शामिल किया गया। कितने साल चली? करीब 8 साल तक स्टडी में शामिल लोगों के खानपान और स्वास्थ्य की रेगुलर मॉनिटरिंग की गई। किन प्रिजर्वेटिव्स पर फोकस था? रिसर्चर्स ने कुल 17 कॉमन फूड प्रिजर्वेटिव्स को एनालाइज किया। इनमें शामिल हैं- सोडियम नाइट्राइट, पोटेशियम सोर्बेट, पोटेशियम मेटाबाइसल्फाइट, साइट्रिक एसिड,एस्कॉर्बिक एसिड/विटामिन सी, सोडियम एस्कॉर्बेट। सोडियम एरिथॉर्बेट,क्या नतीजा मिला? जिन लोगों ने नॉन-एंटीऑक्सिडेंट प्रिजर्वेटिव्स (जैसे नाइट्राइट, सोर्बेट, सल्फाइट) को ज्यादा कंज्यूम किया, उनमें हाई ब्लड प्रेशर का रिस्क 29फीसदी और हार्ट डिजीज का रिस्क 16फीसदी ज्यादा पाया गया। वहीं एंटीऑक्सिडेंट प्रिजर्वेटिव्स (जैसे एस्कॉर्बिक एसिड और साइट्रिक एसिड) कंज्यूम करने वालों में हाई ब्लड प्रेशर का जोखिम 22फीसदी ज्यादा देखा गया। सवाल- फूड प्रिजर्वेटिव क्या हैं? जवाब- फूड

प्रिजर्वेटिव वे पदार्थ हैं, जिन्हें खाने-पीने की चीजों की शेल्फ लाइफ बढ़ाने के लिए मिलाया जाता है। ये बैक्टीरिया, फफूंद और अन्य सूक्ष्मजीवों को पैदा होने से रोकते हैं। इसे सरल भाषा में ऐसे समझिए- जब भी हम खाने-पीने की कोई चीज रखते हैं तो वह वातावरण में मौजूद ऑक्सीजन के साथ रिएक्ट करती है। इससे फूड में बैक्टीरिया पैदा होते हैं। ये बैक्टीरिया बुरे नहीं हैं। बस ये मनुष्य के खाने के लिए नहीं हैं। यही कारण है कि भोजन जल्दी खराब हो जाता है। अब भोजन को खराब होने से बचाना है तो उसके लिए या तो उसे फ्रिज में रखना होगा (फ्रिज का तापमान कम होता है और बैक्टीरिया को पनपने के लिए ज्यादा तापमान चाहिए।) या किसी भी अन्य तरीके से बैक्टीरिया को पनपने से रोकना होगा। ऐसे में फूड को लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए उसमें कुछ ऐसी चीजें मिलाई जाती हैं, जो बैक्टीरिया को पनपने से रोकती हैं। इन्हें ही फूड प्रिजर्वेटिव कहते हैं। इसका शाब्दिक अर्थ है फूड को प्रिजर्व (सुरक्षित) करने वाले तत्व। ये प्रिजर्वेटिव नेचुरल और आर्टिफिशियल, दोनों तरह के होते हैं। सवाल- खाने में प्रिजर्वेटिव क्यों मिलाया जाता है? जवाब- किसी भी फूड को लंबे समय तक सुरक्षित और ताजा बनाए रखने के लिए उसमें प्रिजर्वेटिव मिलाया जाता है। साथ ही ये खाने का स्वाद, रंग और क्वालिटी मेंटेन रखने में मदद करता है। सवाल- फूड प्रिजर्वेटिव्स हार्ट को कैसे नुकसान पहुंचाते हैं? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- कुछ फूड प्रिजर्वेटिव्स शरीर में इंफ्लेमेशन और ऑक्सिडेटिव स्ट्रेस बढ़ाते हैं। इससे ब्लड वेसल्स की इंटरनल लेयर को नुकसान पहुंचता है और ब्लड प्रेशर बढ़ता है। इससे लंबे समय में हार्ट अटैक और स्ट्रोक का रिस्क बढ़ता है। हालांकि यह रिस्क प्रिजर्वेटिव की मात्रा, खानपान और लाइफस्टाइल पर निर्भर करता है। सवाल- फूड प्रिजर्वेटिव्स हार्ट के अलावा और किन अंगों को नुकसान पहुंचाते हैं? जवाब- कुछ फूड प्रिजर्वेटिव्स लंबे समय में किडनी, लिवर, आंत, ब्रेन और रेस्पिरेटरी सिस्टम पर बुरा असर डाल सकते हैं। सवाल- ये फूड प्रिजर्वेटिव्स हमारे शरीर में कैसे पहुंचते हैं? जवाब- जब हम प्रकृति से मिलने वाली चीजें खाते हैं, तो हमारे शरीर में आर्टिफिशियल केमिकल नहीं पहुंचते हैं। लेकिन जब हम रेडी-टू-ईट फूड, पिज्जा, बर्गर, ब्रेड, सॉस, मेयोनीज जैसी अल्ट्राप्रोसेस्ड और पैकेज्ड चीजें खाते हैं तो तो उनमें मौजूद फूड प्रिजर्वेटिव्स भी शरीर में पहुंच जाते हैं। सवाल- अगर कोई बहुत ज्यादा पैकेज्ड फूड खाता है तो उसे क्या हेल्थ प्रॉब्लम्स हो सकती हैं? जवाब- बहुत ज्यादा पैकेज्ड और अल्ट्राप्रोसेस्ड फूड खाने से कई स्वास्थ्य समस्याओं का रिस्क बढ़ता है। इसकी वजह सिर्फ प्रिजर्वेटिव्स ही नहीं, बल्कि इनमें मौजूद ज्यादा नमक, चीनी और अनहेल्दी फैट भी हैं। सभी हेल्थ रिस्क पॉइंटर्स में देखिए- हाई ब्लड प्रेशर,हार्ट डिजीज, मोटापा, टाइप-2 डायबिटीज, फैटी लिवर, पाचन संबंधी समस्याएं, किडनी डिजीज,सवाल- नेचुरल और आर्टिफिशियल प्रिजर्वेटिव में क्या फर्क है? जवाब- नेचुरल प्रिजर्वेटिव प्राकृतिक सोर्स से मिलते हैं, जबकि आर्टिफिशियल प्रिजर्वेटिव लैब में बनाए जाते हैं। दोनों का काम फूड्स की शेल्फ लाइफ बढ़ाना है। सवाल- पैकेज्ड फूड में कौन-से प्रिजर्वेटिव ज्यादा इस्तेमाल होते हैं? जवाब- पैकेज्ड और अल्ट्राप्रोसेस्ड फूड को लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए कई तरह के प्रिजर्वेटिव्स मिलाए जाते हैं। एफएसएसएआई प्रिजर्वेटिव्स को पहचानने के लिए 'इंटरनेशनल नंबरिंग सिस्टम' (आईएनएस) कोड का यूज करता है। जब आप किसी पैकेट के पीछे 'इंग्रीडिएंट' लिस्ट देखते हैं, तो वहां ये कोड्स लिखे होते हैं। सवाल- इनमें से कौन-से प्रिजर्वेटिव्स रिस्की और कौन से अपेक्षाकृत सुरक्षित होते हैं? जवाब- किसी भी प्रिजर्वेटिव की सुरक्षा उसके एक्सेप्टेबल डेली इनटेक और सेवन की मात्रा पर निर्भर करती है। सोडियम नाइट्राइट, सोडियम नाइट्रेट और कुछ सल्फाइट्स का ज्यादा इनटेक हेल्थ के लिए नुकसादायक हो सकता है। वहीं नियामक संस्थाएं साइट्रिक एसिड, एसिटिक एसिड, पोटेशियम सोर्बेट और कैल्शियम प्रोपियोनेट जैसे प्रिजर्वेटिव्स का तय सीमा में इस्तेमाल सुरक्षित मानती हैं। सवाल- पैकेट पर इंग्रीडिएंट लिस्ट में लिखे किन शब्दों से प्रिजर्वेटिव्स को पहचानें? जवाब- पैकेज्ड फूड खरीदते समय इंग्रीडिएंट लिस्ट जरूर पढ़ें। ऊपर 'पैकेज्ड फूड में यूज होने वाले प्रिजर्वेटिव्स' ग्राफिक में सभी मुख्य प्रिजर्वेटिव्स के नाम और उनका कोड नंबर दिया हुआ है। ये नंबर आपको याद होने चाहिए। एफएसएसएआई एक तय सीमा के भीतर इन प्रिजर्वेटिव्स के इस्तेमाल की अनुमति देता है। लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि ये रेडीमेड फूड आप रोज खा सकते हैं। रोज पैकेज्ड फूड खाने का मतलब है कि आपके शरीर में रोज तय सीमा से बहुत ज्यादा प्रिजर्वेटिव्स जा रहे हैं। जब भी सुपरमार्केट से कोई फूड प्रोडक्ट खरीदें तो उसका लेबल जरूर पढ़ें। लेबल शुगर, कार्ब, प्रोटीन की मात्रा के साथ-साथ प्रिजर्वेटिव्स की डिटेल देखें। जागरूक उपभोक्ता बनें। बिना जानकारी अपने पेट में कुछ भी न डालें।जवाब- नहीं, 'नो एडेड प्रिजर्वेटिव्स' का मतलब सिर्फ इतना है कि प्रोडक्ट में अलग से कोई प्रिजर्वेटिव नहीं मिलाया गया है। इसमें नमक, चीनी, सिरका या नींबू का रस जैसे नेचुरल प्रिजर्वेटिव हो सकते हैं। साथ ही पॉश्चराइजेशन, रेफ्रिजरेशन या एयरटाइट पैकेजिंग जैसी तकनीकों से भी फूड को सुरक्षित रखा जा सकता है। सवाल- फूड प्रिजर्वेटिव से कैसे बचें? जवाब- फूड प्रिजर्वेटिव्स से बचने का एक ही तरीका है। हम अपने पेट के अंदर जो चीजें डाल रहे हैं, वह ज्यादा से ज्यादा प्राकृतिक हो। खेतों में उगी हो, पेड़ों से आई हो और फिर घर में उसे पकाया गया हो। वह फूड इंडस्ट्री के द्वारा बनाई गई न हो यानी पैकेज्ड फूड न हो। कुछ नेचुरल चीजें बिना आर्टिफिशियल केमिकल के भी फूड्स को लंबे समय तक सुरक्षित रखने में मदद करती हैं। जैसेकि-नमक, चीनी, सिरका, नींबू का रस, शहद, सरसों का तेल, मसाले (हल्दी, लौंग, दालचीनी), रोजमेरी एक्सट्रैक्ट।

आकिब नबी पहली बार भारतीय टेस्ट टीम में:बुमराह की जगह श्रीलंका दौरे पर जाएंगे, जम्मू-कश्मीर के तीसरे प्लेयर टीम इंडिया में

स्पोर्ट डेस्क। श्रीलंका दौरे के लिए भारतीय टेस्ट टीम में बड़ा बदलाव हुआ है। तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की जगह आकिब नबी को टीम में शामिल किया गया है। नबी टीम इंडिया में चुने जाने वाले जम्मू-कश्मीर के सिर्फ तीसरे क्रिकेटर हैं। श्रीलंका के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की सीरीज 15 अगस्त से गॉल में शुरू होगी। जसप्रीत बुमराह रविवार को टीम इंडिया से बाहर हो गए थे। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, वे घुटने की चोट से नहीं उबर पाए हैं। टीम मैनेजमेंट और बीसीसीआई ने उनके लंबे करियर को देखते हुए कोई जोखिम नहीं लेने का फैसला किया है। नबी टेस्ट टीम में चुने जाने वाले जम्मू-कश्मीर के पहले क्रिकेटर-23 साल के आकिब नबी ने रणजी ट्रॉफी 2025-26 में शानदार प्रदर्शन किया था। अब उन्हें भारतीय टेस्ट टीम में मौका मिला है। वे टेस्ट टीम में चुने जाने वाले जम्मू कश्मीर के पहले क्रिकेटर हैं। वैसे, यहां के परवेज रसूल और उमरान मलिक भी भारतीय टीम में चुने जा चुके हैं लेकिन उन्हें सिर्फ वनडे और टी20 टीम में मौका मिला है। दो रणजी सीजन में कुल 104 विकेट चटकाए 29 साल आकिब ने 2025-26 रणजी ट्रॉफी में मात्र 10 मैचों में 60 विकेट लिए, जिनमें सात बार पांच विकेट लेने का कारनामा शामिल है। पिछले दो रणजी सीजन में आकिब नबी ने कुल 104 विकेट लिए हैं। इनमें 2025-26 में 60 और पिछले सीजन में 44 विकेट शामिल हैं। इन आंकड़ों ने आकिब नबी का लाल गेंद क्रिकेट में देश के सबसे प्रभावशाली गेंदबाजों में शुमार कर दिया है।आकिब का नाकआउट मुकाबलों में प्रदर्शन विशेष रूप से शानदार रहा। आकिब ने क्वार्टरफाइनल में मध्य प्रदेश, सेमीफाइनल में बंगाल और फाइनल में कर्नाटक के विरुद्ध निर्णायक गेंदबाजी की।

इन प्रदर्शनों ने न केवल जम्मू-कश्मीर को पहली बार रणजी ट्रॉफी का खिताब दिलाया बल्कि दबाव में उनके धैर्य को भी प्रदर्शित किया।

बीसीसीआई ने दी जानकारी- बीसीसीआई ने टीम में बदलाव की पुष्टि की है। हालांकि, बोर्ड ने बुमराह को टीम से बाहर करने या आकिब नबी को शामिल करने का कारण नहीं बताया है। हाल ही में इंडिया ए के साथ श्रीलंका दौरे पर थे नबी आकिब नबी हाल ही में इंडिया ए टीम के साथ श्रीलंका दौरे पर भी गए थे। वहां उन्होंने दो प्रथम श्रेणी मैचों में छह विकेट लिए थे। शुभमन गिल के नेतृत्व में उतरेगी टीम श्रीलंका दौरे पर भारतीय टेस्ट टीम की कमान शुभमन गिल संभालेंगे।

केएल राहुल उपकप्तान होंगे। विकेटकीपर के रूप में ऋषभ पंत और ध्रुव जुरेल टीम का हिस्सा हैं। भारतीय टीम के लिए विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में पहुंचने के लिहाज से यह सीरीज जीतनी जरूरी है।

भारत को साउथ अफ्रीका के खिलाफ पिछली घरेलू टेस्ट सीरीज में 0-2 से हार मिली थी।

कॉमनवेल्थ में बॉक्सिंग भारत की ताकत, एथलेटिक्स में गोल्ड नहीं-39 मेडल के साथ चौथे स्थान पर, 123 खिलाड़ियों में 38 मेडलिस्ट, सक्सेस रेट 31फीसदी

स्पोर्ट डेस्क। कॉमनवेल्थ गेम्स 2026 में भारत ने 13 गोल्ड, 17 सिल्वर और 9 ब्रॉन्ज समेत कुल 39 मेडल जीते। वह मेडल टैली में चौथे नंबर पर रहा।पहली नजर में यह प्रदर्शन बर्मिंघम 2022 के 61 मेडल से कमजोर दिख सकता है, लेकिन आंकड़े अलग कहानी बताते हैं। इस बार ग्लासगो में सिर्फ 10 खेल शामिल थे, जबकि बर्मिंघम में 19 खेल खेले गए थे। बैडमिंटन, कुश्ती, शूटिंग, हॉकी, टेबल टेनिस और क्रिकेट जैसे खेल ग्लासगो गेम्स का हिस्सा नहीं थे, जिनसे 2022 में भारत को 30 पदक मिले थे। इसके अलावा भारत ने 210 खिलाड़ियों की जगह सिर्फ 123 खिलाड़ियों का दल भेजा। इनमें से 38 खिलाड़ी मेडल जीतकर लौटे, यानी सक्सेस रेट 31फीसदी रहा। बर्मिंघम में यह आंकड़ा 29फीसदी था। 5 फैक्टर्स में एनालिसिस:-1. मेडल के लिहाज से- बॉक्सिंग सबसे बड़ा मेडल बैंक-भारत के 39 पदकों में सबसे बड़ा योगदान बॉक्सिंग का रहा। मुक्केबाजों ने 7 गोल्ड और 3 सिल्वर समेत कुल 10 मेडल जीते। यानी हर चार में से एक मेडल बॉक्सिंग से आया। एथलेटिक्स में 10 मेडल आए, लेकिन इसमें गोल्ड नहीं मिला। वेटलिफ्टिंग से 8, पैरा एथलेटिक्स से 6, जूडो से 4 और पैरा पावरलिफ्टिंग से 1 मेडल मिला। कुल मिलाकर 39 में से 37 पदक सिर्फ पांच खेलों से आए। 2. पोजिशन के लिहाज से- चौथा स्थान बरकरार-भारत 13 गोल्ड के साथ मेडल टैली में चौथे स्थान पर रहा। ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और कनाडा उससे आगे रहे। खेलों की संख्या कम होने और दल छोटा होने के बावजूद टीम टॉप-4 में पहुंच गई।

2022 बर्मिंघम गेम्स में 22 गोल्ड के साथ भारत चौथे स्थान पर था। 3. अनुमान से दोगुना ज्यादा गोल्ड जीते-कॉमनवेल्थ गेम्स शुरू होने से पहले भारतीय ओलिंपिक संघ और विभिन्न खेल महासंघों की इंटरनल रिपोर्ट में भारत को 6 गोल्ड समेत 31 मेडल मिलने का अनुमान लगाया गया था। भारतीय खिलाड़ियों ने अनुमान से दोगुना से भी ज्यादा गोल्ड जीते। कुल मेडल में भी आगे निकल गए। भारत की सबसे ज्यादा उम्मीदें बॉक्सिंग, वेटलिफ्टिंग और एथलेटिक्स से थीं, जिन्होंने मिलकर 26 मेडल दिलाए। हालांकि, एथलेटिक्स में भारत को सबसे बड़ा झटका लगा और टीम एक भी गोल्ड मेडल नहीं जीत सकी। 4. किस खेल ने उम्मीद से बेहतर प्रदर्शन किया? 1. बॉक्सिंग-भारत का सबसे सफल खेल बॉक्सिंग रहा। 14 मुक्केबाजों के दल में से 10 खिलाड़ी मेडल जीतकर लौटे। इसमें 7 गोल्ड और 3 सिल्वर शामिल रहे। यानी 71फीसदी मेडल कन्वर्जन रेट। बर्मिंघम 2022 में यह आंकड़ा 58फीसदी था। जैस्मिन लांबोरिया, साक्षी चौधरी, प्रीति पवार, प्रिया घंघास, अरुंधति चौधरी, सचिन सिवाच और अंकुश पंघाल चैंपियन बने। लवलीना बोरगोहेन, जादुमणि सिंह और नरेंद्र बेरवाल सिल्वर जीत सके। 2- पैरा एथलेटिक्स-भारत के सिर्फ 11 पैरा एथलीट ग्लासगो पहुंचे थे, लेकिन उन्होंने 6 मेडल जीत लिए। इनमें 3 गोल्ड, 2 सिल्वर और 1 ब्रॉन्ज शामिल रहे। भारत ने तीन बार डबल पोडियम हासिल किया और दो बार 1-2 फिनिश दर्ज की। दिलीप गावित, सोमन राणा और शर्मिला धनकड़ गोल्ड जीतने में सफल रहे। 3- जूडो-जूडो में भारत ने पहली बार कॉमनवेल्थ इतिहास में गोल्ड जीता। अस्मिता डे ने गोल्ड दिलाया। इसके कुछ मिनट बाद हर्ष सिंह ने दूसरा गोल्ड जीत लिया। यामिनी मौर्य ने सिल्वर और उन्नति शर्मा ने ब्रॉन्ज जीतकर कुल चार मेडल दिलाए। हालांकि 14 सदस्यीय भारतीय टीम के दो खिलाड़ी अरुण कुमार और तुलिका मान डोपिंग के कारण बाहर हो गए। 5. इनमें बेहतर करने की संभावनाएं-र. एथलेटिक्स-एथलेटिक्स ने भारत को 10 मेडल दिलाए, लेकिन एक भी गोल्ड नहीं आया। नीरज चोपड़ा सिल्वर जीत सके। उनके साथ डेब्यू कर रहे यशवीर सिंह ने ब्रॉन्ज जीता। गुलवीर सिंह ने 10 हजार मीटर में सिल्वर और 5 हजार मीटर रेस में ब्रॉन्ज जीतकर इतिहास रचा। तेजस्विन शंकर ने डेकाथलन में भारत का पहला कॉमनवेल्थ पदक दिलाया। सरवेश कुशारे, श्रीशंकर, प्रवीण चित्रावेल और सीमा कालीरामना भी मेडल जीतने में सफल रहे। हालांकि स्प्रिंट और रिले टीम से बड़ी उम्मीदें थीं, वह खाली हाथ रही। 2. वेटलिफ्टिंग-भारत ने वेटलिफ्टिंग में 8 मेडल जीते, लेकिन सिर्फ एक गोल्ड मिला। मीराबाई चानू ने लगातार तीसरा कॉमनवेल्थ गोल्ड जीता। ऋषिकांता सिंह, अजय बाबू और लवप्रीत सिंह ने स्नैच में गेम्स रिकॉर्ड बनाए। ज्ञानेश्वरी यादव ने नेशनल रिकॉर्ड तोड़ा। 2022 में 15 में से 10 भारतीय वेटलिफ्टर मेडल जीतकर लौटे थे।

5. जिम्नास्टिक्स, स्विमिंग और साइक्लिंग में मेडल नहीं मिला-जिम्नास्टिक्स में भारत के आठ खिलाड़ियों में से केवल दो ही फाइनल में पहुंच सके। इस खेल में भारत को 2014 से कोई मेडल नहीं मिला है। स्विमिंग में श्रीहरि नटराज सहित कोई भी स्विमर मेडल तक नहीं पहुंच सका। साइक्लिंग में भी नतीजे निराशाजनक रहे। इसी बीच 16 साल की ट्रैक साइक्लिंग प्लेयर लीशा दास की कहानी चर्चा में रही। सीमित संसाधनों और प्रशासनिक दिक्कतों के बावजूद उन्होंने ग्लासगो में हिस्सा लिया। हालांकि वे मेडल जीतने में सफल नहीं रहीं।

मीराबाई राष्ट्रगान सुन रो पड़ीं, नीरज को सिल्वर,गुलवीर को दो मेडल, लवलीना का पदक बिना खेले पक्का हुआ-कॉमनवेल्थ के 10 मोमेंट्स-रिकॉर्ड्स

स्पोर्ट्स डेस्क। कॉमनवेल्थ गेम्स में भारत ने 39 मेडल जीतकर चौथा स्थान हासिल किया। वेटलिफ्टर मीराबाई चानू लगातार तीसरा गोल्ड जीतने के बाद

राष्ट्रगान सुनकर रो पड़ीं। जेवलिन में नीरज चोपड़ा को सिल्वर मिला। रनर गुलवीर सिंह ने ट्रैक एंड फील्ड में दो मेडल जीतकर इतिहास रचा। दूसरी ओर लवलीना बोरगोहेन का बॉक्सिंग में मेडल गेम्स शुरू होने से पहले ही पक्का हो गया। 1. मीराबाई गोल्ड जीतने के बाद रो पड़ीं-भारत के सबसे भावुक पलों में से एक मीराबाई चानू का मेडल इवेंट रहा। वेटलिफ्टिंग में गोल्ड जीतने के बाद जब राष्ट्रगान बजा तो हमेशा मुस्कुराती दिखने वाली मीराबाई रो पड़ीं। 2. तेजस्विन शंकर ने चोट में भी रचा इतिहास-तेजस्विन शंकर ने डेकाथलन में भारत का पहला कॉमनवेल्थ मेडल जीता। उन्होंने चोटिल घुटने के बावजूद 10 इवेंट्स में हिस्सा लिया। कुछ मौकों पर उन्होंने कोचिंग का काम भी किया। वे साथी खिलाड़ियों को सलाह देते भी नजर आए। 3. अस्मिता डे ने दिलाया जूडो का पहला गोल्ड-त्रिपुरा की अस्मिता डे ने भारत को कॉमनवेल्थ इतिहास का पहला जूडो गोल्ड दिलाया। फाइनल में पिछड़ने के बाद उन्होंने शानदार वापसी की। आर्थिक संघर्षों से निकलकर गोल्ड जीतने वाली अस्मिता ग्लासगो की सबसे इंस्पायर कहानियों में शामिल रहीं। 4. नीरज से ज्यादा चर्चा यशवीर की हुई-जैवलिन थ्रो में नीरज चोपड़ा ने सिल्वर मेडल जीता, लेकिन सबसे बड़ा सरप्राइज यशवीर सिंह रहे। आखिरी थ्रो से पहले वे आठवें स्थान पर थे। छठे थ्रो में उन्होंने 85.41 मीटर का पर्सनल बेस्ट प्रदर्शन किया और ब्रॉन्ज जीत लिया। 5. गुलवीर सिंह का डबल पोडियम-गुलवीर सिंह ने 10 हजार मीटर में सिल्वर और 5 हजार मीटर दौड़ में ब्रॉन्ज जीतकर भारतीय एथलेटिक्स के इतिहास में अपना नाम दर्ज करा दिया। ऐसा पहली बार हुआ कि किसी भारतीय ने ट्रैक एंड फील्ड में दो मेडल जीते। 6. लवलीना का बिना खेले पक्का हुआ मेडल-कॉमनवेल्थ गेम्स से पहले ही महिला 75 किलो वर्ग में सिर्फ पांच मुक्केबाज थीं। ऐसे में लवलीना बोरगोहेन सीधे सेमीफाइनल में पहुंच गईं और उनका मेडल पक्का हो गया। उन्होंने सिर्फ दो मुकाबले खेले। एक जीता और एक हारा, लेकिन सिल्वर अपने नाम कर लिया। यह भारत के सबसे अनोखे मेडल्स में से एक रहा। 7. प्रवीण चित्रावेल ने चार साल पुराना हिसाब बराबर किया-ट्रिपल जम्पर प्रवीण चित्रावेल 2022 में सिर्फ 3 सेंटीमीटर से मेडल से चूक गए थे। इस बार उन्होंने 16.58 मीटर की छलांग लगाकर सिल्वर जीत लिया और चार साल पुराना हिसाब बराबर कर दिया। 8. 5 महिला बॉक्सरों ने गोल्ड जीता-भारत की 6 में से पांच महिला बॉक्सर गोल्ड जीतने में सफल रहीं। साक्षी चौधरी, प्रीति पवार, जैस्मिन लांबोरिया, प्रिया घंघास और अरुंधति चौधरी ने मेडल जीते। ऐसा पहली बार हुआ जब एक ही कॉमनवेल्थ में 5 बॉक्सर को मेडल मिले। मेंस और विमेंस मिलाकर 10 मुक्केबाजों ने फाइनल खेला। 7 को गोल्ड, 3 ने सिल्वर जीता। 9. पैरा एथलेटिक्स के तीन डबल पोडियम-भारत ने पैरा एथलेटिक्स में तीन बार डबल पोडियम हासिल किया। यानी 3 बार एक ही इवेंट में दो प्लेयर्स ने मेडल जीते। विमेंस शॉटपुट में शार्मिला धनखड़ ने गोल्ड और शिल्पा शायला ने ब्रॉन्ज जीता। 100 मीटर दौड़ में दिलीप गावित ने गोल्ड और मोहम्मद बासिल ने सिल्वर हासिल किया। मेंस शॉटपुट में सोमन राणा को गोल्ड और शुभम जुयाल को सिल्वर मिला। 10. झंडू कुमार ने पहला मेडल दिलाया-भारत का पहला मेडल पैरा पावरलिफ्टर झंडू कुमार ने दिलाया। पोलियो से प्रभावित झंडू कभी सब्जियां बेचते थे और ई-रिक्शा चलाते थे। ट्रेनिंग जारी रखने के लिए उन्होंने अपना रिक्शा तक बेच दिया था।

अमेरिका के क्रिकेटर अखिलेश रेड्डी पर 8 साल की रोक बैन,आबू धाबी टी10 लीग में फिक्सिंग की कोशिश और सबूत मिटाने का दोषी पाया गया

स्पोर्ट डेस्क। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) के एंटी-करप्शन ट्रिब्यूनल ने अमेरिका के क्रिकेटर बोदुगुम अखिलेश रेड्डी पर क्रिकेट के सभी फॉर्मेट से 8 साल का प्रतिबंध लगाया है। ट्रिब्यूनल ने उन्हें आबू धाबी टी10 लीग 2025 के दौरान मैच फिक्सिंग की कोशिश, दूसरे खिलाड़ी को फिक्सिंग के लिए उकसाने और जांच के दौरान मोबाइल से सबूत मिटाने का दोषी पाया। यह प्रतिबंध 21 नवंबर 2025 से प्रभावी माना जाएगा, जब उन्हें अस्थायी रूप से निलंबित किया गया था। आईसीसी के मुताबिक, मामले

की जांच एमिरेट्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) की ओर से नियुक्त आईसीसी के एंटी-करप्शन अधिकारियों (डीएसीओ) ने की थी। अमेरिका के लिए खेल चुके हैं 4 टी-20 मैच-26 साल के बोदुगुम अखिलेश रेड्डी ने अमेरिका की राष्ट्रीय क्रिकेट टीम के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 4 टी20 मैच खेले हैं। उन्होंने नॉर्थ अमेरिका टी20 कप में कैमैन आइलैंड्स के खिलाफ अमेरिका के लिए अपना इंटरनेशनल डेब्यू किया था। एक बल्लेबाज और पार्ट-टाइम गेंदबाज के रूप में खेलने वाले अखिलेश के नाम अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में 1 विकेट दर्ज है। आबू धाबी टी10 लीग में आईसीसी की क्या भूमिका है? आबू धाबी टी10 लीग का आयोजन एमिरेट्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) करता है। टूर्नामेंट में भ्रष्टाचार रोधी नियमों को लागू करने और उनकी निगरानी की जिम्मेदारी आईसीसी के एंटी-करप्शन अधिकारियों (डीएसीओ) को सौंपी गई है। इसी अधिकार के तहत इस मामले की जांच और सुनवाई की गई।

भारत को 2030 कॉमनवेल्थ गेम्स की मशाल सौंपी गई, क्लोजिंग सेरेमनी में शंकर महादेवन, मानुषी छिल्लर की परफॉर्मेंस, नीरज, पीटी ऊषा को ध्वज मिला

नयी दिल्ली। ग्लासगो में 11 दिन तक चले कॉमनवेल्थ गेम्स का समापन हो गया है। रविवार रात को ओवो हाइड्रो एरिना में ऑस्ट्रेलियन सिंगर डेल्टा गूडरेम की परफॉर्मेंस से क्लोजिंग सेरेमनी की शुरुआत हुई। उसके बाद कॉमनवेल्थ स्पोर्ट्स के प्रेसिडेंट डॉ. डोनाल्ड रुका ने 2030 गेम्स के मेजबान भारत को मशाल सौंपी। यहां नीरज चोपड़ा, इंडियन ओलिंपिक एसोसिएशन की प्रेसिडेंट पीटी ऊषा और गुजरात के डिप्टी सीएम हर्ष संघवी मौजूद रहे। आखिर शंकर महादेवन, मानुषी छिल्लर, सितार वादक ऋषभ रिखीराम और भूमि त्रिवेदी जैस भारतीय कलाकारों ने इंडियन ट्रेडिशन में गेम्स का स्वागत किया। ऋषभ रिखीराम सितार और रॉस एंसली ने बैगपाइपर पर जुगलबंदी पेश की। रिखीराम ने शिव तांडव स्त्रोत गाया। 2017 की मिस वर्ल्ड मानुषी छिल्लर ने वंदे मातरम् पर डांस किया। शंकर महादेवन ने ऐ वतन और भाग मिल्खा मिल्खा गाया। उन्होंने अपने बेटों सिद्धार्थ, शिवम और भूमि त्रिवेदी के साथ परचम लहरा दो...गाने पर परफॉर्मेंस दी। स्कॉटिश कल्चर से कॉमनवेल्थ की विदाई-सेरेमनी की शुरुआत में ऑस्ट्रेलियन सिंगर डेल्टा गूडरेम, मशहूर बैंड एलीफेंट सेशंस और शेरीन कटकेलल्विन की प्रस्तुति में स्कॉटलैंड के कल्चर की झलक दिखी। क्लोजिंग सेरेमनी हाईलाइट्स-ऑस्ट्रेलियन सिंगर डेल्टा गूडरेम परफॉर्म किया। वहीं, नाइजिरियन आर्टिस्ट ने स्कॉटिश कल्चर की झलक दिखाई। मशहूर बैंड एलीफेंट सेशंस ने म्यूजिक, फंक, रॉक और इलेक्ट्रॉनिक डांस के जरिए मिक्स्ड परफॉर्मेंस में स्कॉटलैंड की डायवर्सिटी दिखाई। पैरा एथलीट मेलानी वुड्स को डेविड डिक्सन अवार्ड दिया गया। उन्हें यह अवॉर्ड गेम्स के आसाधारण प्रदर्शन और खेल भावना के लिए दिया गया। वुड्स ने महिलाओं टी54 1500 मीटर रेस जीत ली थी, लेकिन रनर्स के क्रैश होने के कारण उन्होंने रेस फिर से कराने की मांग की और दोबारा रिकॉर्ड टाइम के साथ गोल्ड जीता। 2030 में गेम्स के 100 साल पूरे होंगे-2030 में कॉमनवेल्थ गेम्स अपने 100 साल पूरे करेगा। पहला एडिशन 1930 में कनाडा के हैमिल्टन शहर में हुआ था। भारत दूसरी बार गेम्स की मेजबानी करेगा। इससे पहले भारत ने 2010 में गेम्स की मेजबानी की थी। तब सारे इवेंट दिल्ली में हुए थे। ऑस्ट्रेलिया ने सबसे ज्यादा 5 बार गेम्स की मेजबानी की है। कनाडा और स्कॉटलैंड में 4 बार टूर्नामेंट खेला गया।

देश में युवाओं का बढ़ता आक्रोश हमें कुछ बताता है

आज सब तरफ कॉकरोच शब्द की चर्चा है। किन्तु इसके हमारे राजनीतिक शब्दकोश का हिस्सा बनने से बहुत पहले ही मैं इस शब्द का उपयोग करता आ रहा हूं। ईश्वर न करे, लेकिन कल किसी परमाणु विस्फोट में

दुनिया नष्ट हो जाए, तब भी केवल कॉकरोच ही जीवित बचेंगे। एक ग्रेट-सर्वाइवर से राजनीतिक प्रतिरोध के प्रतीक तक, कॉकरोचों ने एक लंबी यात्रा तय की है। कॉकरोच जनता पार्टी या सीजेपी का उदय उस व्यवस्था के प्रति बढ़ते जनाक्रोश को दर्शाता है, जो इतनी खण्डित हो चुकी है कि प्रदर्शनकारियों को लोकतंत्र पर मंडराते खतरों की ओर संकेत करने के लिए एक कीड़े की छवि का सहारा लेना पड़ा है। हम ऐसे समय में जी रहे हैं, जिसमें नेतागण सम्राटों की तरह व्यवहार करने लगे हैं और विपक्ष कोई विश्वसनीय चुनौती पेश नहीं कर पा रहा है। इसी शून्य में कॉकरोच रेंगता हुआ प्रवेश करता है- एक ऐसा प्राणी, जिससे हमें घृणा करना और डरना सिखाया गया है, फिर भी जो हर तरह की विपत्ति के बीच जीवित रहने की क्षमता रखता है। यह तथ्य कि एक अपेक्षाकृत अनजान पोलिटिकल कम्युनिकेशन स्ट्रैटेजिस्ट द्वारा किसी अमेरिकी विश्वविद्यालय में बैठकर शुरू किया गया एक व्यंग्यात्मक आंदोलन अचानक सत्ता गलियारों में बेचैनी पैदा कर दे, अपने आप में बहुत कुछ बताता है। आखिर एक शक्तिशाली राष्ट्र को मुख्य न्यायाधीश की गैर-जरूरी टिप्पणी से उपजे ऑनलाइन-आंदोलन से चिंतित क्यों होना चाहिए? भारत के बेरोजगार युवाओं का मानो उपहास करते हुए मुख्य न्यायाधीश ने अनजाने में एक तीखी प्रतिक्रिया को जन्म दे दिया : क्रोध, अलगाव और व्यंग्य से संचालित एक डिजिटल विद्रोह। तब से लाखों युवा भारतीय इसके इर्द-गिर्द एकजुट हो चुके हैं। इस पूरी घटना को विशेष रूप से दिलचस्प बनाने वाली बात यह है कि सीजेपी वास्तव में कोई राजनीतिक दल नहीं है। उसका न कोई नेता है, न कार्यालय, न कार्यकर्ता-तंत्र, न कोई संगठनात्मक ढांचा। 1.5 अरब की आबादी और असाधारण विविधता वाले इस देश में केवल साइबर-स्पेस में मौजूद एक आंदोलन को सिद्धांततः यथास्थिति के लिए खतरा नहीं होना चाहिए। फिर भी खतरा क्यों महसूस किया जा रहा है? सीजेपी पर विदेशी फंडिंग से संचालित होने का आरोप लगाया जा रहा है। झूठा दावा किया जा रहा है कि उसके अनेक समर्थक पाकिस्तानी हैं। उसके सोशल मीडिया हैंडल्स को ब्लॉक किया जा रहा है। कुछ लोगों ने तो उसे आम आदमी पार्टी का प्रॉक्सी सिद्ध करने की भी कोशिश की। यह सब एक प्रकार की संशयग्रस्त मानसिकता को उजागर करता है। इस घबराहट के पीछे कई कारण हैं। अव्वल तो यही कि यह काफी हद तक नैरेटिव को कंट्रोल करने का दौर है। इस दौर का राजकाज चौबीसों घंटे चलने वाले किसी विज्ञापन-अभियान जैसा प्रतीत होता है : उपलब्धियों का प्रचार करो, विफलताओं को दबा दो, नारे बदलो और आगे बढ़ जाओ। करोड़ों नौकरियां जिनका वादा किया गया था नहीं मिलीं, किसानों की आय दोगुनी नहीं हुई, पेपर लीक लगातार जारी है- लेकिन नैरेटिव-प्रबंधन यह सुनिश्चित करता है कि आम धारणा, प्रदर्शन पर भारी पड़े। ऐसे में यह चीज परेशान करने वाली लग सकती है कि इंटरनेट के ये कॉकरोच किसी लिखी हुई पटकथा का पालन करने से इंकार कर रहे हैं। दूसरे, युवाओं का आक्रोश चुनावी दृष्टि से महत्व रखता है। ऊंची जीडीपी वृद्धि के आंकड़ों और उग्र राष्ट्रवाद के शोर के पीछे एक ऐसी पीढ़ी मौजूद है, जो गहरी असुरक्षा से जूझ रही है। लाखों शिक्षित युवा रोजगार के घटते अवसरों, परीक्षाओं के बढ़ते दबावों और ऐसी अर्थव्यवस्था का सामना कर रहे हैं, जहां स्थायी नौकरी पाना लगातार दूर की कौड़ी बनता जा रहा है। बहुतों के लिए यह निराशा अब चिरस्थायी हो चुकी है। उन्हें लगता है कि राजनेता उन्हें केवल चुनावों के समय ही देखते हैं और केवल तभी सुनते हैं, जब वे विरोध-प्रदर्शन करते हैं। यह आक्रोश केवल वैचारिक ही नहीं है, यह कई मायनों में व्यक्तिगत भी है।

यह हालिया चुनावों में भी स्पष्ट दिखाई दिया, विशेषकर तमिलनाडु में, जहां विजय की लोकप्रियता ने पारम्परिक राजनीति से तंग आ चुके युवा मतदाताओं को बड़े पैमाने पर आकर्षित किया।

पूरे भारत में युवा मतदाता अब पुराने और जड़ राजनीतिक विचारों को लगातार अस्वीकार कर रहे हैं। वे ताजगी, प्रामाणिकता और भावनात्मक जुड़ाव की तलाश में हैं। मीम-संस्कृति उनके प्रतिरोध की भाषा बन चुकी है।

और याद रहे कि व्यंग्य हमेशा राजनीतिक हथियार साबित होता है। अधिनायकवादी व्यवस्थाएं हास्य-व्यंग्य के सामने खुद को आश्चर्यजनक रूप से असुरक्षित ही पाती हैं।

पूरे भारत में ही युवा मतदाता अब पुराने और जड़ राजनीतिक विचारों को लगातार अस्वीकार कर रहे हैं। वे ताजगी, प्रामाणिकता और भावनात्मक जुड़ाव की तलाश में हैं। मीम-संस्कृति उनके प्रतिरोध की भाषा बनती जा रही है। (ये लेखक के अपने विचार हैं,राजदीप सरदेसाई)

मौन की राह- साइलेंट रिट्रीट से बदली जिंदगी मिला सुकून,दो दशक की थेरेपी जहां रही नाकाम, साइलेंट रिट्रीट के मौन ने संवारी बिखरी जिंदगी

न्यूयॉर्क। भागदौड़ भरी आधुनिक जिंदगी में हम लगातार बोल रहे हैं, लिख रहे हैं, स्क्रीन स्क्रॉल कर रहे हैं और संवाद के शोर में घिरे हुए हैं। शादी, बच्चे, करिअर में सफलता...सब कुछ हासिल करने के बाद भी मन में

अजीब सा असंतोष और खालीपन बना रहता है। चर्चित अमेरिकी लेखक बोरिस फिशमैन ऐसी ही स्थिति से गुजर रहे थे। जब लगा कि दो दशकों की थेरेपी और लगातार बातचीत भी उनके जीवन को नहीं सुधार पा रही है, तो उन्होंने एक अनोखा 'मौन' का रास्ता चुना। ये मौका मिला उन्हें जॉर्जिया के एक साइलेंट रिट्रीट में... इसके बाद जिंदगी किस तरह बदली, जानिए फिशमैन से-'मेरी तीस की उम्र उपलब्धियों से भरी दिखती थी। शादी, बच्चे, दो चर्चित किताबें और यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर की नौकरी, सब कुछ था। लेकिन भीतर गहरा असंतोष था। पत्नी से रिश्ता तनावपूर्ण था, माता-पिता बनने की खुशी जिम्मेदारियों में दब गई थी, किताबों को सराहना मिली, पर पाठक नहीं। नौकरी के कारण परिवार से 2400 किमी दूर था...पूरी तरह हताश। वर्षों की थेरेपी और बातचीत कोई समाधान नहीं दे सकी। शब्दों ने मुझे सफलता तो दिलाई, पर भीतर खालीपन बढ़ता गया। सोशल मीडिया और लगातार शोर ने इस बेचैनी को और गहरा कर दिया था। एक परिचित ने मुझे 'साइलेंट रिट्रीट' के बारे में बताया। यह साधारण ईसाई मौन आश्रम था। न कोई विलासिता, न वाई-फाई। मैं ईसाई नहीं था, पर बिखरी हुई जिंदगी से इतना थक चुका था कि वहां जाने का फैसला ले लिया। आश्रम खेतों के बीच बसा सादा मठ था। मुझे छोटी कुटिया मिली, जिसमें जरूरी सुविधाएं थीं। फोन-लैपटॉप जमा कराने के बाद मेरे पास करने के लिए सचमुच कुछ भी नहीं बचा था। जब मैंने बोलना बंद किया, तो पहली बार प्रकृति की आवाजें सुनाई देने लगीं। मैं नंगे पैर खेतों में घूमता, पक्षियों की चहचहाहट सुनता और पेड़ों की खुरदरी छाल महसूस करता। वर्षों बाद समझ आया कि 'वर्तमान में जीना' सिर्फ विचार नहीं, बल्कि अनुभव है। यहां तक कि पुरानी गाड़ी के स्टेयरिंग व्हील को देखना भी असाधारण रूप से वास्तविक और अर्थपूर्ण लगा। मौन के उस विस्तृत एकांत में, जब फोन का शोर और शब्दों की अनवरत दौड़ थम गई, मन की धुंध छंटने लगी। तभी महसूस हुआ कि जिंदगी सबसे गहरा उद्देश्य प्रेम है और उसे प्रियजनों तक पहुंचाना ही सबसे बड़ी जिम्मेदारी। रिट्रीट से लौटने के बाद मेरी दुनिया तुरंत नहीं बदली।

अगली किताब भी सफल नहीं हुई और पारिवारिक समस्याएं भी बनी रहीं। हाल में जब दोबारा वहां गया, तो जीवन का गहरा सच समझ आया। मठ के एक वरिष्ठ ने कहा, 'यहां आने वाले लोग मशहूर होने की दौड़ में नहीं हैं, लेकिन वे अच्छे इंसान हैं।

' तब एहसास हुआ कि मैं हर जगह फिट होने और दूसरों को प्रभावित करने की कोशिश में खुद को खो रहा था। मौन ने सिखाया कि किसी विशेष व्यक्ति बनने के दबाव से मुक्त होना ही सच्ची आजादी है। आज मैं अधिक शांत हूं, क्योंकि मौन ने मुझे मेरी असली पहचान से मिलवा दिया।' -बोरिस

क्या आप कामकाजी महिलाओं के दोहरे बोझ को कम करने के बारे में सोच रहे हैं?

शुक्रवार को अधिकांश अंतरराष्ट्रीय अखबारों के पहले पन्ने पर शीर्ष वरीयता प्राप्त जानिक सिनर की तस्वीर छपी

थी, जिन्हें फ्रेंच ओपन जीतने का प्रबल दावेदार माना जा रहा था। लेकिन इसकी वजह यह नहीं थी कि उन्होंने पिछले दिन कोई मैच जीता था, बल्कि यह थी कि वे विश्व रैंकिंग में 56वें स्थान पर मौजूद हुआन मानुएल सीरुन्दोलो से हार गए थे। अधिकांश अखबारों ने उनकी हार का कारण यह बताया कि 'झुलसा देने वाली धूप ने फिलिप-शात्रिये कोर्ट को एक विशाल बैंगेट ओवन में बदल दिया था और सिनर की हालत इतनी बिगड़ गई कि उन्हें पहचानना तक मुश्किल हो गया था।' मैच के बाद सिनर ने कहा, 'मुझे याद नहीं आखिरी बार मैं कब इतना कमजोर महसूस कर रहा था। मैं पूरी तरह थक चुका था- मेरा पूरा शरीर जवाब दे रहा था।' अधिकांश समाचार पत्रों और खेल पत्रकारों ने उनकी हार के लिए भीषण गर्मी को ही जिम्मेदार ठहराया। वास्तव में दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी तीसरे सेट में जीत से केवल एक गेम दूर थे, और ठीक उसी समय गर्मी ने उनकी सारी ऊर्जा सोख ली। इसे पढ़ते ही मुझे कुछ विश्वविद्यालय प्राध्यापिकाओं और स्कूल शिक्षिकाओं की याद आ गई, जो बताती रहती हैं कि दिनभर का पेशेवर काम पूरा करने के बाद जब वे अपनी 'सेकंड शिफ्ट' करने घर लौटती हैं, तो गर्मी और थकान उनकी सारी ऊर्जा चूस लेती है। यह ऐसा काम है, जिसमें कोई छुट्टी नहीं मिलती। उनका कहना था कि वे प्रतिदिन इस दबाव के नीचे निढाल हो जाती हैं और उनकी थकान को समझने या बांटने वाला कोई नहीं होता। और वे बिल्कुल सही थीं। अनेक कंजर्वेटिव या पारंपरिक परिवार गर्व के साथ कामकाजी बहू को स्वीकार तो कर लेते हैं, परंतु इसका प्रमुख कारण अकसर उससे मिलने वाला आर्थिक लाभ या सामाजिक प्रतिष्ठा होता है। लेकिन यह स्वीकृति प्रायः शर्तों के साथ आती है। मूल धारणा यही बनी रहती है कि उसके जॉब को पारंपरिक घरेलू बुनावट या परिवार की सुविधाओं में किसी प्रकार का व्यवधान नहीं डालना चाहिए। समाज और मीडिया द्वारा गढ़े गए सुपरवुमन के मिथक ने आदर्श भारतीय महिला का एक अवास्तविक मानक स्थापित कर दिया है, जो मानो बिना किसी कठिनाई के सब कुछ हासिल कर सकती है। यदि वे सहायता मांगें, घरेलू कामकाज को किसी और से साझा करने का प्रयास करें या अपनी थकान जाहिर करें, तो इसे अकसर उनकी नाकामी या परिवार के प्रति समर्पण की कमी के रूप में देखा जाता है। जिस प्रकार कोई विश्व नंबर एक खिलाड़ी भीषण गर्मी में हमेशा जीत नहीं सकता, उसी प्रकार इन युवा महिलाओं से यह अपेक्षा करना भी अवास्तविक है कि वे एक आधुनिक पेशेवर की तरह कमाएं भी और एक पारंपरिक गृहणी की तरह सेवा भी करें। जब ये कामकाजी महिलाएं रसोइयों, सफाईकर्मियों या आया जैसी घरेलू सहायिकाओं को नियुक्त करके अपनी समय की कमी की समस्या का समाधान करने का प्रयास करती हैं, तो उन्हें अकसर प्रतिरोध या आलोचनात्मक निगरानी का सामना करना पड़ता है। परिवार के सदस्य बाहर के सहायकों द्वारा किए गए कार्य की गुणवत्ता पर सवाल उठा सकते हैं, उसमें अत्यधिक हस्तक्षेप कर सकते हैं, या फिर सूक्ष्म रूप से कामकाजी महिलाओं को यह संकेत देकर उनमें अपराध-बोध पैदा कर सकते हैं कि उनके कारण परिवार उपेक्षित हो रहा है या परायों के हाथ का खाना खा रहा है। दूसरी ओर- विशेषकर उभरते हुए शहरों की टाउनशिप में रहने वाले कुछ वरिष्ठ सदस्य- जो कठोर जेंडर भूमिकाओं वाले युग में बड़े हुए हैं, अकसर उन्हीं पैटर्न्स को आगे बढ़ाते हैं, जिन्हें उन्होंने स्वयं झेला था। यदि सास ने अपने समय में पूरा घर अकेले संभाला था, तो ऐसे परिवारों में नई बहुओं द्वारा काम के बंटवारे की मांग को कभी-कभी अधिकार-बोध या आलस्य के रूप में देखा जाता है। इसके अलावा, परिवार की शक्ति-संरचनाएं भी किसी नई दुल्हन के लिए घरेलू कामकाज की जिम्मेदारियों को सम्भालना बहुत मुश्किल बना देती हैं। जब किसी व्यक्ति से पर्याप्त आराम या सहयोग के बिना दो फुल-टाइम भूमिकाओं में लगातार बेहतरीन प्रदर्शन की अपेक्षा की जाती है, तो उसका परिणाम मानसिक और भावनात्मक थकान के रूप में सामने आता है। ऐसी महिलाएं एक निरंतर 'ऑलवेज़-ऑन' वाली अवस्था में जीती हैं, जहां उन्हें सही मायनों में आराम करने का बहुत कम अवसर मिलता है। उनका मन लगातार एक मानसिक चेकलिस्ट का प्रबंधन करता रहता है- ऑफिस की डेडलाइंस के साथ-साथ घर की जरूरतों- जैसे किराने का सामान, बच्चों की देखभाल और भोजन की योजना। धीरे-धीरे यह स्थिति एक टाइम-डिसीज़ का रूप ले लेती है, जो वस्तुतः इस मनोवैज्ञानिक अनुभूति को दर्शाती है कि समय कभी भी काफी नहीं होता।इसका परिणाम लगातार भाग-दौड़, अत्यधिक सतर्कता और अवकाश के क्षणों में भी आराम न कर पाने के रूप में सामने आता है। कामकाजी महिलाओं पर पड़ने वाले इस दोहरे बोझ को कम करने के लिए घरेलू स्तर पर तत्काल बदलाव, जीवनसाथी का सहयोग और परिवारों के कम्युनिकेट करने के तरीके में परिवर्तन- इन तीनों की आवश्यकता है। फंडा यह है कि जिस प्रकार खेल जगत अपने किसी चैंपियन के पीछे मजबूती से खड़ा होता है, उसी प्रकार हमें भी अपनी बहुओं के पीछे खड़ा होना चाहिए- क्योंकि वे भी हमारी बेटियां ही हैं। एन. रघुरामन

लड़कियों को पूछना होगा, मेरा विवाह कैसे परिवार में हो रहा है

सत्ता का सबसे खतरनाक दुरुपयोग तब नहीं होता जब अपराधी व्यवस्था का फायदा उठाते हैं, बल्कि तब होता है जब व्यवस्था से जुड़े लोग यह सीख जाते हैं कि सिस्टम को कैसे

अपने पक्ष में इस्तेमाल किया जा सकता है। यही बात आम महिलाओं के लिए त्विशा शर्मा जैसे मामलों को इतना बेचैन करने वाला बना देती है। अब यह महज एक केस, एक परिवार या अदालत की लड़ाई मात्र नहीं रह गया। यह बड़ी और असहज कर देने वाली इस सार्वजनिक बहस का हिस्सा बन गया है कि जो लोग लीगल सिस्टम को बहुत अच्छे-से जानते हैं, क्या वे ही कभी-कभार इसे हथियार के तौर पर इस्तेमाल भी कर सकते हैं? भारत ने महिलाओं के लिए मजबूत कानूनी सुरक्षा के लिए दशकों तक जंग लड़ी है और ये सुरक्षा जरूरी भी थी। पीढ़ियों तक महिलाओं को चुप कराया गया, नजरअंदाज किया गया, भ्रमित किया गया, आर्थिक बंदिशों में रखा गया और सामाजिक तौर पर शर्मिंदा किया गया। लेकिन इसी दौरान कहीं न कहीं एक दूसरा डर भी धीरे-धीरे जनमानस में घर कर गया- वो यह कि कानून-व्यवस्था भी महिलाओं पर दबाव बनाने, उन्हें डराने, नैरेटिव को नियंत्रित करने और उनकी प्रतिष्ठा धूमिल करने का औजार बन सकती है। त्विशा शर्मा केस हमें ऐसे कठिन सवालों का सामना करने को बाध्य करता है। क्या होता है जब गिरिबाला सिंह और समर्थ सिंह जैसे आरोपी कानून से अनजान सामान्य व्यक्ति नहीं होते, बल्कि कनेक्टेड, कानून की गहरी समझ या संस्थागत नेटवर्क रखने वाले लोग होते हैं? क्या होता है जब अग्रिम जमानत जल्दी मंजूर हो जाती है, नैरेटिव तेजी से फैलने लगते हैं और लड़ाई अदालत से निकलकर सामाजिक दबाव, कानाफूसी, सिलेक्टिव लीक्स, सबूतों से छेड़छाड़ और सार्वजनिक चरित्र-हनन तक पहुंचती दिखती है?मुद्दा यह नहीं है कि किसी को कानूनन अपना बचाव करने का अधिकार है या नहीं। असल सवाल है कि क्या लीगली-कनेक्टेड आरोपी अग्रिम जमानत पा लेता है। या फिर जब कोई कथित तौर पर अपनी कानूनी जानकारी और पहुंच का इस्तेमाल कर व्यवस्थित तरीके से प्रतिष्ठा नष्ट करने का प्रयास करता है। जो लोग कानून की खामी, देरी, सुरक्षा और उसकी चुप्पी का बखूबी फायदा उठाना

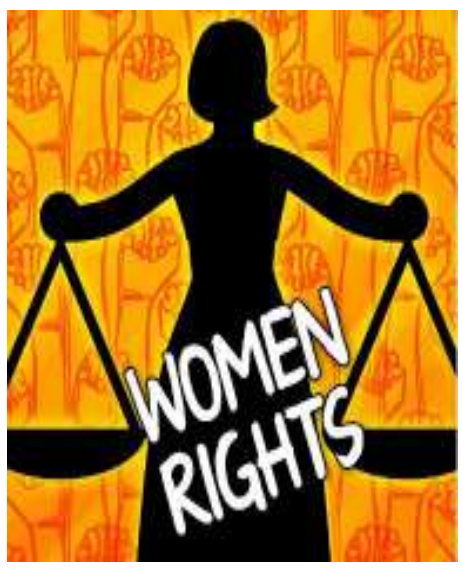

प्रभाव, व्यवस्था की जानकारी और प्रक्रियागत बढ़त उन महिलाओं के लिए भयावह असंतुलन पैदा कर सकता है, जो पहले ही ट्रॉमा, डर, सामाजिक कलंक और भावनात्मक थकान से जूझ रही हैं। मैं यह महज एक टिप्पणीकार के तौर पर नहीं लिख रही हूं, बल्कि मैं खुद भी ऐसी ही परेशानी भरी स्थिति से गुजर चुकी हूं। मैंने महसूस किया है कि कैसा लगता है जब कोई जानते हैं, वही जब इसे हथियार बनाते हैं तो आपको समझ आता है कि लड़ाई कितनी असमानता भरी हो सकती है। ज्यादातर महिलाओं के लिए अदालतों का माहौल पहले ही डराने वाला होता है। उस पर ताकतवर लोगों का नेटवर्क, प्रभाव, सामाजिक हैसियत, कानून की जानकारी और नैरेटिव-मैनिपुलेशन भी मिल जाए तो पूरी प्रक्रिया ही सजा जैसी प्रतीत होती है। सजा सिर्फ कानूनी नहीं रह जाती, बल्कि कोई बड़ा उल्लंघन नहीं दिखता, लेकिन पैटर्न जरूर नजर आते हैं- सोचा-समझा विलम्ब, प्रतिष्ठा को लेकर कानाफूसी, प्रक्रियाओं के माध्यम से डराना, हताश करना और प्रभाव का इस्तेमाल करना। धीरे-धीरे महिला को लगता है कि वह महज अपनी पैरवी नहीं कर रही, अपनी मानसिक स्थिति, विश्वसनीयता, मातृत्व, चरित्र, अपने अस्तित्व तक को बचा रही है। त्विशा शर्मा का मामला इसीलिए मायने रखता है, क्योंकि यह देश में बढ़ती एक चिंता को सामने लाता है। यह चिंता अपराध या आरोपों को लेकर नहीं, बल्कि कानून के सामने असमानता को लेकर भी है।इस प्रकरण का सबसे त्रासद पहलू यह है कि आज की युवा महिलाएं अब केवल अपने होने वाले पति के बारे में यही नहीं पूछतीं कि क्या वह एक अच्छा इंसान है? इसके साथ वे यह भी पूछ रही हैं मैं किस प्रकार के परिवार में विवाह करने जा रही हूं? क्या वहां मेरी सुरक्षा होगी? और यदि कुछ गलत हो गया, तो समाज आखिर किस पर विश्वास करेगा? जिन लोगों के पास कानून का ज्ञान और संस्थागत पहुंच है, उनकी जिम्मेदारी और अधिक होती है। अगर लोगों को यह लगने लगे कि सिस्टम प्रभावशाली लोगों से अलग और आमजन से अलग तरह का व्यवहार करता है तो उसी पल न्याय पर भरोसा कमजोर होने लगता है। (ये लेखिका के अपने विचार हैं)मेघना पंत।

समुद्र में तेल-गैस ढूंढने में खर्च होंगे 84 हजार करोड़, क्या है सरकार की 'समुद्र मंथन' स्कीम

नयी दिल्ली। 15 अगस्त 2025 को पीएम नरेंद्र मोदी ने लाल किले से कहा था- 'देश को विकसित बनाने के लिए अब हम समुद्र मंथन की तरफ बढ़ रहे हैं। गहरे पानी के अंदर तेल और गैस के भंडार ढूंढने के लिए हम मिशन मोड में काम करना चाहते हैं।' अब सरकार ने 84 हजार करोड़ रुपए की लागत से 'समुद्र मंथन' स्कीम को मंजूरी दे दी है। सरकार की 'समुद्र मंथन' स्कीम क्या है? जवाबः 31 जुलाई को केंद्रीय कैबिनेट ने पीएम मोदी की अध्यक्षता में पेट्रोलियम मिनिस्ट्री की 'समुद्र-मंथन' स्कीम को मंजूरी दी है। इसकी कुछ जरूरी बातें जान लीजिए-ये देश का अब तक का सबसे बड़ा नेशनल ऑफशोर एक्सप्लोरेशन प्रोजेक्ट, यानी समुद्र और गहरे पानी के इलाकों में कच्चे तेल और गैस ढूंढने की योजना है। भारत के तट से लगे करीब 10 लाख वर्ग किमी के एक्सक्लूसिव इकॉनोमिक जोन, यानी ईईजेड में ये एक्सप्लोरेशन हो सकेगा। किसी देश की समुद्री सीमा के बाहर उसके ईईजेड में व्यापार वगैरह का अधिकार सिर्फ उसी देश को होता है। भारत में कृष्णा-गोदावरी, कावेरी, महानदी जैसी नदियों और अंडमान के गहरे पानी वाले समुद्री इलाकों में नैचुरल गैस और तेल के भंडार मौजूद हैं। इन इलाकों में तेल-गैस ढूंढने से लेकर प्रोडक्शन शुरू होने तक करीब 5 से 10 साल का समय लगेगा। तेल का एक कुआं खोदने की लागत करीब 125 से 150 मिलियन डॉलर यानी 1,192 से 1,431 करोड़ रुपए तक है। मार्च 2031 तक प्रोजेक्ट के पहले फेज में 84,084 करोड़ रुपए खर्च होंगे। इसमें 28.5 हजार करोड़ रुपए भूकंपीय डेटा जुटाने में खर्च होंगे और 43.2 हजार करोड़ रुपए से गहरे पानी में 60 कुएं खोदे जाएंगे। इसमें प्रति कुएं सरकार 675 करोड़ रुपए या लागत का 50फीसदी देगी। बाकी खर्च सरकार के साथ मिलकर इस प्रोजेक्ट पर काम करने वाली कंपनी उठाएगी। सरकार का कहना है कि देश पहले से मौजूद तेल और गैस के कुओं से उत्पादन में हर साल 6फीसदी से 7फीसदी की गिरावट आ रही है। इसलिए घरेलू प्रोडक्शन बनाए रखने के लिए लगातार नए कुएं तलाशना जरूरी है। समुद्र में तेल ढूंढकर निकालने की पूरी प्रोसेस क्या है? जवाबः कच्चा तेल और गैस समुद्र और नदियों के गहरे पानी के नीचे की चट्टानों में मिलता है। जब करोड़ों सालों तक मृत समुद्री जीवों, पेड़-पौधों वगैरह समुद्र की तलहटी में चट्टानों के नीचे दबे रहते हैं, तो इनसे हाइड्रोकार्बन बनते हैं। इन्हीं से कच्चा तेल और गैस बनती है, जिसे रिफाइनिंग कंपनियां बाद में पेट्रोल, डीजल और गैस वगैरह बनाती हैं। गहरे पानी के नीचे तेल और गैस ढूंढकर प्रोडक्शन करने की प्रोसेस के 4 स्टेप हैं- स्टेप 1: सर्वे जहाजों से तेल की खोजबीन- पहले फेज में सीस्मिक सर्वे, यानी भूकंपीय खोजबीन वाले जहाज काम आते हैं। ये लंबी-लंबी केबल के जरिए पानी में एयर-गन एरे सिस्टम, यानी हवा वाली मशीनें डालकर उन्हें खींचा जाता हैं। ये मशीनें पानी के अंदर तेज आवाज वाली साउंड वेव पैदा करती हैं। ये साउंड समुद्र की चट्टानों से टकराकर वापस लौटती हैं। एरे केबल में लगे हाइड्रोफोन इन वेव को रिकॉर्ड करते हैं। इसे समुद्र के भूगर्भ का 'अल्ट्रासाउंड' मान लीजिए। इससे भूगर्भ का 3डी नक्शा बनता है, जिससे पता चलता है कि कहां-कहां हाइड्रोकार्बन फंसे हो सकते हैं। स्टेप 2: खोजबीन वाले कुएं की ड्रिलिंग-सर्वे में तेल, गैस की मौजूदगी के संकेत मिले, तो फिर 'एक्सप्लोरेशन वेल', यानी खोजबीन के लिए कुआं खोदा जाता है। इसके लिए कई तरह के जहाज या मशीनें इस्तेमाल होते हैं। जैसे- सेमी-सबमर्सिबल रिग, ड्रिल शिप, जैक-अप वगैरह। इन्हें मोबाइल ऑफशोर ड्रिलिंग यूनिट्स कहते हैं। सेमी-सबमर्सिबल रिग पानी में डूबे हुए पैंटून पर तैरते हैं। वहीं ड्रिलिंग मशीनें ड्रिल शिपों में लगी होती हैं। 'राइजर' नाम की एक बड़ी पाइप के जरिए चट्टानों के अंदर से तरल पदार्थ इकट्ठा किया जाता है। इस सैम्पल की जांच करके

तेल और गैस वगैरह की मौजूदगी जांची जाती है। कुएं के मुंह पर एक ब्लोआउट प्रिवेंटर लगाया जाता है, ताकि चट्टान में हुए छेद से अगर तेजी से गैस या तेल का रिसाव हो, तो उस छेद को सील किया जा सके।कुएं की ड्रिलिंग सबसे महंगा और जोखिम भरा काम होता है। इसमें महीने से लेकर सालों का समय लग सकता है। स्टेप 3: तेल की क्वालिटी-क्वांटिटी की एनालिसिस-एक्सप्लोरेशन वेल से ये नहीं पता लगता कि तेल वगैरह का कुल रिजर्व कितना है और उसकी क्वालिटी कैसी है। इसलिए उस इलाके में अलग-अलग जगह कई और 'अप्रेजल वेल', यानी मूल्यांकन के कुएं खोदे जाते हैं। इंजीनियर रिजर्व के दबाव और गहराई वगैरह का एनालिसिस करके तय करते हैं कि यहां से तेल निकालना फायदे का सौदा होगा या नहीं। इसी आधार पर प्रोडक्शन वेल यानी तेल, गैस वगैरह निकालने के कुओं की संख्या और उनकी सटीक जगह तय होती है। स्टेप:4: प्लेटफॉर्म बनाकर तेल-गैस का प्रोडक्शन-अगर रिजर्व पर्याप्त है, तो फिर प्रोडक्शन प्लेटफॉर्म बनाया जाता है। ये फिक्स्ड हो सकता है या फिर तैरता हुआ। अक्सर इसे तट के आसपास बनाते हैं और इसे कुएं से जोड़ा जाता है। पाइपों के जरिए ड्रिल बिट चट्टान को भेदकर रिजर्व तक पहुंचता है। फिर कुएं में स्टील का घेरा, यानी केसिंग बनाकर उसे मजबूत किया जाता है। फिर प्रोडक्शन ट्यूब लगाकर कुएं से तेल निकालना शुरू होता है। प्लेटफॉर्म पर तेल-गैस और पानी को अलग करके मोटी पाइपलाइन के जरिए तट तक पहुंचाया जाता है। सवाल-3: अभी भारत अपने कुओं से कितना तेल-गैस पैदा करता है? जवाबः भारत पूरी दुनिया में कच्चे तेल का तीसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता है-सरकार के मुताबिक, भारत अपनी जरूरत का 88फीसदी कच्चा तेल विदेश से खरीदता है। इसके लिए सालाना 144 बिलियन डॉलर, यानी करीब 13 लाख करोड़ रुपए खर्च होते हैं। जरूरत का सिर्फ 12फीसदी तेल भारत खुद प्रोड्यूस कर पाता है। इसमें से 47फीसदी प्रोडक्शन ऑनशोर, यानी जमीन और 53फीसदी ऑफशोर, यानी समुद्र में बने तेल के कुओं से होता है।पेट्रोलियम प्लानिंग एंड एनालिसिस सेल, पीपीएसी के मुताबिक, 2025-26 में भारत ने कुल 28 मिलियन मीट्रिक टन, एमएमटी कच्चे तेल का प्रोडक्शन किया। जबकि भारत की कुल खपत करीब 242 एमएमटी है। वहीं भारत अपनी जरूरत की करीब 50फीसदी गैस खुद बनाता है। 2023-24 में देश का कुल नैचुरल गैस प्रोडक्शन करीब 36 हजार एमएमएससीएम था। एमएमएससीएम, यानी मिलियन मीट्रिक स्टैंडर्ड क्यूबिक मीटर नैचुरल गैस की मात्रा मापने की एक यूनिट है। भारत में जमीन और समुद्री इलाकों में 26 ऐसे इलाके हैं, जहां तेल और गैस के भंडार हैं। इनमें सैकड़ों तेल के कुएं बने हैं। पश्चिमी तटों पर मुंबई हाई, सबसे बड़ा तेल के कुएं का इलाका है। आंध्र प्रदेश तट पर कृष्णा-गोदावरी नदी का बेसिन, ओडिशा-पश्चिम बंगाल का महानदी बेसिन और अंडमान सागर में अंडमान बेसिन ऑफशोर इलाके हैं, जहां समुद्र में तेल या गैस की मौजूदगी है। इसके अलावा असम, गुजरात, राजस्थान और तमिलनाडु तट पर कावेरी बेसिन में ऑनशोर यानी जमीनी कुएं हैं। मुंबई हाई ऑयल-फील्ड से 1976 से तेल का प्रोडक्शन हो रहा है। मुंबई हाई ऑयल-फील्ड से 1976 से तेल का प्रोडक्शन हो रहा है। सवाल-4: क्या 'समुद्र मंथन' से तेल-गैस की दिक्कत हल हो जाएगी? जवाबः 'समुद्र मंथन' से भारत की तेल-गैस की जरूरत रातो-रात या पूरी तरह पूरी नहीं हो जाएगी। क्रेडिट रेटिंग एजेंसी आईसीआरए के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट प्रशांत वशिष्ठ का कहना है कि इस प्रोजेक्ट से विदेशों से तेल और गैस की खरीद सिर्फ से 5फीसदी तक ही कम होगी।

यानी, उत्पादन बढ़ने के बावजूद विदेशों से ही मांग पूरी हो सकेगी, क्योंकि भारत में ऊर्जा खपत बढ़ रही है। हालांकि सरकार का कहना है कि 'समुद्र मंथन' स्कीम कामयाब हुई, तो भारत का सालाना घरेलू तेल-गैस प्रोडक्शन 62 एमएमटीओई से बढ़कर 80 एमएमटीओई हो जाएगा। देश में तेल और गैस के टोटल रिजर्व 6 करोड़ एमएमटीओई टन बढ़ जाएगा।

दरअसल, एमएमटीओई एनर्जी प्रोडक्शन मापने की एक यूनिट है। एक एमएमटीओई का मतलब होता है- 10 लाख मीट्रिक टन कच्चा तेल जलाने से निकालने वाली टोटल एनर्जी। सरकार का मानना है कि प्रोजेक्ट के सफल होने से भारत का कच्चे तेल का इम्पोर्ट बिल करीब 1 लाख करोड़ रुपए तक घटाया जा सकता है। हालांकि इसमें 5 से 10 साल तक का वक्त लग सकता है। अभी इसकी भी गारंटी नहीं है कि गहरे समुद्र में खोज से तेल या गैस मिल ही जाए।

उत्तराखंड में लैंडस्लाइड से हाईवे बंद,यूपी में सड़कों पर नाव चली, बिहार-झारखंड में बिजली गिरने से 10 मौतें

उत्तरकाशी। उत्तराखंड के उत्तरकाशी में लैंडस्लाइड के

कारण यमुनोत्री नेशनल हाईवे कई जगहों पर बंद हो गया है। इससे चलते यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। वहीं, रुद्रप्रयाग में लगातार बारिश के चलते कई इलाकों में लैंडस्लाइड का खतरा बढ़ गया है। छत्तीसगढ़ में लगातार बारिश से बिलासपुर-रतनपुर-पेंड्रा मार्ग पर पुल दो हिस्सों में टूट गया। इसी दौरान पुल से गुजर रही एक यात्री बस बीच में फंस गई। पहाड़ी इलाकों में हो रही भारी बारिश से उत्तर प्रदेश में गंगा, घाघरा और शारदा समेत 10 नदियां उफान पर हैं। बिजनौर में गंगा का पानी 6 गांवों में घुस गया है, जिससे सड़कों पर नाव चल रही हैं। वहीं, राजस्थान में लगातार हो रही बारिश के बीच जोधपुर के नागोरी सिलावटों इलाके में एक मकान की छत गिर गई। हादसे में 8 साल की अलसिफा की मौत हो गई, जबकि उसके पिता और दादी गंभीर रूप से घायल हो गए।कोलकाता के कई इलाकों में सोमवार को बारिश हो रही है। मौसम विभाग ने शहर में 6 अगस्त तक यलो अलर्ट जारी किया है। विभाग के मुताबिक, कल तक गरज-चमक के साथ बारिश का सिलसिला जारी रहने की संभावना है। बादल फटने का मतलब क्या? बादल फटना का मतलब यह नहीं है कि बादल सचमुच फट जाता है। यह एक मौसम संबंधी घटना है, जिसमें बहुत छोटे इलाके में बहुत कम समय में बेहद तेज बारिश होती है। भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) के मुताबिक, अगर 20-30 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में एक घंटे या उससे कम समय में 100 मिमी या उससे ज्यादा बारिश हो जाए, तो उसे बादल फटना कहा जाता है। ऐसा तब होता है, जब हवा में मौजूद नमी एक जगह इकट्ठी हो जाती है। खासकर पहाड़ी इलाकों में पहाड़ नमी से भरी हवाओं को आगे बढ़ने नहीं देते। नमी लगातार जमा होती रहती है और अचानक बहुत तेज बारिश के रूप में बरस जाती है।

पाकिस्तान में आत्मघाती हमला, 8 पुलिसकर्मियों समेत 19 की मौत,खैबर पख्तूनख्वा में युवक ने थाने में जाकर किया ब्लास्ट, 18 लोग घायल

पख्तूनख्वा। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के स्वात जिले में रविवार को एक पुलिस स्टेशन के बाहर आत्मघाती हमला हुआ। इसमें 8 पुलिसकर्मी समेत 19 लोगों की मौत हो गई, जबकि 18 लोग

गंभीर रूप से घायल हुए हैं। पाकिस्तानी मीडिया डॉन के मुताबिक, हमले के समय पास के काबल चौक पर आतंकवाद के खिलाफ शांति रैली चल रही थी। स्वात के जिला पुलिस अधिकारी उमर खान के ने बताया कि इसी दौरान एक युवक काबल पुलिस स्टेशन के गेट पर पहुंचा। पुलिस वालों ने उसे रोककर तलाशी लेने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं रुका। इससे पहले पुलिस हरकत में आती, युवक को खुद को ब्लास्ट कर दिया। फिलहाल किसी संगठन ने हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है। पुलिस हाई अलर्ट पर है। सुरक्षा बलों ने पूरे इलाके को सील कर सर्च ऑपरेशन शुरू कर दिया है। लोग आतंकवाद के खिलाफ रैली निकाल रहे थे-धमाके से पहले रविवार को कई लोग आतंकवाद के खिलाफ शांति रैली निकाल जा रहे थे। इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने स्वात में बढ़ रही आतंकवादी घटनाओं की निंदा की। डॉन के मुताबिक, प्रदर्शनकारियों ने कहा कि उनके आंदोलन का एक ही मकसद है, इलाके में शांति लौटाना और आतंकवाद का खात्मा करना। उन्होंने कहा कि यह सरकार की जिम्मेदारी है। अगर असुरक्षा का माहौल जारी रहा तो लोगों में बड़ा जनआक्रोश पैदा हो सकता है। प्रदर्शन में शामिल प्रदर्शनकारियों ने यह भी आरोप लगाया कि प्रशासन शांतिपूर्ण नागरिकों के खिलाफ कार्रवाई करता है, जबकि स्वात के पहाड़ी इलाकों में आतंकवादी खुलेआम सक्रिय हैं। पाक राष्ट्रपति जरदारी ने जांच के आदेश दिए- पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी ने धमाके में लोगों की मौत पर दुख जताया। राष्ट्रपति कार्यालय के मुताबिक, उन्होंने पूरे मामले की विस्तृत जांच कराने के निर्देश दिए। खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री ने धमाके की निंदा की- खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री सोहेल अफरीदी ने घटना की निंदा करते हुए पुलिस महानिरीक्षक से रिपोर्ट की मांग की है। उन्होंने मृतकों के परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए कहा-'शांति के दुश्मनों को उनके नापाक इरादों में कभी कामयाब नहीं होने दिया जाएगा।'वहीं, खैबर पख्तूनख्वा के गवर्नर फैसल करीम कुंडी ने भी धमाके की निंदा करते हुए मृतकों के प्रति शोक जताया। उन्होंने कहा, 'आतंकी कायराना हमलों से देश का मनोबल नहीं तोड़ सकते।' जुलाई में आतंकी हमलों में 154 मौतें हुईं-पाकिस्तान में आतंकवादी घटनाओं में बढ़ोतरी देखने को मिली है। पाकिस्तान इंस्टीट्यूट फॉर कॉन्फ्लिक्ट एंड सिक्योरिटी स्टडीज की मासिक सुरक्षा रिपोर्ट के मुताबिक, खैबर पख्तूनख्वा में आतंकवादी गतिविधियों में तेजी आई है।रिपोर्ट के अनुसार, जुलाई में कई जिलों में आतंकवाद से जुड़ी 154 मौतें दर्ज की गईं, जबकि जून में यह संख्या 75 थी। यानी एक महीने में 105 फीसदी की बढ़ोतरी हुई। ग्लोबल टेररिज्म इंडेक्स में पाकिस्तान दूसरे नंबर पर-ग्लोबल टेररिज्म इंडेक्स 2025 के मुताबिक बुर्किना फासो के बाद पाकिस्तान दुनिया का दूसरा सबसे आतंक प्रभावित देश बन चुका है, जबकि 2024 में यह चौथे स्थान पर था। 2025 में टीटीपी के हमलों में 90फीसदी की वृद्धि हुई है। वहीं बलूच आर्मी के हमलों में 60फीसदी बढ़ोतरी हुई। इस्लामिक स्टेट- खुरासान (आईएस-के) ने अब पाकिस्तानी शहरों को भी निशाना बनाना शुरू कर दिया है।रिपोर्ट के मुताबिक पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा और बलूचिस्तान सबसे ज्यादा आतंक प्रभावित इलाके हैं। देश भर की कुल आतंकी घटनाओं में से 90फीसदी इसी इलाके में हुईं। रिपोर्ट में तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान को लगातार दूसरे साल पाकिस्तान का सबसे खतरनाक आतंकवादी संगठन बताया गया। 2024 में इस ग्रुप ने 482 हमले किए, जिसकी वजह से 558 मौतें हुई थीं, जो 2023 के मुकाबले 91फीसदी ज्यादा हैं।

येन को 40 साल के निचले स्तर से उबारेगा अमेरिका,15 साल बाद जापानी येन खरीदा

ट्रम्प बोले- कमजोर मुद्रा को सहारा देना दुनिया के लिए बेहतर

वॉशिंगटन। जापान और अमेरिका ने हाल ही में बाजार में क्या और क्यों कदम उठाया है? जवाबः पिछले हफ्ते जापानी मुद्रा 'येन' डॉलर के मुकाबले 164 के स्तर पर पहुंच गई थी, जो पिछले 40 सालों का सबसे निचला स्तर है। इस तेज गिरावट को नियंत्रित करने के लिए जापान और अमेरिका ने मिलकर फॉरेन एक्सचेंज मार्केट में हस्तक्षेप किया। इस हस्तक्षेप का मुख्य उद्देश्य येन की अत्यधिक अस्थिरता को रोकना और करेंसी स्पेक्युलेटर्स को नियंत्रित करना था।यह पिछले 15 सालों में यानी साल 2011 के बाद पहला मौका है जब जापान और अमेरिका ने करेंसी मार्केट में एक साथ मिलकर कदम उठाया है। इससे पहले 2011 में पूर्वी जापान में आए भूकंप और सुनामी के बाद दोनों देशों ने येन को कमजोर करने के लिए समन्वित कार्रवाई की थी। इस बार उद्देश्य

येन को और अधिक गिरने से बचाना है। इस हस्तक्षेप में दोनों देशों ने कितनी रकम का इस्तेमाल किया है? उत्तरः बैंक ऑफ जापान के आंकड़ों के अनुसार, टोक्यो ने शुक्रवार के आधिकारिक संयुक्त हस्तक्षेप से ठीक पहले, गुरुवार को न्यूयॉर्क बाजार में येन खरीदने के लिए लगभग 59 अरब डॉलर बेचे थे। अमेरिका ने आधिकारिक तौर पर अपनी खरीदी की राशि का खुलासा नहीं किया है, लेकिन कैबिनेट बैठक के दौरान अमेरिकी ट्रेजरी सेक्रेटरी स्कॉट बेसेंट की नोटबुक की तस्वीर से संकेत मिला है, जिस पर लिखा थाः 'To Do: Buy Japanese Yen $5-10 bil' यानी 5 से 10 अरब डॉलर का येन खरीदना। : इस संयुक्त कार्रवाई पर अमेरिका और जापान के अधिकारियों का क्या कहना है? जवाबः जापान का वित्त मंत्रालयः इस संयुक्त कार्रवाई से हाल के महीनों में येन में आई अत्यधिक अस्थिरता और अनियंत्रित चाल को रोकने में सफल रहा है। अमेरिकी ट्रेजरी सेक्रेटरीः स्कॉट बेसेंट ने सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा कि इस समन्वित कार्रवाई ने येन की अनियंत्रित चाल को नियंत्रित किया है। अमेरिका, येन के भारी अवमूल्यन को ठीक करने के लिए जापान के मौद्रिक और बाजार कदमों का पुरजोर समर्थन करता है। अमेरिकी राष्ट्रपतिः रविवार को संवाददाताओं से बात करते हुए ट्रम्प ने कहा, 'जापानी मुद्रा कमजोर हो रही थी और वे थोड़ी मदद चाहते थे। हम जापान की मदद के लिए हमेशा तैयार हैं।' सवाल 4: अमेरिका को जापान की मदद करने से क्या फायदा है? जवाबः ऑक्सफोर्ड इकोनॉमिक्स में जापान इकोनॉमिक्स के प्रमुख शिगेतो नागाई ने बताया कि अमेरिका इस समन्वित हस्तक्षेप में शामिल होने के लिए इसलिए सहमत हुआ क्योंकि यह उसके अपने राष्ट्रीय हित में है। यदि येन और जापानी सरकारी बॉन्ड्स में बिकवाली जारी रहती, तो इसका असर वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ता और वॉशिंगटन के लिए भी कर्ज लेने की लागत बढ़ सकती थी। सवाल 5: इस हस्तक्षेप का करेंसी मार्केट पर तुरंत क्या असर देखने को मिला? उत्तरः अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की टिप्पणियों के बाद डॉलर 0.2% गिरकर 157.07 येन पर आ गया, जो पिछले महीने के 164 के रिकॉर्ड निचले स्तर से काफी बेहतर स्थिति है। सवाल 6: आगे क्या उम्मीद है? क्या दोनों देश भविष्य में भी ऐसा हस्तक्षेप करेंगे? जवाबः विशेषज्ञ शिगेतो नागाई के अनुसार, दोनों देश आगे भी समय-समय पर रुक-रुक कर और समन्वित तरीके से हस्तक्षेप जारी रख सकते हैं। जापान के वित्त मंत्रालय और अमेरिकी ट्रेजरी सेक्रेटरी दोनों ने स्पष्ट किया है कि जरूरत पड़ने पर वे दोबारा कदम उठाने से नहीं हिचकेंगे। सवाल 7: जापानी येन 40 साल के निचले स्तर पर क्यों पहुंचा? इसके पीछे क्या कारण हैं?

जवाबः 1990 के दशक की मंदी के बाद से जापान ने अपनी अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए लंबे समय तक अपनी ब्याज दरों को शून्य या नकारात्मक बनाए रखा था। 2024 में जापान ने ब्याज दरें बढ़ाईं जरूर, लेकिन फिर भी ये दुनिया के मुकाबले काफी कम रहीं। कम ब्याज दरों के कारण अंतरराष्ट्रीय निवेशकों ने येन में कर्ज लेकर उसे ज्यादा रिटर्न देने वाली करेंसी में लगाया। इसके अलावा जापानी कंपनियों का भारी विदेशी निवेश और उनकी विदेशी कमाई का विदेशों में ही बने रहना भी येन पर भारी पड़ा। इसने येन को 40 साल के निचले स्तर पर पहुंचा दिया था। सवाल 8: क्या अमेरिका-ईरान जंग का असर भी येन की गिरावट पर पड़ा? जवाबः हां। ईरान जंग ने येन की गिरावट को और तेज कर दिया। केइओ यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर सायुरी शिराई के अनुसार, पूरी तरह ऊर्जा आयात पर निर्भर रहने के कारण तेल-गैस की बढ़ती कीमतों ने जापान के व्यापार संतुलन को बिगाड़ा। इससे महंगाई बढ़ी और येन की रिकवरी रुक गई। सवाल 9: मजबूत डॉलर और कमजोर येन से दोनों देशों को क्या फायदा-नुकसान हो रहा था? जवाबः अमेरिका के लिएः मजबूत डॉलर अमेरिकी एक्सपोर्ट को विदेशी उपभोक्ताओं के लिए महंगा बना देता है।

इसका नुकसान अमेरिकी कंपनियों को होता है। जापान के लिएः कमजोर येन से जापानी एक्सपोर्टर्स और पर्यटकों को फायदा जरूर होता है, लेकिन जरूरी सामान का आयात महंगा हो जाता है, जिससे देश में महंगाई बढ़ती है। सवाल 10: क्या इस खरीदारी से येन की स्थिति में स्थायी सुधार आ सकता है? जवाबः बैंक ऑफ अमेरिका सिक्योरिटीज के शुसुके यामादा का मानना है कि करेंसी मार्केट में ऐसी खरीदारी से केवल कुछ समय के लिए ही राहत मिलती है। वहीं बार्कलेज बैंक की रिपोर्ट के मुताबिक, इस साझा कदम का असर शुरुआती दिनों में तो दिखेगा, लेकिन लंबी अवधि में येन पर नीचे जाने का दबाव बना रह सकता है।

पेरू में टूरिस्ट प्लेन क्रैश, क्रू समेत 13 की मौत,11 पर्यटक यूरोप से थे, 2000 साल पुरानी नाज्का लाइन्स देखने गए पहुंचे थे

नाज्का। पेरू के नाज्का शहर के पास शनिवार को एक टूरिस्ट प्लेन दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हादसे में 11 यूरोपीय पर्यटकों समेत 13 लोगों की मौत हो गई। मृतकों में 7 इटली, 2 स्पेन और 2 जर्मनी के पर्यटक शामिल हैं। विमान के

पायलट और को-पायलट की भी जान चली गई। यह विमान इका शहर से उड़ान भरकर पर्यटकों को 2000 साल पुरानी नाज्का लाइन्स दिखाने जा रहा था। नाज्का लाइन्स के पास पहुंचने के बाद प्लेन खेत में जाकर गिरा। इसमें आग लग गई। हादसे के बाद प्लेन के मलबे के पास जले हुए शव बिखरे पड़े थे। पेरू सरकार ने हादसे की जांच के आदेश दिए हैं। राष्ट्रपति केइको फुजीमोरी ने घटना पर दुख जताया है और नाज्का एयरपोर्ट का संचालन अस्थायी रूप से रोकने पर भी विचार किया जा रहा है। 14 साल से सीनिक फ्लाइट्स ऑर्गनाइज कर रही थी कपंनी-जो प्लेन हादसे का शिकार हुआ, उसे पेरू की कंपनी 'एरोडियाना' ऑपरेट कर रही थी। एयरलाइन की वेबसाइट के मुताबिक, वह पिछले 14 साल से सेसना ग्रैंड कारवां प्लेन का इस्तेमाल करके नाज्का लाइन्स के ऊपर सीनिक फ्लाइट्स (नजारे दिखाने वाली उड़ानें) की सुविधा दे रहे हैं। हादसे की जांच की जा रही है। एरोडियाना ने कोई कमेंट नहीं दिया। नाज्का लाइन्स क्या हैं? पेरू की राजधानी लीमा से करीब 400 किमी दक्षिण में नाज्का और पाल्पा के रेगिस्तान में 2,000 साल पुरानी विशाल आकृतियां बनी हैं। माना जाता है कि इन्हें 200 ईसा पूर्व से 600 ईस्वी के बीच नाज्का सभ्यता के लोगों ने बनाया था। गहरे रंग की पत्थरीली सतह हटाकर नीचे की हल्की मिट्टी को उभारने से ये आकृतियां बनाई गईं। इनमें बंदर, हमिंगबर्ड, मकड़ी, कोंडोर, व्हेल, पेड़ और हाथ जैसी दर्जनों आकृतियां शामिल हैं। कई आकृतियां 100 से 300 मीटर या उससे भी बड़ी हैं, जबकि कुछ सीधी रेखाएं कई किलोमीटर तक फैली हैं। इन्हें देखने लोग क्यों आते हैं? नाज्का लाइन्स का पूरा आकार जमीन से दिखाई नहीं देता। इन्हें साफ तौर पर केवल विमान, हेलिकॉप्टर, व्यूइंग टावर या आसपास की ऊंची पहाड़ियों से देखा जा सकता है। यही वजह है कि हर साल हजारों पर्यटक सीनिक फ्लाइट लेकर इन्हें देखने पहुंचते हैं। वैज्ञानिक आज भी इनके उद्देश्य पर एकमत नहीं हैं।

इन्हें धार्मिक अनुष्ठानों, जल स्रोतों, खगोलीय गणनाओं या सांस्कृतिक परंपराओं से जोड़कर देखा जाता है। बेहद शुष्क जलवायु के कारण ये आकृतियां करीब 2,000 साल से सुरक्षित हैं और 1994 में यूनेस्को ने इन्हें विश्व धरोहर घोषित किया। नाज्का में पहले भी हो चुके हैं हादसे-पिछले कुछ दशकों में इस मशहूर हैरिटेज साइट पर विमान दुर्घटना का यह पहला मामला नहीं है। 2022 में एक और छोटा पर्यटक विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया था, जिसमें सवार सात लोगों की मौत हो गई। 2010 में भी एक पर्यटक विमान इसी जगह के ऊपर दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें विमान में सवार छह लोगों की मौत हो गई।

इंडोनेशिया में फेरी बोट में लगी आग,लोग जान बचाने समुद्र में कूदे, 5 की मौत, 271 लोग सवार थे, 41 लापता

जकार्ता। इंडोनेशिया के मादुरा द्वीप के पास रविवार सुबह एक फेरी बोट में आग लग गई। इसके बाद लोग जान बचाने के लिए समुद्र में कूद गए। रॉयटर्स के मुताबिक, हादसे में कम से कम पांच लोगों की मौत हो गई, जबकि 41 लोग अब भी लापता हैं। इंडोनेशिया की राष्ट्रीय सर्च एंड रेस्क्यू एजेंसी के मुताबिक फेरी में कुल 271 यात्री और क्रू मेंबर सवार थे। कुछ लोग जान बचाने के लिए बोट से समुद्र में कूद गए। दोपहर तक 225 लोगों को सुरक्षित बचा लिया गया, जबकि बाकी लोगों की तलाश जारी है। फेरी ईस्ट जावा प्रांत के सुराबाया से साउथ सुलावेसी के मकासार जा रही थी। इसी दौरान मादुरा द्वीप के पास उसमें आग लग गई। आग लगने की वजह साफ नहीं हो सकी है। फिलहाल लापता लोगों की तलाश के लिए रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है। हादसे के दौरान के कुछ विजुअल्स सोशल मीडिया पर सामने आए हैं। इनमें यात्री जलती हुई फेरी के अगले हिस्से की तरफ भागते हुए दिखाई दे रहे हैं। घटना के सामने आए वीडियो में आग फैलने के बाद कई लोग घबराए हुए थे। रॉयटर्स के मुताबिक, बचाव दल आसपास के समुद्री इलाके में लापता लोगों की तलाश कर रहा है। सर्च एंड रेस्क्यू एजेंसी के मुताबिक हादसे के बाद कई बचाव बोट्स और अन्य संसाधनों को मौके पर भेजा गया। राहत दल समुद्र में सर्च ऑपरेशन चला रहा है ताकि

लापता लोगों का पता लगाया जा सके। अधिकारियों ने कहा कि ऑपरेशन अभी जारी है और मृतकों या लापता लोगों की संख्या में बदलाव हो सकता है। पिछले साल भी हुआ था ऐसा ही बड़ा हादसा-इंडोनेशिया में पहले भी फेरी बोट में आग लगने के कई बड़े हादसे सामने आते रहे हैं। जुलाई 2025 में नॉर्थ सुलावेसी प्रांत के पास 'केएम बार्सिलोना 5' नाम की फेरी बोट में आग लग गई थी। उस हादसे में तीन लोगों की मौत हुई थी, जबकि करीब 150 लोगों को बचाया गया था। फेरी में करीब 280 लोग सवार थे। मई 2021 में 'केएम कार्य इंदाह' नाम की फेरी टरनेटे से रवाना होने के कुछ देर बाद आग की चपेट में आ गई थी। उस दौरान यात्रियों और क्रू को जान बचाने के लिए समुद्र में छलांग लगानी पड़ी थी। स्थानीय मछुआरों और बचाव एजेंसियों की मदद से 181 यात्रियों, जिनमें 22 बच्चे भी शामिल थे, और 14 क्रू मेंबर को सुरक्षित निकाल लिया गया था। उस हादसे में कोई मौत नहीं हुई थी। इंडोनेशिया में फेरी हादसे बार-बार क्यों होते हैं? इंडोनेशिया दुनिया का सबसे बड़ा द्वीपीय देश है, जहां 17 हजार से ज्यादा द्वीप हैं। इसलिए एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक आने-जाने के लिए फेरी सेवा लोगों की रोजमर्रा की जरूरत है। हर दिन बड़ी संख्या में यात्री और सामान ढोने वाली फेरी समुद्र में चलती हैं। हालांकि, कई जहाज पुराने होने, समय पर रखरखाव न होने और कई मामलों में क्षमता से ज्यादा यात्रियों को बैठाने की वजह से जोखिम बढ़ जाता है। इसके अलावा, खराब मौसम, ऊंची लहरें और तेज समुद्री धाराएं भी दुर्घटनाओं की आशंका बढ़ाती हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि सुरक्षा नियमों का सख्ती से पालन और नियमित निगरानी नहीं होने के कारण भी इंडोनेशिया में फेरी हादसे अक्सर सामने आते रहते हैं।

बारिश में कपड़ों से आती स्मेलःहो सकती है स्किन एलर्जी, एक्सपर्ट से जानें- बैड स्मेल कैसे भगाएं, कपड़े कैसे रखें फ्रेश

नयी दिल्ली। बारिश के मौसम में कपड़े ठीक से नहीं सूखते हैं। धूप की कमी और हवा में ज्यादा नमी की वजह से कपड़ों से अजीब स्मेल आने लगती है। कई बार अलमारी में रखे कपड़ों से भी सीलन की स्मेल आती है। दरअसल, बारिश के मौसम में बढ़ी हुई नमी बैक्टीरिया और फंगस के पनपने के लिए अनुकूल माहौल बनाती है। ऐसे में अगर कपड़ों को सही तरीके से सुखाया और स्टोर न किया जाए तो उनमें स्मेल और फफूंदी की समस्या बढ़ सकती है। लंबे समय तक ऐसे कपड़े पहनने से फंगल इन्फेक्शन का रिस्क बढ़ जाता है। इसलिए आज 'जरूरत की खबर' में बारिश में कपड़ों को फ्रेश रखने के आसान तरीके बताएंगे। साथ ही जानेंगे कि- बारिश में कपड़ों को स्मेल से बचाने के घरेलू उपाय क्या हैं? कौन सी गलतियां नहीं करनी चाहिए? समझेंगे विषय को एक्सपर्टः डॉ. विजय सिंघल, सीनियर कंसल्टेंट, डर्मेटोलॉजी, श्री बालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट, दिल्ली जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- बारिश में कपड़ों से स्मेल क्यों आने लगती है? जवाब- बरसात में कपड़े देर से सूखते हैं और यही देरी स्मेल की बड़ी वजह बनती है। जब कपड़े लंबे समय तक नम रहते हैं तो उनमें बैक्टीरिया और फंगस पनपने लगते हैं। नमी और बैक्टीरिया पनपना-गीले या नम कपड़े बैक्टीरिया के लिए अनुकूल माहौल बनाते हैं। ये बैक्टीरिया स्मेल का कारण बनते हैं। फंगस पनपना-हवा में नमी और धूप की कमी से कपड़े अच्छे से नहीं सूखते। इससे कपड़ों में फंगस पनपने लगते हैं। डिटर्जेंट या गंदगी का अवशेष-ठीक से रिंसिंग (खंगालना) न करने पर कपड़ों में साबुन/डिटर्जेंट रह जाता है। ये रेजिड्यू (अवशेष) भी बैक्टीरिया बढ़ाते हैं। इससे स्मेल ज्यादा स्ट्रॉन्ग हो जाती है। देर से सुखाना/वॉशिंग मशीन में छोड़ देना-धुले कपड़े देर तक बाल्टी या मशीन में पड़े रहने से माइक्रोब्स पनपते हैं।इससे भी स्मेल आने लगती है। सवाल- कितनी देर तक कपड़े गीले रहने पर स्मेल आने लगती है? जवाब-

इसका कोई फिक्स टाइम नहीं है। यह कपड़ों में कितनी देर तक नमी बनी हुई है, उस पर निर्भर करता है। आमतौर पर 6-8 घंटे के अंदर कपड़ों से स्मेल आने लगती है। सवाल- कौन से फैब्रिक से ज्यादा स्मेल आती है? जवाब- यह फैब्रिक के केमिकल स्ट्रक्चर और उसकी 'मॉइश्चर होल्ड करने की क्षमता' पर निर्भर करता है। किन फैब्रिक्स से ज्यादा स्मेल आती है-सवाल- क्या गीले कपड़े पहनने से फंगल इन्फेक्शन हो सकता है? जवाब- हां, गीले कपड़े पहनने से स्किन पर लंबे समय तक नमी बनी रहती है। यह फंगस के पनपने के लिए अनुकूल माहौल बनाती है। लगातार गीलापन स्किन की बाहरी प्रोटेक्टिव लेयर को कमजोर कर सकता है। इससे दाद, खुजली समेत कई फंगल इन्फेक्शन का रिस्क बढ़ जाता है। गीले या नम कपड़े पहनने से किसी को भी फंगल इन्फेक्शन हो सकता है, लेकिन कुछ लोगों में इसका रिस्क ज्यादा होता है। सवाल- कपड़ों की स्मेल दूर करने के असरदार घरेलू उपाय क्या हैं? जवाब- कुछ आसान घरेलू उपायों से इसे काफी हद तक रोका या कम किया जा सकता है। पॉइंटर्स में देखिए- विनेगर का इस्तेमाल,वॉशिंग के दौरान 1 कप व्हाइट विनेगर डालें। यह बैक्टीरिया को खत्म करता है और स्मेल न्यूट्रल करता है। बेकिंग सोडा-वॉशिंग के दौरान 1-2 चम्मच बेकिंग सोडा डालें। यह स्मेल सोख लेता है। नींबू का रस-1 बाल्टी पानी में 1-2 नींबू का रस मिलाकर कपड़े भिगोएं। यह नेचुरल फ्रेशनर की तरह काम करता है। एंटीसेप्टिक लिक्विड (जैसे डिटॉल) 1 ढक्कन एंटीसेप्टिक लिक्विड रिंस में डाल सकते हैं।इससे बैक्टीरिया खत्म करने में मदद मिलती है। अगर किसी कपड़े में सीलन है या खराब स्मेल आ रही है तो उसे परफ्यूम से न छिपाएं। यह बैक्टीरिया / फफूंदी का संकेत हो सकता है। ऐसे कपड़ों को दोबारा अच्छी तरह धोकर, धूप में सुखाने के बाद ही पहनें।सवाल- क्या सिर्फ परफ्यूम डालने से स्मेल खत्म हो जाती है? जवाब- नहीं, परफ्यूम बैक्टीरिया या फंगस को नहीं खत्म करता। कई बार स्मेल और परफ्यूम मिलकर अजीब व हार्ड स्मेल बना देते हैं। सवाल- धूप न होने पर कपड़े कैसे सुखाएं ताकि स्मेल न आए? जवाब- पॉइंटर्स से समझिए- ऐसी जगह कपड़े सुखाएं, जहां हवा का फ्लो बना रहे। कपड़े को सूखे तौलिये में लपेटें, इससे उसका पानी अब्जॉर्ब हो जाएगा। वॉशिंग मशीन में 1-2 बार एक्स्ट्रा स्पिन चलाएं। कपड़ों के बीच गैप रखें। मोटे कपड़े उल्टे करके सुखाएं। नमी हल्की होने पर आयरन करें। सवाल- बारिश में कपड़ों को फ्रेश रखने के लिए रोज क्या करें? जवाब- इसके लिए रोजमर्रा की कुछ आदतें अपनाएं-पूरी तरह सूखने के बाद ही कपड़े अलमारी में रखें। अलमारी में नीम की पत्तियां/कपूर रखें। इससे स्मेल और नमी कम होती है। अलमारी में सिलिका जेल पाउच/अखबार रखें। ये नमी सोखते हैं। डिटर्जेंट जरूरत के मुताबिक ही इस्तेमाल करें। सवाल- क्या वॉशिंग मशीन भी स्मेल की वजह बन सकती है? जवाब- हां, इसके कई कारण हो सकते हैं-अगर मशीन के अंदर नमी बनी रहती है। अगर नियमित सफाई नहीं होती। अगर डिटर्जेंट और गंदगी का रेजिड्यू जमा होता है।

इससे 'सीलन' जैसी स्मेल बनने लगती है। ऐसे माहौल में कपड़े धोने से स्मेल आने लगती है। सवाल- वॉशिंग मशीन की सफाई कितने दिन में करनी चाहिए? जवाब- आमतौर पर वॉशिंग मशीन की डीप क्लीनिंग हर 15-30 दिन में करनी चाहिए। अगर डेली मशीन यूज करते हैं तो हर 2 हफ्ते में साफ करना बेहतर है।

इसके अलावा रेगुलर कुछ बेसिक केयर करनी चाहिए, जैसेकि- हर वॉश के बाद डोर/लिड खुला छोड़ें, ताकि नमी सूख जाए। रबर गैस्केट और डिटर्जेंट ट्रे को हफ्ते में 1 बार साफ करें। सवाल- बारिश में कौन-सी गलतियां कपड़ों की स्मेल बढ़ा देती हैं? जवाब- बारिश में कपड़ों की देखभाल में की गई छोटी-छोटी गलतियां उनमें सीलन और स्मेल पैदा कर सकती हैं।

क्या कंगना ने सोनाक्षी के पहनावे पर उठाए सवाल? लिखा- पॉकेटमार जैसे कपड़े पहनती है, पहले सलीके के पहनती थी, हस्बेंड की लैंग्वेज पर भी तंज

मुंबई। स्टूडेंट प्रोटेस्ट पर लगातार विवादित बयान दे रहीं कंगना रनोट ने अब बिना नाम लिए एक एक्ट्रेस के लिए अपमानजनक टिप्पणी की है। उन्होंने एक्ट्रेस के लुक की तुलना

पॉकेटमार से करते हुए उनकी भाषा, पति और पहनावे पर सवाल खड़े किए हैं। कंगना ने हाल ही में सोशल मीडिया पर एक पोस्ट री-शेयर की है, जिसमें लिखा है, 'नाम नहीं लूंगा पर एक मोटी जिहादी कूद कूद कर नीट प्रोटेस्ट पर वीडियो बना रही थी। पर झारखंड प्रोटेस्ट के टाइम मुंह बंद है।' इस पोस्ट को कंगना ने लाइक किया और फिर इसके साथ लिखा है, 'मेरे बारे में भी इस तरह की कई फर्जी खबरें फैलाई जा रही हैं। यह वाली भी पूरी तरह झूठी है। मैं किसी को शर्मिंदा नहीं करना चाहती, लेकिन मैंने देखा है कि इन दिनों एक एक्ट्रेस ऐसे कपड़े पहनती है और ऐसे बात करती है जैसे कोई पॉकेटमार हो। वह हाफ पैंट, उल्टी कैप पहनती है और प्रदर्शनकारियों के गटरछाप व्यवहार का जोश के साथ समर्थन करते हुए जेबकतरे जैसी भाषा बोलती है।' आगे कंगना ने लिखा, 'मुझे हमेशा लगता है कि आप जिस तरह के कपड़े पहनते हैं, उसका सीधा असर आपकी सोच और व्यक्तित्व पर दिखाई देता है। मेरी प्यारी साथी एक्ट्रेस, अगर आपका पुरुष साथी आपको जेबकतरे जैसा महसूस करा रहा है, तो मुझे अफसोस है। आप पहले बहुत सलीके से कपड़े पहनती थीं और बेहद शालीनता से बात करती थीं। आपको क्या हो गया? आपकी राय आपकी अपनी है, लेकिन अपने स्टाइल पर थोड़ा और ध्यान दें। अगर आपको मदद की जरूरत हो, तो मैं हमेशा आपके लिए मौजूद हूं।' पोस्ट शेयर करने के बाद कंगना ने एक वीडियो जारी कर कहा है कि कुछ साथी एक्ट्रेसेस हमेशा धर्म और राजनीति के मुद्दे पर न्यूट्रल रहती हैं, लेकिन इस्लामिस्ट से संबंध रखने और शादी के बाद एक दम लेफ्टिस्ट कंट्टरपंथी बन जाती हैं। कंगना ने कहा है, 'इसमें कोई आपत्ति नहीं है। संविधान इसकी इजाजत देता है, लेकिन दिक्कत ये है कि मैं एक मॉडरेट हिंदू थी। तो मुझे अब संघी बनने पर तंज क्यों दिया जाता है। मैं क्यों नहीं कन्वर्ट हो सकती।' कंगना ने वीडियो में कहा है कि वो सालों पहले मॉडर्न थीं, लेकिन अब एक कट्टर हिंदू बन रही हूं, तो इसमें दूसरों को क्या आपत्ति है। क्या सोनाक्षी के लिए लिखी कंगना ने पोस्ट-बता दें कि सोनाक्षी सिन्हा उन चुनिंदा एक्ट्रेसेस में शामिल हैं, जिन्होंने प्रोटेस्ट का खुलकर समर्थन किया और बेबाक राय रखी। प्रोटेस्ट पर बात करने पर सोनाक्षी को जमकर सराहना मिली थी। उन्होंने प्रोटेस्ट पर कई वीडियो बनाईं, जिनमें ज्यादातर वो शॉर्ट्स और कैप पहनी हुई थीं। बयानों से विवादों में हैं कंगना रनोट-स्टूडेंट प्रोटेस्ट पर भाजपा सांसद और एक्ट्रेस कंगना रनोट लगातार विवादित बयान दे रही हैं। कुछ समय पहले ही उन्होंने जेन-जी लड़कियों को गटर जनरेशन कहा और साथ ही कहा कि इस जनरेशन की महिलाएं कई आदमियों से यौन संबंध बनाने को आजादी कहती हैं। ये हाउसवाइफ तक नहीं बन सकतीं। साथ ही उन्होंने कहा कि यंग लड़कियों को जल्दी सेक्शुअलाइज किया जा रहा है। कंगना के विवादित बयान की जमकर आलोचना हुई। सिंगर विशाल ददलानी और सोनू सूद जैसी बड़ी हस्तियों ने इसका विरोध किया।इसी बीच कंगना के पुराने मूवी सीन और बोल्ड फोटोज वायरल हो गए। इनके साथ कहा गया कि कंगना एक समय खुद भी अपनी निजी जिंदगी, अफेयर और पहनावे से सुर्खियों बटौर चुकी हैं, लेकिन नई पीढ़ी की उन्हीं बातों को निंदा कर रही हैं। इस पर कंगना ने लिखा, 'आप मेरी फिल्मों के किरदारों वाले क्लिप्स इस्तेमाल करना चाहते हैं, जिनके लिए मुझे करोड़ों रुपये का भुगतान किया जाता है। आप मेरे हाई-प्रोफाइल शो और बिजनेस इवेंट्स की तस्वीरें और वीडियो इस्तेमाल करना चाहते हैं, जहां मैं अपनी टीम, इवेंट प्लानर्स और सुरक्षा कर्मियों से घिरी रहती हूं। आगे उन्होंने लिखा, क्या आप इन सबका इस्तेमाल करके किसी कम उम्र और आसानी से प्रभावित होने वाली लड़की को यह यकीन दिलाना चाहते हैं कि वह भी सड़क पर, स्कूल के कार्यक्रमों में या घटिया क्लबों में ऐसा ही व्यवहार कर सकती है? क्या दोनों बातें एक जैसी हैं? युवाओं को गुमराह मत कीजिए। यह एक जैसी बात नहीं है। आज आप दूसरों के बच्चों को गुमराह कर रहे हैं, कल यही बारी आपके अपने बच्चों की भी आ सकती है।'

जैनिफर विंगेट पति विलियम संग हरे लहंगे में नजर आईं,शेयर की हल्दी सेरेमनी की अनसीन फोटोज,करन वाही और हरलीन सेठी भी शामिल हुए

मुंबई/वेस्ट वेल्स। टीवी एक्ट्रेस जैनिफर विंगेट ने अपनी हल्दी सेरेमनी की अनसीन तस्वीरें सोशल मीडिया पर शेयर की हैं। ब्रिटेन के बिजनेसमैन विलियम इशमेल संग शादी रचाने के कुछ हफ्तों बाद उन्होंने

अपनी प्री-वेडिंग रस्मों की यादें साझा की हैं। फ्रेंडशिप डे के मौके पर पोस्ट की गई इन तस्वीरों में जैनिफर के करीबी दोस्त और टीवी एक्टर्स करन वाही, हरलीन सेठी और सहबान अजीम नजर आ रहे हैं। सेरेमनी में जैनिफर हरे रंग के लहंगे में दिखीं, जबकि विलियम ने हाल ही में यूके के वेस्ट वेल्स में एक निजी समारोह में शादी की थी। शादी की जानकारी दोनों ने सोशल मीडिया पर एक जॉइंट पोस्ट के जरिए दी थी। अपनी वेडिंग में जैनिफर ने व्हाइट स्ट्रैपलेस गाउन और वेल पहना था। वहीं उनके पति विलियम ने नेवी ब्लू सूट के साथ क्रीम कलर का वेस्टकोट पहना था। दोनों ने अपने परिवार और बेहद करीबी दोस्तों की मौजूदगी में एक-दूसरे को रिंग पहनाकर शादी की। कौन हैं जैनिफर वे पति विलियम

विलियम ने सफेद रंग की शेरवानी पहनी थी। लिखा- मेरी हल्दी प्यार से भरी थी जैनिफर विंगेट ने इंस्टाग्राम पर हल्दी सेरेमनी की कई कैंडिड तस्वीरें पोस्ट की हैं। उन्होंने अपने दोस्तों का शुक्रिया अदा करते हुए लिखा कि उनकी हल्दी सिर्फ एक फंक्शन नहीं थी, बल्कि प्यार से भरा हुआ एक कमरा थी। जब भी वे इन तस्वीरों को देखती हैं, उन्हें कोई न कोई खूबसूरत लम्हा याद आ जाता है। उन्होंने आगे लिखा कि वे बहुत खुशकिस्मत हैं कि उन्हें इतने अच्छे दोस्त मिले। एक्ट्रेस हरलीन सेठी ने भी इस सेरेमनी की तस्वीरें पोस्ट करते हुए लिखा- 'यारी दोस्ती हल्दी'। यूके में क्रिश्चियन रीति-रिवाज से हुई थी प्राइवेट वेडिंग जैनिफर और विलियम इशमेल? जैनिफर विंगेट के पति विलियम इशमेल सिंगापुर में रहने वाले एक बिजनेसमैन हैं। वे 'एमएचसी डिजिटल ग्रुप' में बिजनेस डेवलपमेंट और ट्रेडिंग के डायरेक्टर पद पर कार्यरत हैं। विलियम ने यूवेज की यूनिवर्सिटी ऑफ यॉर्क से इकोनॉमिक्स और फाइनेंस की पढ़ाई की है। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत यूबीएस इन्वेस्टमेंट बैंक से की थी। उनके पास फाइनेंस, फॉरेन एक्सचेंज, ट्रेडिंग और बिजनेस डेवलपमेंट के क्षेत्र का लंबा अनुभव है। करन सिंह ग्रोवर से हुई थी पहली शादी यह जैनिफर विंगेट की दूसरी शादी है। इससे पहले उन्होंने अप्रैल 2012 में टीवी एक्टर करन सिंह ग्रोवर से शादी की थी। दोनों की मुलाकात मशहूर टीवी शो 'दिल मिल गए' के सेट पर हुई थी। हालांकि, यह शादी ज्यादा लंबी नहीं चल सकी और साल 2014 में दोनों अलग हो गए। इसके बाद करन सिंह ग्रोवर ने साल 2016 में बॉलीवुड एक्ट्रेस बिपाशा बासु से शादी कर ली थी।

पति ने की टीवी एक्ट्रेस अदिति शर्मा के साथ मारपीट,घरेलू हिंसा की शिकायत दर्ज, सास पर जेवर न लौटाने के आरोप, विवादों में रही शादी

मुंबई। टीवी शो अपोलीना-सपनों की उड़ान एक्ट्रेस अदिति शर्मा ने हाल ही में पति और ससुराल

वालों के खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई है। गोरेगांव पुलिस स्टेशन में दर्ज शिकायत में एक्ट्रेस ने पति पर मारपीट, घरेलू हिंसा, चरित्र पर सवाल उठाने जैसे कई आरोप लगाए हैं। उन्होंने शिकायत पति अभिनीत विद्यानंद कौशिक, सास उर्मिला कौशिक और नंद कीर्ति कौशिक का नाम भी शिकायत में लिखवाया है। पति ने लगाए थे को-स्टार से अफेयर के आरोप-अदिति द्वारा शिकायत दर्ज करवाए जाने से पहले उनके पति अभिनीत ने को-स्टार सामर्थ से अफेयर के आरोप लगाए थे। 2025 में अभिनीत कौशिक ने भी इंडिया फोरम से बातचीत में कहा था, अदिति के सभी करीबी हमारे बारे में जानते थे। मैं उसके मैनेजर की तरह रहता था, लेकिन मैं अब वाकई उसका सारा काम संभालता हूं। वो शादी के लिए डेढ़ साल से मेरे पीछे पड़ी थी। मैं उससे कहता था कि मैं इसके लिए तैयार नहीं हूं। शुरुआत में मैं शादी के लिए एक्साइटेड था, लेकिन समय के साथ चीजें बदल गई थीं। डेढ़ साल बाद वो दबाव बनाने लगी और हमने नवंबर 2024 में शादी कर ली। मुंबई के गोरेगांव पुलिस स्टेशन में दर्ज शिकायत के अनुसार, अदिति शर्मा जून 2021 में एक ऑनलाइन एक्टिंग क्लास में अभिनीत से मिली थीं। दोनों की दोस्ती हुई और कुछ समय बाद दोनों रिलेशनशिप में आ गए। 3 सालों तक डेट करने के बाद उन्होंने 12 नवंबर 2024 में परिवार की रजामंदी से अभिनीत से शादी की। शादी से पहले ही दोनों सितंबर 2024 से गोरेगांव के एक फ्लैट में साथ रह रहे थे। अदिति के अनुसार, शादी के कुछ समय बाद ही अभिनीत का व्यवहार बदल गया। पति उनके कपड़ों और छोटी-छोटी बातों पर उनसे झगड़ने लगे। एक्ट्रेस ने दावा किया है कि वो खुद घर का पूरा खर्च उठाती थीं, इसके बावजूद पति बार-बार उनसे पैसे मांगते थे। 1 जनवरी 2025 में कॉफी पर दोनों का झगड़ा हुआ, जिस समय अभिनीत ने एक्ट्रेस को गालियां देना शुरू कर दिया और उनके कैरेक्टर पर सवाल उठाने लगे। अदिति ने आरोप लगाया है कि पति उन पर बार-बार दूसरे पुरुषों से संबंध होने का आरोप लगाते थे और उनका मोबाइल चेक करते थे। झगड़े इतने बढ़ने लगे कि दोनों अलग-अलग सोने लगे। एक्ट्रेस ने शिकायत में ये भी दावा किया है शादी के बाद उनके सारे गहने सास ने रख लिए, जिसमें सोने की चेन, सोने और हीरे की कई अंगूठियां, मंगलसूत्र, चूड़ियां भी शामिल हैं। बार-बार मांगने के बावजूद सास ने गहने नहीं लौटाए। पुलिस जांच जारी, कोई गिरफ्तारी नहीं-एक्ट्रेस की शिकायत के बाद गोरेगांव पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। फिलहाल करीबियों से पूछताछ जारी है। इस मामले में अब तक कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है। आगे अभिजीत ने कहा, उसने शर्त रखी थी कि करियर की खातिर हमें इस शादी को राज रखना है। मैंने अपने पार्टनर के लिए सारी बातें मान लीं। हमने घर में उसके और मेरे भाई-बहनों, पेरेंट्स, पंडित जी के सामने सारे रीति-रिवाजों से शादी की। मेरे पास इस शादी के 1000 फोटोज हैं। वो उस समय वो अपोलीना शो की शूटिंग शुरू कर रही थी। उस शो की प्रोड्यूसर करिश्मा को इस बारे में पता चल गया था। आरोप- अदिति को एक्टर के साथ रंगे हाथों पकड़ा-बातचीत में अभिनीत के लीगल एडवाइजर राकेश शेट्टी ने बताया है कि एक बार अभिनीत ने अदिति को सामर्थ गुप्ता (अपोलीना को-स्टार) के साथ घर में रंगे हाथ पकड़ा था।एक बार अभिनीत पुणे गए थे, तब अदिति ने समर्थ को घर बुलाया था। बिल्डिंग में म्यूचल फ्रैंड्स ने जब इसकी जानकारी दी, तब अभिनीत लौटा। इसके बाद पुलिस बुलाई गई थी। जब बाद में अदिति के पेरेंट्स को बुलाया गया तो अदिति ने कहा कि उनकी शादी मान्य नहीं है। ये एक मॉक ट्रायल था।

बड़े बजट की फिल्म की तैयारी में अक्षय और अहमद,'वेलकम टू द जंगल' के बाद फिर साथ आएंगे दोनों

मुंबई। बॉक्स ऑफिस पर 'वेलकम टू द जंगल' की सफलता के बाद अक्षय कुमार और निर्देशक अहमद खान की जोड़ी एक बार फिर बड़े परदे पर लौट सकती है। फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े सूत्रों के

मुताबिक 'दोनों नई फिल्म को लेकर शुरुआती स्तर पर चर्चा कर रहे हैं। अभी तक किसी एक कहानी या जॉनर पर अंतिम मुहर नहीं लगी है, लेकिन कई अलग-अलग विषयों पर विचार-विमर्श जारी है। यदि सब कुछ योजना के अनुरूप रहा तो आधिकारिक घोषणा तारीखों और स्क्रिप्ट के अंतिम रूप लेने के बाद की जा सकती है।' शेड्यूल और स्क्रिप्ट सबसे बड़ी चुनौती-अक्षय और अहमद के नए प्रोजेक्ट के सामने सबसे बड़ी चुनौती सही कहानी और शूटिंग शेड्यूल तय करना है। अक्षय पहले से कई फिल्मों की शूटिंग और रिलीज की तैयारियों में बिजी हैं। वहीं, अहमद भी अपने दूसरे प्रोजेक्ट्स को अंतिम रूप देने में लगे हुए हैं। ऐसे में नई फिल्म की घोषणा से पहले दोनों अपनी उपलब्ध तारीखों और प्रोडक्शन टाइमलाइन पर काम कर रहे हैं। पिछले कुछ समय से ऐसी चर्चाएं भी थीं कि अहमद खान अपनी अगली फिल्म टाइगर श्रॉफ और शनाया कपूर के साथ एक ज़ॉम्बी कॉमेडी के रूप में शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा 'वेलकम' फ्रेंचाइज की अगली फिल्म को लेकर भी अलग-अलग तरह की अटकलें लगाई जा रही थीं। एक्शन फिल्मों में हिट रही है जोड़ी-फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े लोगों का मानना है कि अहमद की निर्देशन शैली और अक्षय की स्क्रीन प्रेजेंस एक्शन फिल्मों में अच्छा तालमेल बनाती है।

स्टैंड-अप कॉमेडियन कुणाल कामरा ने बेंगलुरु शो रद्द किए,हिंदू संगठनों ने किया था विरोध, सीजेपी प्रोटेस्ट में सीता-राम के बयान से भी हुआ था विवाद

बेंगलुरु। बेंगलुरु में स्टैंड-अप कॉमेडियन कुणाल कामरा ने अपने शो रद्द कर दिए हैं। व्हाइटफील्ड इलाके में होने वाले इन शो का हिंदुत्ववादी कार्यकर्ताओं ने कड़ा विरोध किया था। पुलिस ने सोमवार को इस बारे में जानकारी दी। पुलिस के मुताबिक, कुणाल कामरा ने रविवार को खुद व्हाइटफील्ड पुलिस स्टेशन जाकर अधिकारियों को सूचित किया कि वे अपने निर्धारित शो आगे नहीं बढ़ाएंगे। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि कामरा ने हिंदुत्ववादी कार्यकर्ताओं के विरोध के चलते व्हाइटफील्ड में होने वाला इवेंट रद्द करने का फैसला लिया है। कोरमंगला में शिफ्ट किए गए शो-कुणाल कामरा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर एक पोस्ट के जरिए बताया कि सोमवार, मंगलवार, बुधवार और गुरुवार के शो अब कोरमंगला के एक वेन्यू में शिफ्ट कर दिए गए हैं। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि व्हाइटफील्ड शो के लिए खरीदे गए टिकटों का रिफंड बुकमायशो (बुक माय शो) प्लेटफॉर्म द्वारा प्रोसेस किया जाएगा। साथ ही, उन्होंने दर्शकों से कोरमंगला वेन्यू के लिए टिकट बुक करने का आग्रह किया है, जहां सीटों की संख्या सीमित है। इससे पहले कुणाल कामरा ने उनके शो की आलोचना करने वाले एक ट्रोलर को सोशल मीडिया चेतावनी भी दी थी। साथ ही उन्होंने बताया था कि वो 2 अगस्त को पुलिस स्टेशन जाएंगे। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि व्हाइटफील्ड शो के लिए खरीदे गए टिकटों का रिफंड बुकमायशो (बुक माय शो) प्लेटफॉर्म द्वारा प्रोसेस किया जाएगा। साथ ही, उन्होंने दर्शकों से कोरमंगला वेन्यू के लिए टिकट बुक करने का आग्रह किया है, जहां

के शो से कानून-व्यवस्था और धार्मिक सद्भाव बिगड़ने का खतरा है। उनका आरोप था कि कामरा ने हिंदू देवी-देवताओं का अपमान किया है। सीजेपी प्रोटेस्ट के बयान से भी लगे थे धार्मिक भावनाएं आहत करने के आरोप-15 जुलाई को कुणाल कामरा जंतर-मंतर में हुए कॉकरोच जनता पार्टी के प्रोटेस्ट में पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने मंच पर भगवान राम और माता सीता पर बयान दिया। बयान सामने आने के बाद कुणाल कामरा के खिलाफ धार्मिक भावनाएं आहत करने के आरोप में शिकायत दर्ज हुई थी। हाईकोर्ट के वकील विभु वीरभद्र सैनी ने याचिका में कहा कि 15 जुलाई 2026 को दिल्ली के जंतर-मंतर पर हुए एक विरोध प्रदर्शन के दौरान कुणाल कामरा ने भगवान राम और माता सीता को लेकर कथित विवादित टिप्पणी की, जिससे धार्मिक भावनाएं आहत हुईं। पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के वकील विभु वीरभद्र सैनी ने 24 जुलाई को कुणाल कामरा के खिलाफ याचिका दायर की। जिसमें उन्होंने आरोप लगाया गया कि जंतर-मंतर पर सीजेपी के प्रदर्शन के दौरान कॉमेडियन कुणाल कामरा ने भगवान राम व माता सीता के प्रति अभद्र टिप्पणी की। याचिका की सुनवाई के दौरान कोर्ट ने वकील की याचिका पर चंडीगढ़ पुलिस से रिपोर्ट तलब कर ली है। कोर्ट ने पुलिस से पूछा कि आरोपों में प्रथम दृष्टया कोई आधार बनता है या नहीं और एफआईआर दर्ज करने की जरूरत है या नहीं। मामले की अगली सुनवाई 18 अगस्त को होगी। कुणाल कामरा के ये विवाद भी पढ़िए-2025- एकनाथ शिंदे पर 'गद्दार' टिप्पणीः अपने स्टैंड-अप शो नया भारत में महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे पर व्यंग्य किया और उन्हें कथित तौर पर 'गद्दार' कहकर संबोधित किया। वीडियो वायरल होने के बाद शिवसेना (शिंदे गुट) के कार्यकर्ताओं ने मुंबई के द हैबिटेट कॉमेडी क्लब में तोड़फोड़ की। कामरा के खिलाफ एफआईआर दर्ज हुई। 2025- सलमान खान पर जोकः एक शो में सलमान खान के 1998 के काला हिरण शिकार और 2002 के हिट-एंड-रन मामले पर चुटकुले सुनाए। विवाद के बावजूद कुणाल कामरा ने माफी मांगने से इनकार कर दिया। 2022- गुरुग्राम शो रद्दः विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के विरोध के बाद उनका 2022 में होने वाला गुरुग्राम शो रद्द कर दिया गया। इसके बाद कामरा ने सार्वजनिक रूप से वीएचपी को नाथूराम गोडसे की निंदा करने की चुनौती दी, जिससे विवाद और बढ़ गया। 2022- पीएम मोदी के लिए गाना गाने वाले बच्चे का एडिटेड वीडियोः जर्मनी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए गाना गाने वाले एक बच्चे के वीडियो को एडिट कर सोशल मीडिया पर शेयर किया। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग ने वीडियो हटाने को कहा। बाद में कामरा ने वीडियो हटा दिया और कहा कि उनका उद्देश्य सरकार की आर्थिक नीतियों पर व्यंग्य करना था, बच्चे पर नहीं।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स
53/25/1 ए बेली रोड
न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र) 211002 से
मुद्रित एवं सी-41यूपी
एसआईडीसी औद्योगिक
क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com
नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।